अन्तर्द्वन्द

लेखक

एन्टन चेखव

कि ता ब म ह ल

इ ला हा बा द

विख्यात रूसी उपन्यास

ड्यूएल का रूपान्तर

अनुवादक

विष्णु शर्मा

प्रथम संस्करण, १९५७

प्रकाशक—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, इलाहाबाद।

मुद्रक—निर्मल मुद्रणालय, ६६ ई, तुलाराम का बाग, इलाहाबाद।

१

सुबह के आठ बजे थे। यह वह समय था जब स्थानीय और दूसरे अफसर और यात्री सागर में प्रातःकाल का स्नान करते थे। रात की घुटन और गर्मी के बाद और फिर सायेदार बरामदे में जाकर चाय या कहवा पीते थे। इनमें से एक था इवान आंद्रीच लेव्सकी, लगभग अट्ठाइस वर्ष का दुबला और भूरे बालों वाला युवक जो सिर पर वित्त मंत्रालय के अधिकारी की टोपी लगाए था और पैरों में स्लीपर पहने था, जिसने सागर की ओर स्नान के लिए आते समय सागर-तट पर अपने कुछ परिचितों को देखा। इनमें से एक था, सैमाएलैंको, जो सेना का डाक्टर था।

उसके बड़े से सिर पर छोटे बाल थे, गर्दन नाटी थी, चेहरा लाल था, नाक बड़ी थी, भवें घनी और काली थीं, मूँछें और गलगुच्छ खिचड़ी थे, भारी-भरकम शरीर था और आवाज में सैनिक खुरदुरापन और भारीपन था। हर किसी अनजाने व्यक्ति पर सैमाएलैंको के इस व्यक्तित्व का यही प्रभाव पड़ता था कि वह चिड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति है लेकिन उसको जान लेने के दो-तीन दिन के अन्दर ही राय बदलनी पड़ती थी और उसके चेहरे पर सद्स्वभाव और अतिशय उदारता की झलक दिखाई पड़ती थी और उसकी आकृति विशेष रूप से आकर्षक और सुन्दर मालूम पड़ती थी। आचरण के भोंडेपन और खुरदुरे स्वभाव के

बावजूद सैमाएलैंको शान्त स्वभाव का आदमी था। उसके दिल में अपार भलाई और दया थी और वह हमेशा दूसरों की सहायता करने के लिए तैयार रहता था। कस्बे के हर व्यक्ति से उसके सम्बन्ध अच्छे थे, सब को वह रुपया उधार दे देता था, हर एक की चिकित्सा करता था, विवाह के रिश्ते पक्के करता था, आपसी झगड़ों को सुलझाता था, भ्रमण और दावतों की व्यवस्था करता था और ऐसे अवसरों पर वह स्वयं सुस्वाद 'शशलिक' और बहुत ही जायकेदार शोरबे बनाता था। दूसरों के व्यक्तिगत मामलों की देख-रेख करने, उनकी कठिनाइयों के लिए चिन्तित होकर किसी और को उनकी सहायता करने के लिए मनाने में वह सदैव व्यस्त रहता था और हमेशा किसी न किसी कारण उसकी मुद्रा पर हर्ष छाया रहता था। लोगों की आम राय थी कि उसके चरित्र में कोई दोष नहीं है। बस, केवल उसकी दो ही कमजोरियाँ थी। वह हमेशा अपने सद्-स्वभाव और अपनी स्वाभाविक भलाई के लिए लज्जित-सा रहता था और उसे एक वाह्य चिड़चिड़ेपन से छिपाने का प्रयत्न करता था; और दूसरी यह कि वह यह चाहता था कि उसके नीचे काम करने वाले अधिकारी और सिपाही उसे 'योर एक्सेलेन्सी' कह कर पुकारें हालाँकि वह मात्र एक साधारण काउन्सिलर ही था।

'एलिक्ज़ैन्डर डैबिडिच, मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो,' लेव्सकी ने पूछा जब वह और सैमाएलैंको दोनों, कन्धे तक पानी में डूबे हुए थे। बात जारी रखते हुए उसने कहा, 'मान लो तुमने किसी औरत से प्रेम किया होता और उसके साथ दो-तीन वर्ष बिताये होते और तब एकाएक तुममें उसके प्रति अरुचि पैदा हो जाती—जैसा कि अक्सर हो जाता है—और एकाएक ही यह लगने लगता कि तुममें और उसमें तनिक भी साम्य नहीं है, तब—तब तुम क्या करते?'

'बहुत आसान बात है; उससे स्पष्ट कह दे, देवीजी, अब आपका जहाँ भी जी करे जा सकती हैं। बात का अन्त हो जाता।'

'हुँहः ! यह कहना बहुत आसान है। मान लो कोई भी ऐसी जगह न होती जहाँ वह जाकर शरण ले सकती। एक ऐसी स्त्री जिसके न मित्र होते, न सम्बन्धी, न पैसा और न जिसका काम करना ही सम्भव होता।'

'तो क्या हुआ ? या तो उसे इकट्ठे पाँच सौ रूबुल दे दिये जाते या पच्चीस रूबुल प्रति मास का गुजारा देकर उसे टाला जा सकता था। बात बिल्कुल साफ है।'

'अच्छा, यह भी मानते हुए कि तुम एक बार में पाँच सौ रूबुल या पच्चीस रूबल प्रति मास का गुजारा देने की स्थिति में होते परन्तु वह स्त्री पढ़ी-लिखी होती—उसमें आत्म-सम्मान होता......तब क्या तुम उसे धन देने का साहस कर सकते थे ! और कैसे ?'

सैमाएलैंको उत्तर देने ही वाला था कि तभी एक ऊँची बड़ी-सी लहर आई और उन पर से होती हुई तट पर आकर बिखर गई और क्रन्दन करती हुई तट पर से वापस लौट गई। दोनों मित्र जल से बाहर आ गए और कपड़े पहनने लगे।

'यह तो ठीक है कि ऐसी स्त्री के साथ रहना असम्भव है जिससे तुम प्यार न करते हो,' अपने जूतों में से बालू झाड़ते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'परन्तु, वैन्या, इस बात को कुछ दयापूर्वक सोचना चाहिए। यदि ऐसी बात मेरे साथ होती तो मैं अपने व्यवहार में यह कभी स्पष्ट न होने देता कि मैं उससे प्यार नहीं करता हूँ और उसके साथ जीवन पर्यन्त रहता।'

यह बात कहते ही वह एकाएक लजा-सा गया और कुछ सँभलकर बोला, 'लेकिन मेरी ओर से तो नारी जाति ही न होती, भाड़ में जाए सब।'

कपड़े पहन चुकने के बाद दोनों मित्र बरामदे में चले गए। यह स्थान सैमाएलैन्को के लिए घर की तरह था। उसके लिए एक विशेष प्याला तश्तरी भी यहाँ थी। हर दिन सुबह जब वह यहाँ आता तो एक

'ट्रे' में एक प्याला' काफी, एक बड़ा गिलास बर्फ का पानी और एक छोटी प्याली में ब्रान्डी लाकर रख दी जाती। पहले वह ब्रान्डी पीता, फिर गर्म काफी और उसके बाद बर्फ का पानी और अवश्य यह क्रम बहुत ही अच्छा होगा क्योकि यह सब पी लेने के बाद उसकी आँखें हर्ष से नम-सी हो जातीं और दोनों हाथों से अपनी मूँछों को सहलाता हुआ वह सागर की ओर देखकर कहता : 'क्या शानदार दृश्य है !'

पिछली रात लेव्सकी के लिए बहुत ही काली और लम्बी थी क्योंकि उदास और निरर्थक विचारों ने उसे सोने नहीं दिया था और रात की घुटन और सघनता को और भी गाढ़ा बना दिया था। इसलिए आज सुबह लेव्सकी बहुत अनमना और उखड़ा-उखड़ा सा था। स्नान और काफी के एक प्याले के बाद भी उसका जी सुधरा नहीं।

'आओ, अपनी बात जारी रखें, एलिकज़ैन्डर डैविडिच,' उसने कहा, 'देखो, मैं तुमसे बात छिपाऊँगा नहीं—मैं मित्र के नाते खुलकर बातें करूँगा। मेरे और नादियेजदा फ्योद्रोवना के सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं—बहुत खराब हैं। अपने व्यक्तिगत मामलों में तुम्हें घसीटने के लिए क्षमा करना लेकिन मुझे लगा कि मुझे यह बातें किसी से कही डालनी होंगी।'

सैमाएलैन्को को शायद पूर्वाभास था इस बात का कि लेव्सकी क्या कहने वाला है; अतः यह सुनते ही उसकी पलकें झँप गईं और वह उँगलियों से मेज बजाने लगा।

'मैं उसके साथ दो वर्ष रह चुका हूँ और अब उसके प्रति मेरे प्रेम का अन्त हो गया है', लेव्सकी बोला, 'या यह समझो कि अचानक मुझे लगा कि जैसे मुझे कभी उससे प्रेम था ही नहीं...जैसे यह दोनों वर्ष साथ रहना मात्र निरर्थक मूर्खता थी।'

लेव्सकी की आदत थी कि बात करते समय या तो वह अपनी गुलाबी हथेलियों की ओर घूरा करता, या नाखून चबाता या अपने कफों से खिलवाड़ करता, और इस समय भी वह यही कर रहा था। 'मैं जानता

हूँ कि तुम इसमें मेरी कुछ भी सहायता नहीं कर सकते,' उसने कहा, 'परन्तु फिर भी मैं तुम्हें यह सब सुना रहा हूँ क्योंकि हम असफल और निरर्थक व्यक्ति केवल बातें करने में ही अपनी मुक्ति खोजते हैं। जो कुछ केवल मेरे साथ होता उसे मैं सामान्य अनुभव का रूप देता हूँ और उसका औचित्य ढूँढ़ता हूँ, किसी दूसरे के विचारों में, साहित्यिक व्यक्तियों की विचारधारा में कि हम उच्चवर्गीय रूसवासियों के जीवन और विचारों का पतन हो रहा है। या ऐसा ही किसी अन्य विचारधारा में। उदाहरणार्थ, कल रात ही मैं अपने आपको इस विचार से बार-बार सन्तोष देता रहा कि 'आह! टॉल्सटाय में कितनी सचाई, कितनी निष्ठुर सचाई।' और इससे मुझे सन्तोष मिला। दोस्त, जो भी कहो, वह वास्तव में बहुत महान लेखक हैं।'

सैमाएलैन्को ने कभी टॉल्सटाय को नहीं पढ़ा था यद्यपि अब तक वह हर दिन ऐसा करने का निश्चय करता रहा था और इस कथन से कुछ सकपकाकर वह बोला :

'हाँ, हर लेखक कल्पना के आधार पर लिखता है लेकिन वह-वह केवल प्रकृति या सत्य से अनुभूति पाकर लिखता है।'

'हे भगवान!' आह भरते हुए लेव्सकी बोला, 'सभ्यता और संस्कृति ने हमको कितना मरोड़ दिया है। मुझे एक विवाहित स्त्री से प्रेम हो गया और उसे मुझसे...प्रारम्भ में सुहानी धूप-छाँव थी चुम्बनों की, शांत संध्याओं की, प्यार की कसमों की, स्पेन्सर के दर्शन पर बातचीत की, आदर्शों की और उन सब चीजों की जिनमें हमे दोनों की दिलचस्पी थी...लेकिन कैसी छलना थी वह! हम लोग उसके पति को छोड़कर भाग पड़े लेकिन हमने अपने आप धोखा देकर यही सोचा कि हम भद्र और शिक्षित समाज के जीवन के खोखलेपन से नाता तोड़कर भागे हैं। हमने अपने भविष्य के सुहाने चित्र रचाए और सजाए—हमने सोचा कि पहले काकेशिया के प्रदेश में हम लोगों से तथा उस स्थान से परिचय बढ़ाएँगे और मैं सरकारी पोशाक पहनकर कोई नौकरी पा लूँगा

और फिर बाद को फुर्सत में हम थोड़ी-सी भूमि ले लेंगे, उस पर श्रम करेंगे और धीरे-धीरे खेत और अंगूरों के बाग लगा लेंगे, यह सब सोचते थे हम ! यदि तुम मेरी जगह में होते या तुम्हारा वह वनस्पति विज्ञानवेत्ता, वान कोरेन, होता तो तुम नदियेजदा फ्योद्रोवना के साथ तीस वर्ष चैन से गुजार देते शायद और अपनी संतान के लिए अंगूरों के एक बड़े उद्यान और तीन हजार एकड़ के मक्के के खेत के रूप में अपार धन छोड़ देते लेकिन मैं तो पहले दिन से हतुउत्साह था और लगता था कि मैं कंगाल हूँ। छोटे शहरों में दम घुटाने वाली गर्मी होती है, गहरी ऊब होती है और ऐसा कोई नहीं होता जिससे बात करने को जी करे; लेकिन गाँवों और विस्तृत मैदानों में व्यक्ति सिहर उठता है इस कल्पना से कि हर पत्थर के नीचे, हर झाड़ी में कोई जहरीली मकड़ी या कोई बिच्छू या साँप छिपा हुआ है और मैदानों की परिधि के पार ऊँचे पहाड़ हैं, फैले हुए मरु हैं। अजनबी लोग, अजनबी देश, सभ्यता का एक निम्न स्तर—मेरे दोस्त, यह उतना आसान नहीं है जितना 'फर' के कोट में ढँके हुए, नादियेजदा फ्योद्रोवना के हाथ में हाथ डालकर 'नेपस्की प्रास्पेक्ट' पर टहलना और दक्षिण के धूप भरे प्रदेशों की कल्पना करना। इन जगहों में जिन्दगी और मौत के से विकट संघर्ष की आवश्यकता है—और मैं संघर्ष करने वाला व्यक्ति नहीं हूँ—मैं हूँ अपने विचारों में घुलने वाला एक अस्वस्थ और काहिल व्यक्ति। पहले दिन से मुझे यह मालूम था अंगूरों के बाग और श्रमपूर्ण जीवन के मेरे ख्वाब निरर्थक हैं। और प्यार—मैं तुम्हें बता दूँ, दोस्त, कि एक ऐसी औरत के साथ रहना, जिसने स्पेन्सर का दर्शन पढ़ा है और जहाँ भी तुम गए हो तुम्हारे पीछे पड़ी रही है, कितना उबाने वाला है। हर दिन वही कपड़ों पर स्त्री करने की, पाउडर की, दवाओं की गन्ध, वही बाल घुँघराले करने की चीजें—वही अपने आप को छलने का नाटक।'

सैमाएलैन्को लजा गया इस बात पर कि लेव्सकी ने उससे उस औरत के बारे में इतनी खुली हुई बातें की हैं जिससे वह परिचित था और

बोला, 'लेकिन कपड़ों की स्त्री के बगैर घर में काम भी कहाँ चलता है। मुझे लगता है, वैन्या, कि आज तुम्हारा जी ठीक नहीं है। नादियेजदा फ्योद्रोवना बहुत अच्छी और सुशिक्षित महिला हैं और स्वयं तुम्हारा भी तो बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा है। यह ठीक है कि तुम लोग विवाहित नहीं हो मगर—' और सैमाएलैंको ने पास पड़ी हुई मेजों पर दृष्टि दौड़ाई, 'मगर इसमें तुम्हारा तो दोष नहीं है फिर...फिर लोगों को रूढ़ियों से मुक्त होकर आधुनिक विचारों के स्तर तक उठना ही होगा। मैं स्वयं स्वतन्त्र प्रेम का पक्षपाती हूँ, हाँ! लेकिन मेरे ख्याल से जब तुम लोगों ने एक बार साथ रहना शुरू ही कर दिया है तब उसे निभाना भी चाहिए।'

'प्रेम के बिना भी?'

'इसका उत्तर मैं तुम्हें अभी देता हूँ,' सैमाएलैंको ने कहा, 'आठ साल पहले यहाँ एक बूढ़ा था जो बहुत ही होशियार था और पेशे से एजेन्ट था। वह कहा करता था कि विवाहित जीवन का सार है सहन-शीलता। तुमने सुना, वैन्या? प्यार नहीं—सहनशीलता। प्यार तो अधिक देर तक चलता नहीं है। दो वर्ष तक तुम दोनों में प्रेम था और अब तुम्हारे सम्बन्धों में एक ऐसा स्थल आ गया है जब, यूँ समझ लो, आपसी सन्तुलन रखने के लिए यह आवश्यक हो गया है कि तुम सारी सहन-शीलता से काम लो...'

'तुम करते होगे विश्वास अपने उस बूढ़े एजेन्ट में, मुझे तो उसके शब्द निरर्थक लगते हैं। तुम्हारा बूढ़ा मक्कार भी हो सकता था; वह सहनशीलता के इस गुण का उपयोग कर सकता होगा इसलिए कि जिस व्यक्ति से वह प्रेम न करता होगा उसे वह अपनी कामक्षुधा तृप्त करने का साधन मानता रहे लेकिन मेरा अभी उतना पतन नहीं हुआ है। अगर मैं सहनशीलता की आदत डालने की कोशिश करूँ तो उसके लिए मैं चिड़चिड़ा जानकर रख सकता हूँ—उनके साथ रह सकता हूँ—लेकिन किसी व्यक्ति के साथ नहीं।'

सैमाएलैंकों ने बर्फ पड़ी हुई सफेद मदिरा मँगाई। जब दोनों अपने-

अपने गिलास खाली कर चुके तो लेव्सकी ने अचानक पूछा, 'जरा यह बताओ कि दिमाग नर्म हो जाने का क्या मतलब होता है ?'

'कैसे समझाऊँ तुम्हें ? यह समझ लो, एक ऐसी बीमारी होती है जिसमें दिमाग नर्म हो जाता है...लगभग पिघल-सा जाता है।'

'क्या इसका इलाज हो सकता है ?'

'हाँ ! यदि रोग को टाला नहीं गया है। ठंडे पानी के 'डूश' और गर्म बफारों और कुछ अन्दरूनी औषधियों से भी !'

'ओह !......तुम समझ रहे हो मेरी परिस्थिति—मेरे लिए उसके साथ रहना असम्भव है। यहाँ तुम्हारे साथ बैठकर मैं इस बात पर मुस्करा भी सकता हूँ, दार्शनिक की तरह बातें भी कर सकता हूँ, लेकिन घर पर तो मेरा दिल ही बैठ जाता है, मेरी हालत इतनी खराब हो जाती है कि यदि मुझसे यह कहा जाय कि मुझे अभी उसके साथ महीना भर और रहना पड़ेगा तो मैं आत्महत्या कर लूँ। साथ ही साथ उसे छोड़ देना भी असम्भव है। उसके न कोई मित्र हैं, न सम्बन्धी हैं, उसे काम भी नहीं मिल सकता और हम दोनों में से किसी के पास धन भी नहीं है। ऐसी हालत में उसका क्या होगा ? कहाँ, किसके पास जायगी वह ? कुछ समझ में नहीं आता। अब तुम्हीं बताओ कि मैं क्या करूँ।'

'हूँ !' सैमाएलैन्को की समझ में नहीं आया कि वह क्या उत्तर दे, 'वह तुमसे प्रेम करती है ?'

'हाँ, जितना उसकी आयु में और उसके स्वभाव के कारण सम्भव है। मुझे छोड़ देना उसके लिए उतना ही दुर्लभ है, जितना अपना पाउडर तथा सजावट की अन्य चीजों को छोड़ देना है। उसके निजी जीवन का मैं एक आवश्यक-अनिवार्य भाग हूँ।'

सैमाएलैन्को कुछ परेशान-सा हुआ। कुछ रुककर उसने कहा, 'आज तुम्हारा जी कुछ ठीक नहीं लगता, वैन्या—शायद रात ठीक से सो नहीं सके।'

'हाँ, नींद बहुत खराब आई थी। ठीक ही कहते हो, भाई, कि आज मेरा स्वभाव गड़बड़ है। मुझे लगता है कि मेरा दिमाग बिल्कुल खाली हो गया है, दिल बैठा-सा जा रहा है, कुछ एक विचित्र-सी कमजोरी का अनुभव कर रहा हूँ। अब मुझे यहाँ से चल ही देना चाहिए।'

'कहाँ?'

'कहीं उत्तर की ओर—जहाँ चीड़ के वृक्ष होंगे, कुकुरमुत्ते होंगे, नए व्यक्ति और नए विचार होंगे। मास्को या टूल्म के प्रदेशों की किसी छोटी-सी नदी में स्नान कर पाने के लिए मैं अपना आधा जीवन न्योछावर कर सकता हूँ—वहाँ के शीत का अनुभव करने के लिए, किसी विद्यार्थी के साथ घंटों टहलने और अनन्त रूप से बात करने के लिए, सूखते हुए भूसे की सोंधी उसास के लिए—हाँ, इन पर मैं अपना आधा जीवन न्योछावर कर सकता हूँ। तुम्हें वह सब याद है, न? और सोचो—जब साँझ ढलती है वहाँ तो बागों में टहलते हुए, घरों में से आती हुई पियानो के संगीत की आवाजें कानों में रस घोल देती हैं और दूर कहीं से रेलगाड़ी की आवाजें आती होती हैं...'

लेव्सकी खुशी से हँस पड़ा, आँख में आँसू छलक आए और उन्हें दबाने के लिए उसने बिना उठे मेज के सिरे पर पड़ी हुई दियासलाई की डिब्बी उठाने के लिए हाथ बढ़ाया।

'मैं तो अट्ठारह वर्षों से रूस से बाहर हूँ,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'रूस कैसा है यह तो मैं भूल-सा चुका हूँ। मेरे ख्याल से तो काकेशिया से अच्छा कोई दूसरा देश नहीं है।

'वर्शशागिन के पास एक चित्र है जिसमें कुछ ऐसे लोगों का चित्रण किया गया है जो मौत के हवाले किये जा चुके हैं और जो एक विशाल गर्त के तले में पड़े हुए हैं—तुम्हारा यह शानदार काकेशिया मुझे कुछ ऐसा लगता है। यदि मुझसे यह कहा जाय कि मुझे पीटर्सबर्ग में चिमनी साफ करने वाला मजदूर बनना पसन्द है या काकेशिया का राजकुमार तो मैं मजदूर बनना ही अधिक पसन्द करूँ।'

लेव्सकी एकाएक चिन्तनशील हो गया । उसका झुका हुआ शरीर, उसकी आँखें जो ख्वाबीदा-सी होकर एक स्थान पर घिरी हुई थीं, उसका पीला चेहरा जिस पर पसीना उभर आया था, उसकी धँसी हुई कनपटी, दाँतों से कुतरे हुए नाखून, उसके पैर जिस पर से स्लीपर खिसक गया था और बहुत बुरी तरह-से गठा हुआ एक मोजा दिखाई पड़ रहा था, यह सब देखकर सैमाएलैन्को के अन्दर अपार करुणा उमड़ आई । उसे लगा मानो लेव्सकी एक असहाय बच्चा है और उसने पूछा, 'क्या तुम्हारी माँ अभी जीवित हैं ?'

'हाँ, लेकिन हम लोगों के सम्बन्ध अच्छे नहीं हैं । इस बात के लिए वह मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगी ।'

सैमाएलैन्को को अपने मित्र से स्नेह था । वह लेव्सकी को एक अच्छे स्वभाव का व्यक्ति समझता था, एक सुशिक्षित विद्यार्थी जो व्यर्थ की बातों से परे था, जिसके साथ निःसंकोच हँसा, बोला जा सकता था, मदिरा पी जा सकती थी । लेकिन दूसरी बातों के कारण वह लेव्सकी को उतना ही नापसन्द भी करता था । वह यह भी जानता था कि लेव्सकी अनुचित अवसरों पर और आवश्यकता से अधिक शराब पीता था, ताश खेलता था, अपने काम से जी चुराता था, अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता था, अक्सर बातचीत में अनुचित शब्दों का प्रयोग कर बैठता था, केवल स्लीपर पहने सड़कों पर घूमा करता था और दूसरे लोगों के सामने नदियेजदा फ्योद्रोवना से झगड़ा करता था—इस सब कारणों से सैमाएलैन्को उसे नापसन्द भी बहुत करता था । लेकिन लेव्सकी में बहुत सी चीजें ऐसी भी थीं जो सैमाएलैन्को की समझ के परे थीं और वह लेव्सकी को बहुत पसन्द भी करता था; इसलिए कि लेव्सकी विद्यालय के कला विभाग में विद्यार्थी रह चुका था, कि वह दो मोटी-मोटी पत्रिकाएँ मँगवाता था, कि कभी-कभी इतनी बढ़िया बातें कह देता था केवल कुछ लोग ही उसे समझ पाते थे और यह कि वह एक बहुत सुशिक्षित महिला

के साथ रहता था—यह सब बातें सैमाएलैन्को की समझ में नहीं आती थीं और इनके कारण वह लेव्सकी को अपने से बड़ा आदमी समझता था।

'एक दूसरी बात और है,' लेव्सकी ने सिर हिलाते हुए कहा, 'किसी दूसरे से यह बात मत कहना—मैं नदियेजदा फ्योद्रोवना से भी फिल-हाल यह बात छिपा रहा हूँ, उसके सामने इस बात की चर्चा भी मत करना। मुझे परसों एक पत्र से सूचना मिली है कि दिमाग के नर्म हो जाने की बीमारी से उसके पति की मृत्यु हो गई है।'

'हे भगवान !' सैमाएलैन्को ने आह भरते हुए कहा, 'तुम उससे यह बात क्यों छिपा रहे हो ?'

'उसको पत्र दिखा देने का मतलब स्पष्ट यह होगा कि हम लोग फौरन जाकर विवाह कर लें। इसके पहले हमें अपने आपसी सम्बन्ध तो साफ कर लेना चाहिए। जब वह एक बार यह समझ जायगी कि हम और ज्यादे साथ नहीं रह सकते तब मैं उसे पत्र दिखा दूँगा। तब कोई खतरा नहीं रहेगा।'

'एक बात बताऊँ, वैन्या,' सैमाएलैन्को ने कहा और उसके चेहरे पर एक उदास और विनीत भाव झलक आया मानों वह लेव्सकी से किसी नाजुक-सी चीज की माँग करने जा रहा हो और उसे यह शंका और भय हो कि कहीं मना न कर दे, 'उससे शादी कर लो !'

'क्यों ?'

'उस भली औरत के लिए अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए। उसके पति की मृत्यु हो ही चुकी है और स्वयं विधाता अब तुम्हें मार्ग दिखा रहा है कि क्या करना चाहिए।'

'लेकिन, भले आदमी, यह क्यों नहीं समझते कि ऐसा करना बिल्कुल असम्भव है। बिना प्रेम के विवाह करना उतना ही नीच काम है जितना विश्वास के बिना पूजा करना।'

'लेकिन कर्त्तव्य तो यही है तुम्हारा ?'

'क्यों है मेरा यह कर्त्तव्य ?' तनिक चिड़चिड़ाकर लेव्सकी ने पूछा।

'क्योंकि उसके पति से तुम्हीं ने उसे हटाया और अपने को, इस प्रकार, उसके लिए उत्तरदायी बना लिया।'

'लेकिन मैं साफ-शुद्ध भाषा में तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ कि मुझे उससे प्रेम नहीं है !'

'खैर, अगर उससे प्रेम नहीं करते तो कम से कम उसका उचित मान तो करो, उसकी इच्छाओं का तो ध्यान रखो !'

'मान रखो—इच्छाओं का ध्यान रखो—' अपने मित्र की नकल करते हुए लेव्सकी ने कहा, 'मानों वह गिरजे की कोई सम्मानित अधिकारिणी हो...तुम अयोग्य मनोवैज्ञानिक और डाक्टर हो यदि यह समझते हो कि औरत मात्र सम्मान पाने और अपनी ओर ध्यान देने से सन्तुष्ट हो जाती है—औरत का सबसे अधिक सम्बन्ध अपनी शारीरिक आवश्यकताओं से होता है।'

घबड़ाहट में सैमाएलैन्को कह उठा, 'ओह, वैन्या, वैन्या...'

'तुम मात्र विचारक हो, आयु अधिक होते हुए भी निरे बालक हो ! और मैं ! मैं कम आयु में भी वृद्ध हो गया हूँ। आदर्शवादी नहीं हूँ ! हम तुम एक दूसरे को कभी नहीं समझ सकते। छोड़ो, यह बात खत्म करें।' और लेव्सकी ने बैरा को बुलाया, 'मुस्तफा ! हमारा 'बिल' कितना हुआ ?'

'नहीं, नहीं, यह क्या कर रहे हो,' लेव्सकी का हाथ थामते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'यह 'बिल' मैं चुकाऊँगा।' और मुस्तफा को पुकार कर उसने कहा, 'यह 'बिल' मेरे नाम बनाना।'

दोनों मित्र उठ पड़े और सागर तट पर खामोशी से चलने लगे। जब वह मुख्य मार्ग पर आए तो अलग होते समय दोनों ने हाथ मिलाया।

'तुम बहुत खराब हो, मित्र,' सैमाएलैन्को ने आह भरते हुए कहा, 'भगवान ने तुम्हें एक सुन्दर, जवान और सुसंस्कृत युवती दी है और तुम उस वरदान को अस्वीकार कर रहे हो जब कि मैं कितना खुश होता। भगवान मुझे एक बूढ़ी औरत ही दे देता यदि वह केवल स्नेहशील ही होती। मैं उसके साथ अपने अंगूर के बागों में रहता और...' और एकाएक अपने आपको जैसे रोकते हुए-से सैमाएलैन्को ने कहा, 'वह कम्बख्त कम से कम चाय तो बनाकर तैयार रखती।'

लेव्सकी से विदा लेकर वह मुख्य मार्ग पर चलता रहा। अपने शरीर के बोझ-वजन की शान के साथ, चेहरे पर सख्ती का भाव लिए, अपनी दूध-सी सफेद पोशाक पर एक रेशमी फीते से व्लादीमीर का पदक लगाए हुए, चमकते हुए जूतों में और सीना ताने हुए जब वह चलता तो स्वयं अपने से बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न रहता और उसे ऐसा लगता मानो सारा संसार मुस्करा रहा है। बिना सिर मोड़े उसने दोनों तरफ दृष्टि फैला कर देखा और उसे लगा कि यह मार्ग बहुत ढंग से बना-सजा हुआ है, कि सनोवर के जवान वृक्ष, इयूकेलिप्टस और बदसूरत, निचुड़े हुए से 'पाम' बहुत सुन्दर हैं और समय आने पर घनी छाँह देंगे, कि सर्कैसियन जाति ईमानदार और स्नेहपूर्ण है।

'आश्चर्य है कि लेव्सकी को काकेशिया पसन्द नहीं है,' उसने सोचा, 'बहुत आश्चर्य है!'

राइफिल लिए हुए पाँच सिपाही उसे रास्ते में मिले और उन्होंने उसे सलाम किया। सड़क के दाहिनी ओर एक स्थानीय अधिकारी की पत्नी और उसके साथ उसका स्कूल जाने वाला बच्चा जा रहे थे।

'गुड-मार्निंग, मैरिया कान्सटैंटिनोवना,' एक मीठी मुस्कान से सैमाएलैन्को ने पुकारकर कहा, 'आप स्नानकर आईं? निकोथिम एलिम्सैं-प्रिच से मेरा प्रणाम कहिएगा।'

और उसी तरह मुस्कराते हुए वह आगे बढ़ गया। लेकिन फौजी

अस्पताल के एक उप-अधिकारी को अपनी ओर आता देखकर उसकी भवें एकाएक सिकुड़ गईं और और उसे रोकते हुए उसने पूछा :

'क्यों, अस्पताल में कोई हैं ?'

'कोई नहीं, योर एक्सीलैंसी !'

'हूँ ?'

'कोई नहीं !'

'अच्छा तो जाओ !'

शान से झूमते हुए वह लेमोनेड बेचने वाले की दूकान की तरफ बढ़ गया। इस दूकान पर एक मोटी-ताजी यहूदिन बैठी थी जो अपने आपको जार्जिया का निवासी बताती थी। सैमाएलैन्को ने उससे उस भरी-पूरी आवाज में कहा मानों वह अपने पूरे दस्ते को आज्ञाएँ दे रहा हो, 'कृपा करके मुझे थोड़ा सोडा-वाटर दो।'

२

नादियेजदा फ्योद्रोवना के प्रति लेव्सकी का प्रेम होना सबसे अधिक झलकता था इस बात में कि जो कुछ भी वह कहती या करती थी वह लेव्सकी को झूठी मालूम पड़ती थी और उसे लगता था कि जो भी वह नारी जाति या प्रेम के खिलाफ पढ़ता था वह सब उस पर, नानियेजदा फ्योद्रोवना और उसके पति पर लागू है। जब उस दिन वह घर लौटा, वह अपने बाल सँवारे खिड़की के पास बैठी थी और चिन्तित मुद्रा से 'काफी' पी रही थी और एक मोटी-सी पत्रिका के पन्ने उलट रही थी। लेव्सकी को लगा कि 'काफी' पीना कोई ऐसी विशेष बात तो नहीं है जिसके लिए चिन्तित मुद्रा बनाई जाय—उसे लगा कि अच्छे ढङ्ग से अपने बाल सँवारने में नादियेजदा ने अपना समय बर्बाद किया है क्योंकि यहाँ न कोई उसके रूप को देखने वाला है और न उसकी प्रशंसा करने

वाला। पत्रिका में भी उसको केवल झूठ और धोखा दिखाई दिया। उसने सोचा कि उसने अधिक सुन्दर लगने के लिए बाल सँवारे हैं और अधिक चतुर लगने के लिए वह पत्रिका पढ़ रही है।

'क्या आज मेरा स्नान के लिए जाना ठीक होगा?' नादियेजदा ने पूछा।

'क्यों? तुम्हारे जाने या न जाने से भूचाल तो आ नहीं जायगा, मेरे विचार से......'

'नहीं—पर मैं पूछ इसलिए रही थी कि कहीं इससे डाक्टर नाराज तो नहीं हो जायँगे?'

'तो फिर डाक्टर से पूछो—मैं तो डाक्टर नहीं हूँ।'

इस अवसर पर लेव्सकी को विशेष चिढ़ लग रही थी नादियेज़दा फ्योद्रोवना के गोरे खुले हुए गले से और सिर के पीछे की छोटी-छोटी घुँघराली लटों से। उसे याद आया कि टाल्सटाय के उपन्यास में जब अन्ना कैरेनिना अपने पति से ऊबी तो उसे सबसे अधिक उसके कानों से चिढ़ लगने लगी, और लेव्सकी ने सोचा—'कितनी सत्य बात है!'

लेव्सकी को लग रहा था कि वह बिल्कुल शक्तिहीन हो गया है और उसका सिर बिल्कुल खाली हो गया है। इसलिए वह अपनी अध्ययन-शाला में जाकर एक कोच पर लेट गया और उसने मुँह पर एक रूमाल डाल लिया ताकि मक्खियाँ उसे परेशान न कर सकें। भारी और उदास कर देने वाले विचार, उन्हीं पुराने विषयों पर, उसके मन में धीरे-धीरे फिरते रहे—जैसे पतझड़ की किसी उदास साँझ में गाड़ियों की एक लम्बी कतार निकलती हो—धीरे-धीरे इस सब पर एक गहरी तन्द्रा का आवरण पड़ने लगा। फिर एक विचार उठा कि उसने नादियेजदा फ्योद्रोवना और उसके पति की हानि की है और उसे लगा कि उस पति की मृत्यु में भी उसी का दोष है। उसने महसूस किया कि उसने स्वयं अपने जीवन के प्रति भी पाप किया है—बर्बाद कर लिया है उसने अपना जीवन—और

अ०—२

पाप किया है आदर्शों, कर्मों और अध्ययन के प्रति भी। लेव्सकी ने सोचा कि आदर्शों और अध्ययन का यह सुनहरा संसार वास्तविक है—इसका अस्तित्व हो सकता है यहाँ सागर के किनारे नहीं, जहाँ काहिल पर्वत-वासी और भूखे तुर्क घूमा करते हैं बल्कि दूर उत्तर में जहाँ थियेटर है, आपरा है, समाचारपत्र हैं और भिन्न-भिन्न बौद्धिक घटनाएँ होती ही रहती हैं। ईमानदार, चतुर, महान और पाक होना केवल वहीं सम्भव है, यहाँ नहीं। उसने अपने आपको धिक्कारा कि उसके पास कोई आदर्श नहीं, जिन्दगी का कोई खास उसूल नहीं—बस केवल एक धुँधला-सा ज्ञान है इन चीजों का! जब दो वर्ष पूर्ण नादियेजदा की और उसके प्रेम की कहानी शुरू हुई थी, तो उसे लगा था कि उसे अपनी पत्नी के रूप में लेकर काकेशिया जाकर रहने भर से वह मुक्त हो जायगा—जीवन के फूहड़-पन और रिक्तता से। आज, उसी प्रकार, उसे लगा कि नादियेजदा फ्योद्रो-वना को छोड़कर पीटर्सबर्ग चले जाने से उसे वह सब प्राप्त हो जायगा, जो वह चाहता है।

एकाएक उठकर, उलझन में अपने नाखून कुतरते हुए वह धीरे-धीरे कहने लगा, 'भाग चलो—भाग चलो!' और वह सोचने लगा कि कैसे वह जहाज पर बैठेगा, खाना खायगा, ठंडी 'बियर' पियेगा, 'डेक' पर खड़ी हुई औरतों से बातें करेगा और फिर सेबास्टोपोल से रेल में बैठकर चल देगा आगे—ओह! वह स्वतन्त्रता—एक के बाद एक स्टेशन छूटते चले जायेंगे, वायु में शीत का तीखापन बढ़ता जायगा, 'फर' के वृक्ष और शाखें दिखाई पड़ने लगेंगी—फिर कुर्सक-मास्को......! रेस्तरों में बन्द-गोभी का शोरबा, बकरे के गोश्त के साथ 'काशा' बियर—उस ऐशि-याई वातावरण का अन्त हो जायगा—वहाँ रूस अपने असली रूप में होगा—वहाँ रूस की आत्मा मिलेगी। डिब्बे में बैठे हुए यात्री बातें करते होंगे व्यवसाय की, नये गायकों की, रूस और फ्रांस की नई मैत्री की, हर तरफ महक होगी चतुर, तेज, सुसंस्कृत जीवन की...चलो—जल्दी भाग चलो! फिर 'नेव्सकी प्रास्पेक्ट,' ग्रेट मोर्सकाया स्ट्रीट, कोवेन्सकी महल,

जहाँ वह अपने विद्यार्थी जीवन में एक बार रह चुका है, फैला हुआ पूरा आसमान जो बहुत प्रिय लगता है, पानी की हल्की-हल्की रिमझिम, भीगे हुए कोचवान......

'इवान आंद्रीच !' बाहर दूसरे कमरे से किसी ने पुकारा, 'क्या तुम घर पर हो ?'

'हाँ,' लेव्सकी ने उत्तर दिया, 'क्या चाहते हो तुम ?'

'कागज ।'

लेव्सकी को उठने में कष्ट हुआ—जी मिचला रहा था—और जम्हाई लेते हुए, चप्पलों को घिसटाते हुए वह दूसरे कमरे में गया । कमरे की उस खिड़की के पास जो बाहर की सड़क पर खुलती थी, उसका एक साथी अधिकारी खड़ा था जो खिड़की की मुँडेर पर कुछ सरकारी कागज फैला रहा था ।

'एक मिनट ठहरो, मित्र,' लेव्सकी ने आहिस्ता से कहा और स्याही ढूँढ़कर लाने के बाद उसने खिड़की के पास वापस आकर बिना देखे उन कागजों पर हस्ताक्षर कर दिये, 'आज गर्मी बहुत है ।'

'हाँ, आज तुम आओगे ?'

'शायद नहीं, अभी तबियत बिल्कुल ठीक नहीं है । शेशकाव्सकी से कह देना कि भोजन के बाद उससे आकर मिलूँगा ।'

क्लर्क चला गया । लेव्सकी फिर कोच पर आकर लेट गया और सोचने लगा :

इसलिए मुझे सब परिस्थितियों पर ठीक से विचार कर लेना चाहिए । यहाँ से जाने के पहले मुझे अपने कर्ज भी निबटा देने चाहिए । दो हजार रूबल उधार है मुझ पर । और पैसा बिल्कुल है नहीं—वैसे कोई खास बात नहीं है, थोड़ा-सा इस समय किसी तरह दे दूँगा और शेष फिर पीटर्सबर्ग से भेज दूँगा । मुख्य बात को नादियेजदा फ्योद्रोवना

है—सबसे पहली बात यह है कि हमें अपने सम्बन्ध ठीक से समझ लेने चाहिए—यही बात मुख्य है।'

कुछ देर में उसे ख्याल आया कि सैमाएलैंको की सलाह ले लेना ज्यादा उचित होगा और वह सोचने लगा, चला तो जाऊँ लेकिन लाभ क्या होगा? मैं औरतो के बारे में, अच्छे-बुरे के बारे में ऊट-पटाँग बात करने लगूँगा और जब मैं अपने जीवन को सुधारने की जल्दी में हूँ, जब मैं इस दासता में घुट-घुट कर मर रहा हूँ तो अच्छे-बुरे के बारे मे व्यर्थ की बातें करने से क्या लाभ? यह समझ लेना आवश्यक है कि अपने इस जीवन को बिताते रहना इतनी भारी नीचता और अन्याय है कि बाकी सब चीजें उसके सामने तुच्छ हैं। सोचते-सोचते वह उठ बैठा और बोला, 'भाग पड़ना चाहिए—भाग पड़ना चाहिए!'

वीरान सागर-तट, भयंकर गर्मी, धुँए के-से पहाड़ों का नीरस एक-सा-पन—हमेशा खामोश, हमेशा एकाकी—यह सब लेव्सकी को बुरी तरह उदास कर देते थे, उसकी चेतना को तन्द्रिल बना कर निःशक्त कर देते थे। शायद वह बहुत चतुर, प्रतिभाशाली, और ईमानदार था और यदि सागर और पहाड़ उसे घेर कर बाँधे हुए न होते तो शायद वह जेम्सतो का नेता बन जाता, राजनीतिज्ञ या वक्ता या राजनैतिक लेखक या महात्मा बन जाता—कौन जाने? और यदि ऐसा था तो क्या इस बात के उचित या अनुचित पक्षों पर बहस करना मूर्खता नहीं होगी कि एक प्रतिभाशाली और योग्य व्यक्ति—एक कलाकार या गायक—उस कारा से बचकर निकलने के लिए अपने बन्दी करने वाले को धोखा देता है और दीवार तोड़ देता है! जब परिस्थिति ऐसी हो तो व्यक्ति का हर काम ईमानदारी का होता है।

दोपहर के दो बजे लेव्सकी और नादियेजदा फ्योद्रोवना भोजन करने बैठे। जब खाना-पकाने वाले ने चावल और टमाटर का शोरबा सामने लाकर रखा तो लेव्सकी ने कहा, 'यह क्या रोज-रोज वही खाना बनता है। आज बन्द-गोभी का शोरबा क्यों नहीं बनवाया?'

'बन्द-गोभी मिलती नहीं।'

'अजीब बात है! सैमाएलैन्को के यहाँ और मैरिया कान्सटैंटिनोवना के यहाँ भी बन्द-गोभी पकाई जाती है—बस मुझे ही यह वाहियात खाना खाना पड़ता है। ऐसे कैसे काम चलेगा, प्रिये!'

जैसा आमतौर पर होता है, खाने की समस्या को लेकर अब तक पति-पत्नियो में आरम्भ के दिनों में झगड़े हुआ ही करते हैं। लेकिन जब से लेव्सकी को यह पता लगा था कि वह नादियेजदा से प्रेम नहीं करता—नहीं कर सकता, तब से वह नादियेजदा से उलझता नहीं, उसे हर प्रकार से प्रसन्न रखने की चेष्टा करता—उसकी बात मान लेता, उससे कोमलता से बातचीत करता, उसे 'प्रिये' कहकर सम्बोधित करता।

'यह शोरबा तो बहुत ही खराब है,' उसने मुस्कराते हुए कहा—वह प्रयत्न कर रहा था अपने क्रोध को रोककर शिष्टता से बात करने का—लेकिन फिर भी उसने इतना तो कहा, 'आजकल कोई घर की देख-रेख ठीक से नहीं करता......अगर अब भी तुम्हारी तबियत ठीक न हो या पढ़ने में व्यस्त रहती हो तो खाना पकने की देख-रेख मैं कर लिया करूँ?'

और शुरू के दिन होते तो नादियेजदा भी रूठ कर कहती, 'जरूर करो!' या 'लगता है कि तुम मुझे रोटी पकाने वाली बना देना चाहते हो!' लेकिन ऐसी कोई बात नादियेजदा ने नहीं कही—वह उसकी ओर घबराकर देखकर लजा गई।

'कहो, आज तुम्हारी तबियत कैसी है?' लेव्सकी ने अत्यन्त दया-पूर्वक उससे पूछा।

'आज तो बिल्कुल ठीक हूँ। केवल थोड़ी-सी कमजोरी है।'

'तुम्हें अपना ध्यान रखना चाहिए, प्रिये। मुझे तुम्हारी ओर से बहुत चिन्ता लगी रहती है।'

नादियेजदा फ्योद्रोवना को कुछ बीमारी रहती थी। सैमाएलैन्को का विचार था कि उसे रुक-रुककर आने वाला बुखार है और इसके लिए वह उसे कुनीन खिलाता था। दूसरा डाक्टर था उस्टीमोविच—लम्बा, दुबला-पतला व्यक्ति जो बिल्कुल मिलनसार नहीं था; दिन में वह घर पर बैठा रहता था और शाम को हाथ पीछे मोड़कर और उसमें छड़ी दबाए हुए खाँसता हुआ सागर-तट पर टहला करता था। उसका ख्याल यह था कि नादियेजदा को कोई स्त्री-रोग है और इसके लिए उसने सेंकने आदि का इलाज बताया था। पिछले दिनों में जब लेव्सकी उसको प्यार करता था तब उसकी बीमारी से लेव्सकी को चिन्ता और घबड़ाहट होती थी। अब नादियेजदा की इस बीमारी में भी उसे झूठ और मक्कारी मालूम पड़ती थी। उसके पीले और उनींदे चेहरे से, ओजहीन आँखों से और इस बात से कि बुखार के हर दौरे के बाद उसे बुरी तरह से जम्हाई आती थी, क्योंकि बुखार के दिनों में वह एक गर्म शाल में लिपटी पड़ी रहती थी और इस तरह ढँकी हुई वह जवान स्त्री के बजाय लड़कों जैसी लगती थी और कमरे में एक अजीब तरह का बासीपन और घुटन रहती थी, लेव्सकी को लगता था मानो सब भ्रम टूट गए और इससे उसके मन में प्रेम और विवाह के खिलाफ बहुत से तर्क उठ-उठ खड़े होते थे।

चावल और शोरबे के बाद लेव्सकी के सामने उबले हुए अंडे और पालक की तश्तरी रखी गई और बीमार होने के कारण नादियेजदा के सामने जेली और दूध रखा गया। नादियेजदा ने अत्यन्त खिन्नता से जेली में चम्मच लगाकर बेमन उसे खाना शुरू किया और साथ में दूध भी पीना शुरू किया। नादियेजदा के दूध पीने की आवाज सुनकर लेव्सकी के मन में उसके लिए एकाएक इतनी भीषण घृणा उपजी कि उसका दिमाग घूम गया। लेव्सकी को यह लगा कि मन में ऐसी भावना रखना कुत्तों तक के लिए अपमानजनक होता है लेकिन फिर भी उसे अपार क्रोध आया—अपने ऊपर नहीं, नादियेजदा फ्योद्रोवना के ऊपर अपने मन में ऐसी भावना उपजने के लिए—और तब उसकी समझ में

आया कि अक्सर प्रेमी अपनी प्रेमिकाओं की हत्या क्यों कर देते हैं। वह उसकी हत्या नहीं करेगा ·लेकिन इस प्रकार की हत्या का कोई अपराधी उसके सामने न्याय के लिए आता तो वह अवश्य उसे मुक्त कर देता।

'अच्छा, प्रिये।' यह कहकर खाने के बाद उसने नादियेजदा फ्योद्रोवना का मस्तक चूमा और चला गया। अपनी अध्ययनशाला में आकर, नीचे अपने जूतों की तरफ घूरता हुआ, वह पाँच मिनट तक इधर-उधर टहलता रहा; फिर वह 'सोफा' पर बैठ गया और बड़बड़ाने लगा।

'भाग पड़ना चाहिए—भाग पड़ना चाहिए! आपस के सम्बन्ध तय करके मुझे भाग पड़ना चाहिए!'

लेव्सकी सोफा पर लेट गया और उसे याद आया कि नादियेजदा फ्योद्रोवना के पति की मृत्यु हो गई है—शायद उसमें उसका भी कुछ दोष हो।

वह सोचने लगा, किसी व्यक्ति को यह दोष देना मूर्खता है कि वह किसी औरत से प्रेम करता है या उसने उससे प्रेम करना बन्द कर दिया है। यह सोचते हुए उसने लेटे-लेटे ही बड़े जूते पहनने के लिए पैर और ऊपर उठाए, प्रेम और घृणा पर हमारा कोई अधिकार नहीं। और जहाँ तक उसके पति का सम्बन्ध है—तो शायद उनकी मृत्यु का मैं किसी उल्टे ढंग से दोषी होऊँ लेकिन क्या इसमें भी मेरा दोष है कि मुझे उसकी पत्नी से प्रेम हो गया और उसे मुझसे?

यह सोचता हुआ वह उठ पड़ा और अपनी टोपी उठाकर वह अपने साथ काम करने वाले एक मित्र, शेशकाव्सकी के यहाँ चल दिया। शेशकाव्सकी के यहाँ सब कर्मचारी रोज इकट्ठे होते थे—'विंट' नामक एक खेल खेलने और 'बियर' पीने के लिए।

रास्ते में लेव्सकी सोच रहा था—अनिश्चित होने की मेरी मनो-

वृत्ति 'हैमलेट' से कितनी मिलती-जुलती है। आह—वास्तव में शेक्सपियर ने कितनी सच्चाई से—कितनी सफलता से इस मनोवृत्ति का चित्रण किया है।

३

कुछ तो अपने मिलनसार स्वभाव के कारण और कुछ इसलिए कि उन्हें उस नगर में नए आए हुए उन व्यक्तियों से बहुत सहानुभूति थी, जो बिना परिवार के बाहर आते थे और नगर में कोई होटल न होने के कारण जिन्हें भोजन के लिए कोई स्थान नहीं था, डाक्टर सैमाएलैन्को अपने ही यहाँ थोड़ा-बहुत भोजन का प्रबन्ध हमेशा रखते थे। उन दिनों केवल दो ही व्यक्ति ऐसे थे जो उनके साथ अक्सर खाना खाया करते थे। एक था एक युवक जीव-विज्ञान-वेत्ता—वान कोरेन, जो गर्मी के मौसम में 'मेडूसा' नामक जीव के अंडों के सम्बन्ध में शोध करने के लिए ब्लेक सागर के निकट के इस प्रदेश में आया हुआ था और दूसरा था एक पादरी, पोबिएदाव, जो हाल ही में अपनी धार्मिक शिक्षा प्राप्त करके उस नगर में पिछले वृद्ध पादरी का स्थान ग्रहण करने आया था जो अपना इलाज कराने कहीं बाहर चला गया था। दोनों अपने भोजन के लिए बारह रूबल प्रति-मास देते थे और सैमाएलैन्को ने उन दोनों से यह तय कर लिया था कि दोपहर के भोजन के लिए वह ठीक दो बजे आ जाया करेंगे।

वान कोरेन ही लगभग हमेशा पहले पहुँचता था। आकर वह चुप-चाप बैठक के कमरे में बैठ जाता था और मेज से चित्रों का एक 'ऐल्बम' उठाकर देर तक अपरिचित स्त्री-पुरुषों की धुँधली तस्वीरें देखा करता था। सैमाएलैन्को भी स्वयं उनमें से कुछ को उनके नामों से पहचानता था और जिनके चित्र वह भूल जाता था, उनके बारे में गहरी साँस भर कर कहता था, 'बहुत ही अच्छा—बहुत चतुर व्यक्ति था वह!' और जब

वान कोरेन चित्रों का 'एलबम' देखकर समाप्त कर देता था तब या तो कहीं से एक पुरानी पिस्तौल उठाकर और बाईं आँख मूँदकर प्रिंस वोरानस्टाप के दीवार पर टँगे हुए चित्र पर निशाना बाँधता था या टँगे हुए शीशे के सामने खड़े होकर देर तक अपने सुर्ख मोटे चेहरे, अपने चौड़े माथे और गाल, अफ्रीका के आदिवासियों की तरह घुँघराले बालों, अपनी सूती हल्के रंग की कमीज जिस पर फारसी कालीनों के से बड़े-बड़े फूल छपे थे, और उस चौड़ी चमड़े की पेटी की ओर गौर से देखता रहता था जो वह वास्कट के बजाय पहनता था। दर्पण में अपने व्यक्तित्व के प्रतिबिम्ब को देखकर उसकी आत्मा को 'एल्बम' देखने या पिस्तौल से निशाना बाँधने से अधिक सन्तोष मिलता था। विशेष सन्तोष उसे अपनी मुखाकृति से, सुन्दर करीने से कटी हुई दाढ़ी से और चौड़े कंधों से होता था जिनसे उसके अच्छे स्वास्थ्य का परिचय मिलता था। इसके अतिरिक्त उसे अपनी पोशाक से भी पूर्ण सन्तोष था—सुन्दर साज-सज्जा से जो उसकी कमीज के रंग से मिलते हुए हैट से लेकर भूरे जूतों तक बहुत उत्तम थी।

जिस समय वान कोरेन इस प्रकार चित्र का 'एल्बम' या दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखता होता, उसी समय सैमाएलैन्को चौके में और पास के गलियारे में कोट और वास्कट उतारे, खुले गले से, उत्तेजित, पसीने में नहाया हुआ खाना बनाने की मेज के चारों तरफ बिगड़ता और शोर मचाता होता—सलाद मिलाता, चटनी बनाता, ठंडे शोरबे के लिए गोश्त; कुकम्बर, और प्याज तैयार करता और साथ ही साथ अपने चपरासी पर झुँझलाता, बिगड़ता, और क्रोध में चाकू या चम्मच घुमाता।

'लाओ, सिरका लाओ,' बिगड़कर वह कहता, 'वह सिरका नहीं है, अहमक! वह सलाद का तेल है।' और फिर क्रोध में वह पैर पटकता और कहता, 'क्यों बे बदमाश, किधर चला?'

'मक्खन लाने, सरकार!' घबड़ाए हुए चपरासी ने फटी हुई-सी आवाज में उत्तर दिया।

'जल्दी करो, जल्दी करो, देखो मक्खन आल्मारी में रखा है। और डेरिया से कह दो कि बर्त्तन में कुकम्बर के साथ थोड़ा फेनेल भी डाल दे फेनेल उफ! ओ गदहे कहीं के, देख क्रोम को ढँक दे, उस पर मक्खियाँ बैठ रही हैं।'

और लगता कि पूरा घर उसके इस शोर से गूँज रहा है।

जब दो बजने में दस-पन्द्रह मिनट रह जाते तो पादरी भी पहुँच जाता। पादरी बाइस वर्ष का युवक था, लम्बे बाल थे, इकहरे बदन का था, दाढ़ी तो थी ही नहीं और मूँछें भी नहीं के बराबर थीं। बैठक में आकर पहले उसने मूर्ति के सामने श्रद्धा में शीश झुकाया और फिर मुस्कराते हुए वान कोरेन से मिलाने के लिये हाथ आगे बढ़ाया।

'गुड मार्निङ्ग,' वान कोरेन की आवाज और अभिवादन में ठंडक थी, 'कहाँ से आ रहे हो?'

'मैं बन्दरगाह के किनारे मछलियाँ पकड़ रहा था,' पादरी ने कहा।

'ओह, अच्छा! लगता है कि तुम कभी काम के बारे में गम्भीर नहीं होगे,' वान कोरेन ने कहा।

'क्यों नहीं?' उसी तरह मुस्कराते और अपने सफेद लबादे की गहरी जेबों में अपने हाथ धँसाते हुए पादरी बोला, 'काम भालू तो है नहीं कि आँख बचते जंगल में भाग जाय।'

साँस भरकर वान कोरेन ने कहा, 'हाँ, तुम्हें दंड देने वाला कोई नहीं है न!'

इसी तरह पन्द्रह-बीस मिनट बीत गए और फिर भी उन्हें किसी ने खाने को नहीं बुलाया। खाने के कमरे से चौके के बीच घबड़ाहट में भागते हुए चपरासी के भारी बूटों की आवाज जोर से आ रही थी और सैमाएलैन्को चिल्ला रहा था--'जाओ, इसे जाकर मेज पर रख दो। अरे पागल हो गये हो, पहले धो तो लो।'

वान कोरेन और पादरी, दोनों के पेट में चूहे कूद रहे थे और वह बेसब्री में कमरे के फर्श पर एड़ियाँ पटक रहे थे जैसे थियेटर में दर्शक खेल देर में शुरूहोने पर करते हैं। अन्त में कुछ देर बाद दरवाजा खुला और घबड़ाए हुए चपरासी ने कहा कि खाना तैयार है। डाइनिंग रूम में सैमाएलैन्को पहले से ही उपस्थित था—मुँह लाल, नाराज, चौके की गर्मी के कारण पसीना से तर-बतर! उसी क्रुद्ध मुद्रा से उसने उन लोगों की तरफ देखा और भयभीत होकर उसने शोरबे का बर्तन खोला और दोनों को तश्तरी भर-भरकर दिया और केवल तभी उसने निश्चिन्त होकर सन्तोष की साँस ली। जब उसने देखा कि दोनो बहुत जायके से शोरबा पी रहे हैं तो आराम से अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उसके चेहरे पर सुख और शान्ति की चमक फैल गई और उसकी आँखें नम हो गईं......अपना गिलास 'वोडका' से भरकर वह बोला, 'नई पीढ़ी के लिए!'

लेव्सकी से बात करने के फलस्वरूप सुबह से दोपहर के भोजन के समय तक, सैमाएलैन्को के दिल पर एक भार महसूस हो रहा था। स्वयं बहुत ही अच्छे 'मूड' में होते हुए भी, उसे लेव्सकी के सम्बन्ध में सोच-कर बहुत दुख हो रहा था और वह उसकी सहायता करने के लिए कुछ करना चाहता था। शोरबा पीने से पहले अपना 'वोडका' का गिलास खत्म करके उसने एक लम्बी साँस भरी और कहा, 'आज मै लेव्सकी से मिला था। बेचारा बड़ी तकलीफ में है। आर्थिक स्थिति तो खराब है ही, उसकी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ भी बहुत टेढ़ी और उलझी हुई हैं। बहुत अफसोस और चिन्ता है मुझे उस बेचारे के लिए।'

वान कोरेन ने रूखेपन से उत्तर दिया, 'और मुझे तनिक भी खेद नहीं है उस व्यक्ति के लिए। यदि वह डूबता भी हो तो मै किसी डंडे से और भी डुबो दू और साफ कह दू खुशी से—डूब मरो, भाई, जल्दी डूब मरो!'

'यह तो झूठ कह रहे हो, ऐसा तुम कभी भी नहीं करोगे।'

'क्यों?' कन्धे हिलाते हुए वान कोरेन बोला, 'तुम्हारी तरह मैं भी तो लोगों की भलाई कर सकता हूं।'

'किसी को डुबाना क्या अच्छा काम है?' पादरी ने हँसते हुए पूछा।

'लेव्सकी को डुबाना! हाँ, वास्तव में अच्छा काम है!'

चिन्तित होकर सैमाएलैन्को ने बात को पलटने की कोशिश की, 'शोरबा कुछ ठीक नहीं बना है......'

लेकिन वान कारेन ने बात जारी रखी, 'लेव्सकी वास्तव में जहरीला व्यक्ति है। समाज को उससे उतना ही खतरा है जितना कालरा के कीटाणु से! डुबा कर उसका अन्त कर देना वास्तव में समाज-सेवा होगा।'

सैमाएलैन्को को बात बुरी लगी, 'अपने पड़ोसी के बारे में इस तरह बात करना तुम्हें शोभा नहीं देता। यह बताओ कि तुम उससे इतनी घृणा क्यों करते हो?'

'क्या व्यर्थ की बात पूछते हो, डाक्टर? कीटाणु से घृणा करना मूर्खता की बात है। हाँ, लेकिन किसी भी ऐसे व्यक्ति को, जो प्रतिष्ठा-हीन और गुणहीन हो, अपना मित्र और पड़ोसी मान लेने का तो मतलब यह है कि स्वयं अपनी परख और आलोचना का अधिकार छोड़ दें, लोगों को सही न आँकें—वास्तव में अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का त्याग कर दें। मैं साफ तौर पर तुम्हारे उस लेव्सकी को लम्पट मानता हूँ और उसके बारे में मन में यह धारणा रखने में अपने आपको...ठीक समझता हूँ। तुम चाहे उसे अपना पड़ोसी मानो या घनिष्टतम मित्र मानो, तुम्हें अधिकार है परन्तु इसका मतलब यह भी होता है कि तुम्हारा मेरे और पादरी के प्रति भी वही दृष्टिकोण है और हम भी तुम्हारी दृष्टि में लेव्सकी के स्तर पर हैं—वह न केवल हमारे प्रति अन्यायपूर्ण है बल्कि

यह तो कोई दृष्टिकोण ही नहीं है ! तुम हम सब की ओर से उदासीन हो ।'

अरुचि से मुँह बिगाड़ते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'किसी को लम्पट कह देना इतनी बुरी बात है कि......'

'लोगों को उनके कर्मों से पहिचाना और जाना जाता है,' वान कोरेन बोला, 'अच्छा, तुम्हीं बताओ—' और वह पादरी की ओर मुड़कर आगे बोला, 'मैं तुमसे पूछ रहा हूँ ! लेव्सकी का जीवन तुम्हारी आँखों के सामने है—किसी चीनी पहेली की तरह और आदि से अन्त तक तुम उसे पढ़ सकते हो । दो साल से वह इस स्थान में है और इन दो वर्षों में उसने क्या किया ? आओ, जो कुछ उसने किया है उसे उँगलियों पर गिन लें—एक : उसने इस नगर में रहने वालों को 'विन्ट' खेलना सिखाया, दो साल पहले यहाँ इस खेल को कोई नहीं जानता था—अब जिसे देखो वही, स्त्री और बच्चे, सुबह से शाम तक वही खेलते रहते हैं । दो: उसने यहाँ के निवासियों को 'बियर' पीना सिखाया जो वह पहले नहीं जानते थे और शराब के वे आदी और शौकीन हो गए है और यह सब लेव्सकी के कारण । तीन : पहले लोग दूसरों की पत्नियों से छिपकर प्रेम करते थे वैसे ही जैसे चोर छिपकर चोरी करता है—व्यभिचार को शर्मनाक पाप समझा जाता था । लेव्सकी ने इस नैतिक प्रतिबन्ध को भी तोड़ दिया है और वह सरेआम किसी दूसरे व्यक्ति की पत्नी के साथ रहता है । चार :......' जल्दी से अपना शोरबा खत्म करके वान कोरेन ने अपनी तश्तरी बैरे को दे दी और फिर बोला, 'लेव्सकी को जानने के महीने भर के अन्दर ही समझ गया था कि वह किस तरह का आदमी है । हमलोग लगभग एक ही समय इस नगर में आए थे । उसकी तरह के लोग मित्रता के बेतकल्लुफी के गुट बनाने के बहुत शौकीन होते हैं—क्योंकि उन्हें 'विन्ट' खेलने के लिए साथी चाहिए—और खाना-पीना भी उन्हें बहुत प्रिय होता है । इसके अलावा वे बातूनी भी बहुत होते हैं और इसके लिए उन्हें श्रोता भी चाहिए । तो इस तरह हम मित्र बने—बल्कि यह कहना

अधिक उचित होगा कि वह मौके-बे-मौके आ जाता था, मेरे काम में विघ्न डालता था और अपनी प्रेयसी के बारे में घनिष्टता से बात करता था। आरम्भ से ही मुझे लगा कि वह बिल्कुल गैरदयानतदार है और यह बात मुझे बहुत ही बुरी लगी। दोस्त के नाते मैंने भी उससे बहुत बातें कीं—पूछा कि वह इतनी शराब क्यों पीता है, अपने साधनों से अधिक क्यों रहता है, क्यों कर्ज लेता है, वह कुछ करता क्यों नहीं, पढ़ता-लिखता क्यों नहीं, उसमें संस्कृति और ज्ञान इतना कम क्यों है? लेकिन मेरे हर प्रश्न के उत्तर में वह आह भरता था, उसके चेहरे पर एक कड़वी मुस्कराहट फैल जाती थी और वह कहता था, 'मैं एक असफल हारा हुआ व्यक्ति हूँ, जिससे कोई लाभ नहीं, जिसका कोई उपयोग नहीं!' या वह कहता, 'हमारे इस वर्ग से—गुलाम रखने वाले अभिजात वर्ग के खँडहरों से तुम और आशा भी किस बात की रखते हो दोस्त?' या, 'हम पतित हैं......' या वह साहित्य के व्यंगात्मक पात्रो का दृष्टान्त देकर कहता, 'वे हैं हमारी आत्मा और चरित्र के पूर्वज!' और इन सब कारणों से यह उसका दोष नहीं था कि सरकारी पत्र उसके दफ्तरों में हफ्तों तक बिना खुले पड़े रहते थे—कि वह पीता था और दूसरों को पीना सिखाता था; इसके जिम्मेदार थे वह पात्र और वह लेखक जिन्होंने निराशा, पतन और उदासीनता का सृजन किया था। उसके अनुसार उसके पतन और उसकी बुराइयों का कारण उसके व्यक्तित्व में नहीं है, उससे बाहर कहीं और है। और इसलिए—और कितना चतुर है यह तर्क—केवल वही गिरा हुआ, बेकार, निराश और उदासीन नहीं है वरन हम सब, हमारी पूरी पौध—हम जो पतनशील अभिजात वर्ग की सड़न के उत्तराधिकारी हैं—हम भी उसके साथ बँधे हुए हैं—पतन के इस प्रवाह में असहाय बनने को मजबूर थे—हमें हमारी इस सभ्यता और संस्कृति ने पंगु बना दिया है और हमें यह मानना चाहिये कि अपने पतन में भी लेव्सकी महान है—काल की गति की अनिवार्यता पर शहीद है और महान है उसकी शहादत, कि उसकी सभ्यता और कुसंस्कृति और अनैतिकता मानव इतिहास के क्रम

की एक आवश्यक कड़ी है जो अनिवार्य है और इसलिए बेबस है—महान प्रतीक है उस पतनशीलता का, कि उ.के पतन के कारण अन्तर्राष्ट्रीय हैं, रूढ़ हैं, स्वाभाविक हैं और हमें चाहिये कि हम उसके आगे श्रद्धा के दीप जलाएँ क्योंकि वह इस सारे युग की शहादत का प्रतीक है, कि वह महान बलिदान, युग के पतन का क्रूश वह उठाए है और अकेला भुगत रहा है वह इस यातना को। हर व्यक्ति—हर अधिकारी, हर पुरुष, हर स्त्री—उसकी इन बातों के सम्मोहन में फँसता जा रहा था और मेरे लिए यह तय कर पाना असम्भव सा हो रहा था कि यह व्यक्ति व्यंगपूर्ण अविश्वासी है या एक धूर्त्त और लम्पट। ऐसे व्यक्ति जो सतह पर बुद्धिवादी लगते हैं और जिनका ज्ञान भी छिछला होता है और जो इसके साथ ही बात करने में और अपनी महानता का बखान करने में बहुत चतुर होते हैं वे सफलता से अपने को विचित्र चरित्रों की तरह दर्शाने में बहुत कामयाब होते हैं।'

एकाएक सैमाएलैन्को को बहुत क्रोध आ गया और वह बिगड़ उठा, 'चुप रहो! मैं यह नहीं बर्दाश्त कर सकता कि एक बहुत अच्छे व्यक्ति के बारे में मेरे सामने इस तरह की बातें की जायँ।'

'बीच में मत बोलो, एलिक्जैन्डर डैविडिच,' वान कोरेन ने सख्ती से कहा, 'मैं अपनी बात खत्म ही कर रहा हूँ। लेव्सकी का व्यक्तित्व वास्तव में उतना उलझा हुआ नहीं है। लेव्सकी के आचरण का ढाँचा यह है: सुबह उठकर नहाना और काफी पीना, दोपहर के भोजन तक गप्पें मारना, दो बजे खाना और शराब, पाँच बजे नहाना, चाय और शराब, उसके बाद 'विन्ट' खेलना और झूठी गपबाजी, दस बजे रात को फिर भोजन और शराब और आधी रात के बाद नींद और औरत। इस छोटे से दायरे में उसका जीवन बँधा हुआ है जैसे बाहरी खोखले में अंडा बन्द रहता है। क्रोध या हँसी, उठना या बैठना—कोई भी भाव हो, वह फँसा रहता है शराब में, ताश में या औरतों में। औरत का एक विशेष और घातक

प्रभाव है उसके जीवन पर। वह स्वयं कहता है कि तेरह वर्ष की आयु में उसे प्रेम हो गया था, जब वह प्रथम वर्ष का छात्र था तब वह एक स्त्री के साथ रहता था जिसका उसके ऊपर. बहुत भी प्रभाव था और जिसके कारण उसे संगीत की शिक्षा मिली थी। दूसरे वर्ष में वह एक वेश्या को एक चकले से लाया, उसे अपने स्तर तक उठाया और अपनी रखैल को तरह रखा। छः महीने उसके साथ रहने के बाद वह लड़की चकले के मालिक के पास वापस भाग गई और लेव्सकी बताता है कि इस बात से उसकी आत्मा को बहुत चोट पहुँची। वास्तव में यह चोट इतनी गहरी थी कि विद्यालय छोड़कर उसे दो वर्ष घर पर खाली बैठना पड़ा। लेकिन यह अच्छा ही हुआ क्योंकि घर पर उसकी मित्रता एक विधवा से हो गई जिसने उसे सलाह दी कि न्याय का अध्ययन छोड़कर उसे कला विभाग का विद्यार्थी बन जाना चाहिए। ऐसा ही उसने किया। जब परीक्षा में सफल होने पर उसने डिग्री ले ली तभी उसे उस औरत से—क्या नाम है उसका—प्रेम हो गया और अब भी वह उसके साथ है। यह स्त्री विवाहिता थी और अपने आदर्शों की रक्षा के लिए उसे वहाँ से उस स्त्री के साथ भाग कर यहाँ काकेशिया में आना पड़ा। वह चाहता है कि हम उसकी इस बात पर विश्वास कर लें। लेकिन उसके पिछले आचरण को देखकर यही लगता है कि आज या कल, आगे-पीछे वह इस स्त्री से उकता जायगा और फिर अपने आदर्शों की रक्षा के लिए सेंट पीटर्सबर्ग को वापस लौट जायगा—उसे यहीं छोड़कर !'

'यह कैसे कह सकते हो तुम ?' गुर्राकर सैमाएलैन्को ने क्रोध से वान कोरेन की तरफ देखते हुए कहा, 'तुम चुपचाप अपना भोजन करो।'

इसके बाद खाने की दूसरी चाजें आईं। सैमाएलैन्को ने स्वयं दोनों को उसमें से दिया और दो मिनट खामोशी से बीते।

'लेकिन स्त्रियों का हर व्यक्ति के जीवन में महत्त्व होता ही है,' युवक पादरी बोला।

'हाँ—लेकिन किस हद तक ?' वान कोरेन ने कहा, 'हममें हर एक के लिए स्त्री या तो माँ होती है या बहन या पत्नी या मित्र लेकिन लेव्सकी के लिए स्त्री केवल एक रूप में सब कुछ है—एक प्रेयसी के रूप में। स्त्री—बल्कि यूँ समझो कि उसके साथ शारीरिक सम्बन्धों की स्थापना उसके जीवन का चरम् सुख है और सब से बड़ा आदर्श। उसके जीवन की हर महत्त्वपूर्ण भावना—हँसी, रंज, ऊब, निराशा, सब स्त्रियों के कारण ही होती है। उसके जीवन में कोई गड़बड़ हो—उसका कारण औरत होती है; कोई नया प्रभात जगमगाए—कोई नए आदर्श जागें—इसका कारण भी कोई स्त्री ही होगी। उसे केवल उन्हीं पुस्तकों में या चित्रों में आनन्द मिलता है जिनमें स्त्रियों का वर्णन या चित्रण हो। उसके विचार से हम लोग अपनी पिछली पीढ़ियों से इसलिए पिछड़े हुए हैं क्योंकि हम उस तरह मुक्त होकर निर्बन्ध अपने आप को डुबो नहीं देते प्यार की मदिरा में और अपनी उत्तेजनाओं में बह नहीं जाते। इस प्रकार के आसक्त व्यक्तियों के मस्तिष्क में अवश्य कोई रोग ऐसा होगा जो बुद्धि को बढ़ने नहीं देता और उसके अभाव में उनके मनोविज्ञान को ढाल कर कुत्सित करता होगा। लेव्सकी को कभी गौर से देखो जब वह लोगों के बीच में बैठा हो—किसी विषय पर बात कह उदासीन बैठा रहेगा लेकिन जैसे ही स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध में बात शुरू होगी वैसे ही उसकी आँखें उत्सुक हो जायँगी और उसका चेहरा चमक उठेगा—ऐसा मालूम होगा जैसे उसमें एकाएक जान आ गई। उसके हर विचार का, हर भावना का निर्देशन मानों वासना करती है। और कभी तुम्हें उसने स्वप्नों के बारे में बताया है ? वह भी एक ही चीज है ! कभी वह स्वप्न देखेगा कि उसका विवाह चाँद से हो गया, कभी यह कि उसे पुलिस ने पकड़कर आज्ञा दी है कि वह 'गिटार'* के साथ जीवन बिताए.....'

---

* गिटार : एक वाद्य यन्त्र !

अ०—२

पादरी जोर से हँस पड़ा। सैमाएलैन्को ने अपना माथा सिकोड़ा और आती हुई हँसी को क्रोध की मुद्रा से छिपाना चाहा लेकिन बेबस होकर वह भी हँस पड़ा—'सब बकवास है—हाँ, वास्तव में, यह सब बकवास है!'

४

युवक पादरी का मन बहुत आसानी से बहल जाता था और वह छोटी से छोटी बात पर इतनी जोर से हँस पड़ता था कि पेट में दर्द होने लगे—बेदम हो जाय। ऐसा लगता था मानो वह लोगों से केवल इसीलिए मिलता हो कि उनमें से हर एक में कोई न कोई अजीब या मजेदार बात होती है और उनका मजाक उड़ाया जा सकता है। लोगों के नाम बिगाड़ कर रखने या उन्हें अजीब नामों से पुकारने में उसे बहुत मजा आता था और एक बार तो वह बहुत ज्यादा हँसा था, जब वान कोरेन ने लेव्सकी और नादियेजदा फ्योद्रोवना को जापानी बन्दर कहकर पुकारा था। वह लोगों के चेहरों को गौर से देखता और उनकी बातें गौर से सुनता था और हमेशा ऐसा लगता कि बस अब वह जोर से फूट कर हँस पड़ने वाला ही है।

'वह एक पतित और कामी व्यक्ति है,' वान कोरेन ने कहा। पादरी की आँखें उसके चेहरे पर लगी हुई थीं मानों वह इस प्रतीक्षा में हो कि वह कोई मजेदार बात कहने वाला है। वान कोरेन ने बात जारी रखते हुए कहा, 'ऐसा क्षुद्र व्यक्ति पाना भी कोई साधारण बात नहीं है। शारीरिक तौर पर वह ढीला-ढाला और कमजोर है और समय से पहले ही बुड्ढा लगने लगा है—मानसिक स्तर भी उसका बहुत ही नीचा है, किसी मोटे दूकानदार की पत्नी की तरह जो केवल खाती है, पीती है, नर्म गदेलों पर सोती है और अपने सईस से छिपकर प्रणय-क्रीड़ा करती है।'

पादरी जोर से हँसने लगा। वान कोरेन ने गम्भीर स्वर में कहा, 'हँसो मत।' फिर कुछ देर और इस बात का इन्तजार करके कि पादरी की हँसी रुक जाय, वान कोरेन फिर बोला, 'और यह भी हो सकता था कि मैं उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता यदि वह खतरनाक और हानिकारक न होता। उससे सबसे बड़ा नुकसान यह है कि औरतों के लिए वह बहुत आकर्षण है और इस कारण इस बात की बहुत बड़ी आशंका है कि वह अपनी तरह ही कमजोर और पतित दर्जनों व्यक्तियों को जन्म देगा। दूसरे उसका प्रभाव उतना ही विषैला है जितना किसी संक्रामक रोग का होता है। यह तो बता ही चुका हूँ कि स्थानीय लोगों को उसने जुए और 'बियर' की आदत डलवा दी है—अब एक या दो साल के अन्दर उसका कुप्रभाव काकेशिया के पूरे प्रदेश में फैल जायगा। तुम तो जानते ही हो कि लोग—विशेष रूप से मध्य वर्ग के लोग बुद्धिवादिता में, विश्वविद्यालय की शिक्षा में, भद्र आचरण में और साहित्यिक भाषा में श्रद्धा रखते हैं। इसलिए जो भी अनुचित काम वह करता है, उसे यह लोग उचित मानते हैं क्योंकि वह समझते हैं कि लेव्सकी स्वतन्त्र विचारों का बुद्धिवादी है जिसने विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त की है। और इसके अलावा वह एक हारा हुआ व्यक्ति है, हताश है, लाभहीन है, कुन्ठित है, युग की प्रतिक्रियावादी शक्तियों का शिकार है और इसका मतलब है कि वह सब कुछ कर सकता है। यूँ वह एक मजेदार आदमी है, भला खासा, मानवी दुर्बलताओं को सहने वाला है—कोमल है, दूसरों से निभाने वाला है, उसमें गर्व नहीं है, लोग उसके साथ बैठकर शराब पी सकते हैं, दिल खोलकर बातें कर सकते हैं, दूसरों की निन्दा कर सकते हैं......लोग उन्हीं छोटे-छोटे देवताओं को सबसे अधिक पूजते हैं जिनमें उन्हीं जैसी कमजोरियाँ होती हैं। अब यह सोचो कि लेव्सकी को अपना विष फैलाने के लिए कितना बड़ा क्षेत्र है। और यही नहीं, वह रूप बनाने में और अभिनय करने में भी अत्यन्त कुशल है—कैसे वह बातों को तोड़-मरोड़ कर लोगों पर अपनी कोरी बुद्धिवादिता जमाता है। सभ्यता की गहराइयों

की अभी उसने थाह नहीं ली है फिर भी वह बड़े इतमीनान से कहता है, 'हमारी सभ्यता ने हमें पंगु बना दिया है। उन जंगली जातियों से—प्रकृति के उन पुत्रों से मुझे कितनी ईर्ष्या है जिन्हें इस सभ्यता का कुछ भी ज्ञान नहीं।' उसकी इन बातों से हमें यह समझ लेना चाहिए कि कभी बहुत पहले उसने सभ्यता को जाना है, देखा है, परखा है, उसकी गहराइयों को नापा है, लेकिन उसको धोखा दिया है सभ्यता ने। उसके भ्रम टूटे हैं, वह थका है, हारा है, जैसे कि वह एक दूसरा फास्ट है, दूसरा टाल्सटाय है। और शापेनहावर और स्पेन्सर जैसे दार्शनिकों को वह बच्चे समझता है और उनके सम्बन्ध में ऐसे बात करता है मानो वह कोई साधारण अनुभवहीन युवक हो। निश्चित है कि उसने कभी भी स्पेन्सर का कुछ नहीं पढ़ा है लेकिन कितनी लापरवाही से—कितने मजे में वह अपनी प्रेयसी के बारे में कहता है, 'ओह! उसने पढ़ा है स्पेन्सर को। और दुख इस बात का है कि सब लोग उसकी बात बड़ी तन्मयता से सुनते हैं, हालाँकि उनको यह नहीं मालूम कि यह मूर्ख स्पेन्सर के जूते साफ करने योग्य भी नहीं है। वह हमारी सभ्यता की जड़ें खोखली कर रहा है, लोगों की मान्यताओं की—विश्वासों की प्रतिमाओं पर कीचड़ उछाल रहा है—उनका अपमान कर रहा है अपने व्यक्तित्व की सड़न और पतन को छिपाने के लिए—अपनी अनैतिकता को सही प्रमाणित करने के लिए। और ऐसा केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो व्यक्तिगत पतन की गहराई तक डूब चुका हो।'

'लेकिन पता नहीं, कोल्या, तुम उससे आखिर चाहते क्या हो?' इस बार सैमाएलैन्को की आवाज में क्रोध नहीं था केवल स्वयं अपराधी होने की झिझक-सी थी, 'जैसे और होते हैं वैसे ही वह भी तो एक व्यक्ति है। हाँ, यह हो सकता है कि उसकी अपनी कमजोरियाँ हों, लेकिन वह आधुनिक विचारों से परिचित है, राजकीय अधिकारी है और इस प्रकार अपने देश की सेवा कर रहा है। अब से दस साल पहले यहाँ एक वृद्ध कर्मचारी था जो बहुत चतुर था। वह कहा करता था......'

'यह सब बेकार की बात है !' बीच में बात काटते हुए वान कोरेन बोला, 'तुम कहते हो कि वह राजकीय अधिकारी होने के नाते राज्य की सेवा करता है। लेकिन किस तरह सेवा करता है वह ? क्या तुम्हारे कहने का मतलब है कि यहाँ—इस प्रदेश में जो सुधार, जो अच्छे काम हुए हैं, वह उसके कारण हुए हैं या यह कि उसी के कारण अन्य अधिकारियों का नैतिक स्तर ऊँचा उठा है ? इसके बिल्कुल विपरीत उसने उन लोगों के दुर्गुणों को मान्यता दी है, इसलिए कि उसमें भी वही दुर्गुण हैं और वह इसलिए क्षम्य हैं कि वह विश्वविद्यालय में पढ़ा हुआ बुद्धिवादी है। वह केवल महीने की बीस तारीख को समय से कार्यालय में पहुँचता है क्योंकि उस दिन वेतन मिलता है—बाकी और दिन वह घर पर काहिली किया करता है, मानों यहाँ काकेशिया में रहने में वह सरकार पर कोई बहुत बड़ा अहसान कर रहा हो। नहीं, एलिक्जैन्डर डैविडिच, तुम्हारा उसके पक्ष में बोलना उचित नहीं है। तुम इस प्रकार स्वयं उसके प्रति भी ईमानदार नहीं हो। तुम यदि उसे वास्तव में पसन्द करते होते, तो तुम उसकी कमजोरियों के प्रति उदासीन न होते, उन्हें स्वीकार न करते वरन् उसी के खातिर उसको दूसरों के लिए हानिकारक होने की सम्भावना को खत्म कर देते !'

आश्चर्य में सैमाएलैन्को ने पूछा, 'वह कैसे ?'

'क्योकि वह अपने आपको सुधार नहीं सकता। इसीलिए ऐसा करने का केवल एक ही रास्ता है...' और कहते हुए वान कोरेन ने अपने गले पर उँगली फेरने का संकेत किया, 'या उसको डुबा दिया जाता। वास्तव में, मानवता के हित में और स्वयं ऐसे लोगों के हित में, इन लोगों का नाश कर देना चाहिए।'

'क्या कह रहे हो तुम ?' आश्चर्य में वान कोरेन के ठंडे-रूखे चेहरे की तरफ घूरते हुए सैमाएलैन्कों ने कहा। फिर पादरी से वह बोला, 'वह क्या कहावत है......? क्यों, कोल्या, तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ?'

'हाँ मैं मृत्यु दंड पर जोर नहीं देता।' वान कोरेन ने कहा, 'लेकिन यदि ठीक नहीं है तो कोई दूसरा तरीका निकाल लेना चाहिए—अगर हम लेव्सकी का अन्त नहीं कर सकते, तो उसे समाज से निकाल देना चाहिए, कड़ी सजा देनी चाहिए।'

'क्या कह रहे हो तुम!' घबड़ा कर सैमाएलैन्को ने कहा, और फिर यह देखकर कि पादरी एक विशेष चीज बिना काली मिर्च के खा रहा है, वह एकदम बोल उठा, 'अरे इसे काली मिर्च डालकर खाओ, काली मिर्च डालकर!' और फिर विषय पर लौटते हुए वह बोला, 'तुम इतने योग्य आदमी होते हुए कैसी बात कर रहे हो—अपने एक अच्छे, गर्वीले, बुद्धि-वादी मित्र को आजन्म कारावास भेज दें।'

'हाँ, और वह यदि अधिक गर्वीला और हठीला हो तो बेड़ी-हथ-कड़ी डालकर!'

सैमाएलैन्को इस पर एक शब्द भी नहीं कह पाया और घबराहट से अपनी उँगलियाँ नचाता रहा। उसके चेहरे की घबराहट देखकर पादरी हँस पड़ा।

'हटाओ यह बात खत्म करें,' वान कोरेन ने कहा, 'लेकिन, एलिक-जैन्डर डैविडिच, एक बात का ध्यान रखना—आदि मानव लेव्सकी जैसे लोगों के कुप्रभाव से बचा रहा था। केवल इसलिए कि जीने की स्पर्धा उग्र थी और प्रकृति का नियम था कि केवल वही जी सकेगा जिसमें टिकने की शक्ति है, लेकिन अब हमारी सभ्यता ने उस स्पर्धा को काफी कमजोर बना दिया, अब इन हानिकारक लोगों का अन्त प्राकृतिक नियम द्वारा नहीं होगा, अब हमें अपनी सुरक्षा के लिए उनका अन्त स्वयं करना पड़ेगा और यदि ऐसा नहीं होगा तो लेव्सकी की तरह के लोगों की संख्या में वृद्धि हो जायगी, सभ्यता का अन्त हो जायगा, मानवता का पतन हो जायगा और दोष इसमें हम लोगों का होगा।'

'और यदि किसी की हत्या करने से, डुबाने से तुम्हारी इस सभ्यता का

कल्याण हो सकता है, तो धिक्कार है ऐसी सभ्यता को—ऐसी मानवता को।' सैमाएलैन्को ने क्रोध में कहा, 'और मै तुम्हें एक बात और बता दूँ—तुम बहुत योग्य और पढ़े-लिखे आदमी हो, अपने देश के लिए गौरव की वस्तु हो, लेकिन जर्मनी के दार्शनिक प्रभाव ने तुम्हें बर्बाद कर दिया है।'

जब से सैमाएलैन्को ने जर्मनी छोड़ था—जहाँ वह डाक्टरी की शिक्षा के लिए गया हुआ था तब से उसने शायद ही कभी कोई जर्मन पुस्तक पढ़ी हो या किसी जर्मन को देखा हो, लेकिन उसका विश्वास था कि राजनीति, दर्शन या विज्ञान में जो भी हानिकारक प्रभाव आता है वह उसी देश से आता है। यह विश्वास उसे कैसे और क्यों हुआ, यह वह स्वयं भी नहीं बता सकता था। लेकिन फिर भी उसका यह विश्वास बिल्कुल दृढ़ था।

'हाँ, यह जर्मनी का ही प्रभाव है।' उसने एक बार फिर यह बात दोहराई और फिर बोला, 'आओ, चलकर चाय पी जाय।'

तीनों उठकर खड़े हो गए और हैट लगाकर बाहर छोटे से बाग में आ गए, और मेपल, नासपाती और चेस्टनट के वृक्षों की हरी छाया में बैठ गए। वान कोरेन और पादरी मेज के पास पड़ी हुई बेन्च पर बैठ गए और सैमाएलैन्को बेंत की एक आरामदेह, गहरी कुर्सी में धँसकर बैठ गया। चपरासी ने उन्हें चाय, मुरब्बे, और शर्बत की एक बोतल दी।

गर्मी बहुत थी और साये में भी तापमान बहुत ऊँचा था। हवा गर्म थी, लेकिन खामोश और ठहरी हुई थी, और चेस्टनट के वृक्ष से जमीन तक बँधा हुआ मकड़ी का जाला तनिक भी नहीं हिल रहा था। पादरी ने गिटार उठा लिया, क्योंकि वह हमेशा पास की जमीन पर पड़ा रहता था और उसके तार कसके धीमी आवाज में एक गीत गाने लगा। लेकिन पहली ही पंक्ति गाकर वह गर्मी के कारण रुक गया और माथे का पसीने पोंछ कर दहकते हुए नीले आकाश की तरफ देखने लगा। सैमाए-

लैन्को ऊँघने लगा—एक तो बहुत गर्मी थी, फिर खामोशी, फिर खाने के बाद का हल्का-सा खुमार जो तेजी से उसके सारे शरीर पर छाने लगा था। उसके हाथ कुर्सी के दोनों तरफ लटक गए, आँखें छोटी हो गईं और सिर नींद में लुढ़क गया। फिर बिलकुल नम कोमलता और गीले स्नेह से उसने उसी तरह वान कोरेन और पादरी की तरफ देखा और बुदबुदाया, 'यह नयी पीढ़ी...एक विज्ञान के जगत का सितारा, दूसरा गिरजे का एक प्रतिष्ठित अधिकारी......कोई आश्चर्य न होगा यदि यह एक दिन 'बिशप' न हो जाय और मैं आकर इसके हाथ चूमूँ......अच्छा...... भगवान करे......'

जल्दी ही खर्राटे की आवाज आने लगी। वान कोरेन और पादरी अपनी चाय खत्म करके बाहर सड़क पर आ गए।

'क्या यहाँ से फिर सागर में मछलियाँ पकड़ने जाओगे?' वान कोरेन ने पूछा।

'नहीं, इस समय गर्मी बहुत है,' पादरी ने कहा।

'तो आओ. फिर मेरे साथ चलो; मेरा एक पार्सल बाँध देना और मेरे लिए किसी चीज की प्रतिलिपि बना देना। और हाँ, एक दिन हम लोगों को इस मामले पर भी बात करनी चाहिए कि तुम्हें क्या काम करना है—इस तरह तुम्हें बर्बाद नही करना चाहिए!' वान कोरेन ने कहा।

'तुम बात तो ठीक और उचित कह रहे हो,' पादरी ने उत्तर दिया, 'लेकिन मेरे इस प्रकार के ठलुआ जीवन की सिर्फ सफाई मेरी स्वाभाविक काहिली है। तुम तो जानते ही हो कि यदि किसी व्यक्ति की नौकरी का भविष्य अनिश्चित होता है तो वह उसकी तरफ से स्वभावतः उदासीन रहता है। मैं नहीं जानता कि मैं यहाँ थोड़े समय के लिये आया हूँ या स्थायी रूप से। मैं यहाँ पर अनिश्चित अवस्था में पड़ा हूँ और मेरी पत्नी अपने पिता के साथ सड़ रही है। और फिर मेरा दिमाग इस गर्मी के कारण पिघला जा रहा है।'

यह सब बेकार बात है,' वान कोरेन ने कहा, 'गर्मी के और पत्नी की अनुपस्थिति के तो आसानी से आदी हो सकते हो। तुम्हें इस प्रकार काहिली नहीं करनी चाहिए—अपने आप को सँभालो।'

५

दूसरे दिन सुबह, नादियेजदा फ्योद्रोवना नहाने के लिए गई। उसके पीछे उसकी खाना पकाने वाली नौकरानी, ओल्गा, थी जो साथ में एक 'जग', एक ताँबे का तसला, तौलिया और 'स्पन्ज' लिए हुए थी। खाड़ी में दो अपरिचित जहाज खड़े हुए थे जिनकी सफेद चिमनियाँ गन्दी हो चुकी थीं, सम्भवतः माल ढोने वाले विदेशी जहाज थे। सफेद कपड़े और सफेद जूते पहने हुए कुछ व्यक्ति सागर-तट पर इधर-उधर टहल रहे थे और चिल्ला-चिल्लाकर फ्रान्सीसी भाषा में बात कर रहे थे। जहाज पर से भी लोग उत्तर में कुछ चीख रहे थे। नगर के छोटे-छोटे गिरजों के घंटे भी जल्दी-जल्दी बज रहे थे।

'आज इतवार है,' बहुत हर्ष के साथ नादियेजदा फ्योद्रोवना को याद आया।

आज वह बहुत प्रसन्न थी और उसे लगा रहा था कि वह पूर्णतः स्वस्थ भी है। वह सोच रही थी कि मोटी 'टसर' सिल्क की ढीली-ढाली पोशाक और चटाई के बहुत चौड़े हैट में, जो उसके कानों तक को ढँके हुए था और जिसमें से उसका चेहरा ऐसा लग रहा था मानों किसी टोकरी में से झाँक रहा हो, बहुत सुन्दर लग रही होगी। उसका विचार था कि उस छोटे से नगर में केवल एक ही जवान, खूबसूरत और पढ़ी-लिखी औरत है जो कि वह स्वयं है और केवल वही एक ऐसी औरत है जो कि जानती है कि किस प्रकार सस्ते और खूबसूरत कपड़े बनवाएँ और पहने जायँ! उदाहरणार्थ, उसकी यही पोशाक केवल बाईस रूबुल की है लेकिन कितनी आकर्षक है। यही नहीं, पूरे नगर में केवल वही एक आकर्षक

औरत है और आदमी असंख्य है और इसलिए वह सब लेव्सकी से जलते होंगे, ऐसा भी उसका विचार था।

वह इस बात से खुश थी कि इधर कुछ दिनों से उसके प्रति लेव्सकी का व्यवहार कुछ ठंडा और रूखा हो गया है—कभी शिष्ट और सम्मान-पूर्ण और कभी खुरदुरा और क्रोधपूर्ण। इसके पहले वह रो देती थी, रूठ जाती थी, छोड़ देने की या अनशन करने की धमकी देती थी जब लेव्सकी बिगड़ता था; अब वह लजा जाती थी और अपराधी की तरह उसकी ओर देखती थी, जब वह बिगड़ता था। और वह खुश थी कि लेव्सकी अब उससे इतना प्यार नहीं करता। अगर बिगड़कर लेव्सकी उसे गाली देता या प्रताड़ित करता तो शायद अच्छा होता क्योंकि वह सोचती थी कि उसने लेव्सकी के प्रति कोई अपराध किया है। वह सोचती थी कि दोषी वह स्वयं है क्योंकि पीटर्सबर्ग छोड़कर यहाँ आने का कारण यह था कि लेव्सकी ने यहाँ मेहनत करने की योजना बनाई थी और उसने उसका साथ नहीं दिया था। और वह यह भी सोचती थी कि इधर कुछ दिनों से लेव्सकी उससे इसी कारण नाराज भी रहता है। जब वह दोनों काकेशिया में रहने के आए थे तो विचार यह था कि यहाँ आकर उन्हें सागर के किनारे एक सुन्दर, छोटा सा मकान मिल जायगा जहाँ एक छोटा, प्यारा-सा बाग होगा, पेड़ों की हरी छाँह होगी, चहचहाते हुए पंछी होंगे, गाते हुए चश्मे होंगे और यहाँ वह फल-फूल और सब्जी उगा सकेगी, बत्तखें और मुर्गियाँ पाल सकेगी, अपने पड़ोसियों का मनोरंजन करके एक सुखी सामाजिक जीवन बना सकेगी, और बीमार किसानों की देखभाल करके उनमें छोटी-छोटी पुस्तकों द्वारा साहित्य का प्रचार कर सकेगी। लेकिन वास्त-विकता यह थी कि काकेशिया एक निर्जन-सा प्रदेश था, जिसमें नंगे पर्वत थे, जंगल थे, भयानक गहरी घाटियाँ थीं, जहाँ जगह ढूँढ़कर बसने के लिए अथक परिश्रम और समय लगता था, जहाँ किसी भी प्रकार के पड़ोसियों की कमी थी, बेइन्तहा गर्मी पड़ती थी और चोरी-डाके का

बराबर खतरा था। जमीन ढूँढ़ने के लिए लेव्सकी ने कोई जल्दी नहीं की थी और इस बात से वह खुश थी और ऐसा लगता था, मानो दोनों बिना बात किए इस बात पर सहमत थे कि उस पिछले आदर्श, कल्पित जीवन के बारे में कभी बात न की जाय। वह सोचती थी कि अब इसी विषय पर लेव्सकी उससे इसलिए नाराज है क्योंकि वह कभी उस जीवन के बारे में न सोचती है, न बात करती है।

इसके अलावा, बिना लेव्सकी को बताये, उसने पिछले दो वर्षों में एचमियो नोव की दूकान से लगभग तीन सौ रूबुल की कुछ चीजें खरीद ली थीं। यह बेकार की चीजें वह धीरे-धीरे ही खरीदती रही थी लेकिन इसका कर्ज भी बढ़ता गया था और अब इतना हो गया था।

रोज वह सोचती थी—'आज मैं इसके बारे में उन्हें अवश्य बता दूँगी...' लेकिन फिर फौरन ही उसे ध्यान आता था कि इन परिस्थितियों में लेव्सकी से कर्ज की बात करना उचित न होगा।

एक तीसरी बात और भी थी। दो बार, लेव्सकी की अनुपस्थिति में वह पुलिस के कप्तान-किरीलिन से मिल चुकी थी—एक बार सुबह जब लेव्सकी समन्दर में नहाने गया हुआ था और दूसरी बार आधी रात में जब वह कहीं और ताश खेल रहा था। इसका ध्यान आते ही उसका मुँह शर्म से लाल पड़ गया और घबड़ाकर उसने घूमकर देखा कि कहीं ओल्गा ने उसके मन की बात जान तो नहीं ली। लम्बे थका देने वाले गर्म दिन, खूबसूरत शामों का खुमार, दम घोटने वाली रातें और जीवन का यह क्रम जब नहीं सोच पाता कि बराबर बेकारी के घंटों में क्या करे—और लगातार यह बढ़ता हुआ विचार और विश्वास कि वह उस स्थान की सबसे खूबसूरत औरत है और इस सब पर स्वयं लेव्सकी, जो ईमानदार और आदर्शवादी तो था लेकिन जो बराबर एक ही जैसा रहता था—बराबर चप्पल पहने हुए अपना समय बर्बाद करता हुआ, नाखूनों को दाँतों से कुतरता हुआ, अपने अस्थायी विचारों से उसे उबाता हुआ

इस सब के कारण उसके अन्दर पार्थिव उत्तेजनाओं का ज्वार धीरे-धीरे ऊँचा—और ऊँचा चढ़ता गया और दिन-रात उसके अन्दर अधूरी इच्छाओं का पागल तूफान चीखता रहा। सोते-जागते, चलते-फिरते, खेलते वही एक विचार-वासना-उत्तेजना ! सागर की लहरों का शोर उससे कहता था कि प्यार करो—घिरती हुई साँझ का अन्धकार उससे कहता था कि प्यार करो, नंगे पर्वतों की ऊँचाइयाँ उससे कहती थीं कि प्यार करो...और जब किरीलिन ने उसकी ओर ध्यान देना शुरू किया तब उससे बचने की न तो उसमें शक्ति थी और न इच्छा। और इसलिए उसने अपने को किरीलिन को दे दिया।

और आज खाड़ी में लङ्गर डालकर खड़े हुए इन विदेशी पोतों और सफेद कपड़े पहने हुए व्यक्तियों को देखकर उसे एक बड़े से 'हाल' की याद आ गई जिसमें से नाच और संगीत की लहरें तैरती हुई आ रही हैं और उमंग से उसका सीना धड़कने लगा। उसके अन्दर भी इच्छा उठी—एक जबरदस्त इच्छा—कि वह नाचे-गाये, फ्रेन्च बोले।

और वह सोचने लगी कि लेव्सकी को धोखा देकर किरीलिन को समर्पण कर देना कोई उतना भयानक पाप तो नहीं है। उसकी आत्मा उस पाप में नहीं सनी थी, वह लेव्सकी से अब भी प्रेम करती थी और इसका प्रमाण यह था कि वह लेव्सकी का ध्यान रखती थी, उसे खोना नहीं चाहती थी और जब वह कहीं चला जाता था तो उसे बुरा लगता था। और किरीलिन एक बिलकुल साधारण व्यक्ति था—सुन्दर किन्तु अल्पशिष्ट। उससे सम्बन्ध भी टूट चुके थे और भविष्य में भी इसकी कोई सम्भावना नहीं थी। जो कुछ हुआ था, वह अब खत्म हो चुका था; उस बात का अब किसी से सम्बन्ध नहीं था और लेव्सकी को यदि इस बात का पता लग भी जायगा तो वह इसका विश्वास नहीं करेगा।

स्त्रियों के नहाने के लिए सागर-तट पर केवल एक ही स्थान था—पुरुष खुले में ही नहाते थे। स्त्रियों के इस स्नानागार में आकर नादिये

जदा ने देखा कि एक अधिक अवस्था की स्त्री—मैरिया कान्सटैन्टिनोवना बिट्यु गाँव और उसकी पन्द्रह वर्षीय पुत्री-कैट्या—वहाँ पहले से थे और एक बेन्च पर बैठे हुए कपड़े उतार रहे थे। मैरिया कान्सटैन्टिनोवना एक अच्छे स्वभाव की सीधी-सादी औरत थी, जिसकी आवाज बड़ी करुण थी। बत्तीस वर्ष की अवस्था तक वह बच्चों की देख-रेख करने वाली 'गवर्नेस' रही थी और उसके बाद उसने बिट्युगाँव नामक एक सरकारी अधिकारी से शादी कर ली थी। बिट्युगाँव भी सीधे स्वभाव का नाटा और चँदला आदमी था। मैरिया उससे अब भी प्रेम करती थी—खुश थी और 'प्यार' की चर्चा करते ही लजा जाती थी।

नादियेजदा को देखकर वह अत्यन्त हर्ष से बोली, 'कितना अच्छा हुआ तुम आ गईं। कितना आनन्द आएगा—हम लोग साथ-साथ स्नान करेंगे।'

ओल्गा ने स्वयं अपने वस्त्र उतार दिए और अपनी मालकिन के कपड़े भी उतारने लगी।

'कल से तो कम गर्मी है आज,' नादियेजदा ने कहा, 'वस्त्रहीन नौकरानी के खुरदुरे हाथों के स्पर्श से वह घृणा से सिहरी-सी जा रही थी। 'कल तो मैं गर्मी के कारण मर ही गई थी।'

'हाँ, प्रिये, कल गर्मी थी भी बहुत ज्यादा। मुझे भी साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। क्या तुम विश्वास करोगे कि कल मुझे तीन दफा नहाना पड़ा था। जरा ख्याल करो—तीन दफा! मेरे पति, निकोडिम एलिक्सैंड्रिच तो घबड़ा ही गए थे इस पर।'

नौकरानी ओल्गा और मैरिया कान्सटैन्टिनोवना को देखकर नादियेजदा मन में सोच रही थी—क्या इतना बदसूरत होना सम्भव है? और फिर मैरिया की लड़की कैट्या को देखकर उसने सोचा, 'यह छोटी लड़की तो खराब नहीं है।' और फिर स्पष्ट बोली, 'निकोडिम एलिक्सैंड्रिच बहुत ही अच्छे व्यक्ति हैं; मैं उन्हें बहुत पसन्द करती हूँ।'

'हा...हा...हा !' दिखाने के लिए हँसती हुई मैरिया बोली, 'यह तो बहुत अच्छी बात है ।'

अब तक नादियेजदा अपने वस्त्र उतार चुकी थी और उसकी इच्छा हो रही थी कि हवा में मुक्त होकर उड़ जाय और उसे लगा कि यदि वह बस हाथ उठा भर दे तो वह उड़ जाय । उसने देखा कि ओल्गा उसके गोरे शरीर की ओर घृणा की दृष्टि से देख रही है । ओल्गा एक युवक सैनिक की पत्नी थी और विधिपूर्वक विवाहित होने के कारण अपने आपको अपनी मालकिन से ज्यादा ऊँचा समझती थी । मैरिया और उसकी पुत्री कैट्या भी उससे डरते थे और उसका आदर नहीं करते थे । यह बात नादियेजदा को बुरी लगी और उन लोगों की नजरों में अपना मान बढ़ाने के लिए उसने कहा, 'वहाँ पीटर्सबर्ग में इस गर्मी में बँगलों का जीवन बहुत ही जोरदार होगा । वहाँ मेरे पति के और मेरे बहुत से मित्र हैं । हमें उनसे जाकर मिलना चाहिए ।'

'मेरे ख्याल से तुम्हारे पति इन्जीनियर हैं ?' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने दबे हुए स्वर में कहा ।

'मैं लेव्सकी की बात कर रही थी । उनके वहाँ बहुत से दोस्त हैं । लेकिन अभाग्यवश उनकी माँ अभिजात वर्ग की एक गर्वीली सदस्या हैं और बहुत चतुर भी नहीं हैं...'

बिना वाक्य पूरा किये ही नादियेजदा जल में कूद पड़ी, मैरिया कान्सटैन्टिनोवना और कैट्या उसके बाद पानी में घुसीं ।

पानी में नहाते हुए नादियेजदा बोली, 'अब भी समाज में इतनी परम्पराएँ और रूढ़ विचार हैं कि सुख से जीवन बिताना असम्भव-सा मालूम पड़ता है ।'

अभिजात परिवारों में 'गवर्नेस' रह चुकने के कारण, मैरिया कान्स-टैन्टिनोवना की राय इन सामाजिक विषयों पर बिल्कुल ठीक मानी जाती

थी। उसने कहा, 'हाँ, यह तो है ही। क्या तुम विश्वास करोगी कि जब मैं गारटिन्सकी परिवार में थी, तो मुझे दोपहर और रात के भोजन के लिए कपड़े बदलने पड़ते थे और इसलिए अभिनेत्रियों की तरह, वेतन के अलावा कपड़ों के लिए अलग भत्ता मिलता था।'

वह नादियेजदा फ्योद्रोवना और कैट्या के बीच में इस प्रकार खड़ी थी मानों अपनी लड़की को उस जल से बचाना चाहती हो जो नादियेजदा के शरीर को स्पर्श कर रहा था।

स्नानागार के बाड़े में बनी हुई खिड़कियो में से दिखाई पड़ रहा था कि कोई व्यक्ति थोड़ी दूर पर तैर रहा है।

'अरे, माँ, यह कोस्तया है,' कैट्या ने कहा।

'कोस्तया! ओ कोस्तया ज्यादा दूर मत जाओ, लौट आओ, लौट आओ!' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना चिल्लाने लगी।

चौदह वर्ष का कोस्तया अपनी माँ और बहिन को अपने जौहर दिखा रहा था। वह डुबकी लेकर और दूर तैर गया लेकिन जब थकने लगा तो वापस लौट आया। उसके खिंचे हुए, गम्भीर चेहरे से लग रहा था कि उसे अभी अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं हुआ है।

'यह लड़के बहुत परेशान करते हैं,' मैरिया ने कुछ शांत होकर कहा, 'इसके पहले कि तुम्हें पता लगे यह अपना सिर-पैर तोड़ लेते हैं। माँ होने में कितना सुख है और कितनी परेशानी—हमेशा दिल में डर लगा ही रहता है।'

नादियेजदा अपना चटाई का हैट लगा कर, स्नानागार के बाड़े से निकल कर खुले समन्दर में आ गई। वह पचीस-तीस गज तक तैर गई और फिर उलट कर तैरने लगी। क्षितिज तक फैला हुआ सागर उसे दिखाई पड़ रहा था और जहाज और तट पर टहलते हुए व्यक्ति और दूसरी तरफ फैला हुआ नगर और भीगी हुई—भारी सी गर्मी—नाजुक,

पारदर्शक, चमचमाती हुई लहरें उसे छू रही थीं—उनके स्पर्श से उसके अन्दर उत्तेजना का ज्वार उठ रहा था और वह उसके कान में बार-बार कह रही थीं, 'तुम्हें जी भर कर जीना चाहिए—जीना चाहिए......।' एक पाल वाली नाव उसके पास से तेजी से निकल गई—लहरों को काटती हुई—उस पर बैठे हुए व्यक्ति ने उसकी तरफ देखा—उसे वह 'देखना' बहुत अच्छा लगा—बहुत अच्छा......

नहाने के बाद इन लोगों ने कपड़े पहने और साथ बाहर निकल आई।

'मुझे हर तीसरे दिन बुखार आ जाता है, लेकिन मैं दुबली नहीं होती,' नादियेजदा ने कहा—वह होंठ चाट रही थी, जो नहाने के बाद सागर के जल से खारे थे, और अपने परिचितों के अभिवादनों का मुस्करा कर उत्तर दे रही थी, 'मैं मोटी तो हमेशा से थी लेकिन अब तो मैं पहले से भी कहीं मोटी हूँ।'

'यह तो अपनी-अपनी काठी की बात है,' मैरिया ने कहा, 'अगर मेरी तरह मोटे होने की काठी हो तो फिर खाना कम खाना या कुछ और भी फायदा नहीं करता......अरे, तुमने अपना हैट भिगो लिया।'

'कोई बात नहीं सूख जायगा।' नादियेजदा फिर उन्हीं लोगों की ओर देख रही थी जो सफेद कपड़े पहने हुए सागर-तट पर टहल रहे थे और फ्रेन्च बोल रहे थे। इन्हें देखकर वह एक बार फिर उत्तेजित होकर काँप उठी। उसे धुँधली सी याद आई किसी बहुत बड़े हाल की जिसमें उसने कभी नृत्य किया था या शायद उसका ख्वाब देखा था। और आत्मा की गहराई में से किसी दबी हुई, कमजोर आवाज ने उससे कहा कि वह केवल एक क्षुद्र, मामूली, बेकार, दुखी औरत है......

मैरिया कान्सटैन्टिनोवना का मकान आ गया था। अपने फाटक पर रुककर उसने नादियेजदा को अन्दर आकर कुछ देर बैठने का निमंत्रण दिया, 'आओ, कुछ देर बैठकर जाना।' लेकिन वह नादियेजदा की तरफ इस फिक्र और आशा में देख रही थी कि किसी तरह वह इंकार

कर दे। किन्तु नादियेजदा ने उसके निमंत्रण को स्वीकार करते हुए कहा : 'धन्यवाद—अवश्य, मुझे तुम्हारे साथ बैठकर बात करने में बहुत आनन्द आता है।' और यह कहकर नादियेजदा भी मकान के अन्दर आ गई। मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने उसकी बहुत खातिर की—और काफी पीने के बाद उसे अपने पुराने छात्रों के—गाररिन्सकी परिवार के बच्चों के—चित्र दिखाए जिनकी अब शादियाँ हो चुकी थीं। मैरिया ने कोस्तया और कैट्या के परीक्षा-फल दिखाए। दोनों के परीक्षा-फल बहुत अच्छे थे लेकिन अपने बच्चो की और तारीफ करने के लिए उसने एक ठंडी आह भरकर यह शिकायत की कि अब स्कूलों में पढ़ाई बहुत मुश्किल होती है। मैरिया ने अपने अतिथि की बहुत आवभगत की—उसे नादियेजदा से सहानुभूति भी थी लेकिन उसे डर लग रहा था कि कहीं नादियेजदा का उसके बच्चों के चरित्रों पर कुप्रभाव न पड़े और इसलिए खुश थी कि उसका पति निकोदिम एलिक्सैंड्रिच—घर पर नहीं है। और फिर मैरिया का विचार यह था कि पुरुष 'इस प्रकार' की औरतों से बहुत आकर्षित होते हैं—इसलिए नादियेजदा फ्योद्रोवना का प्रभाव उसके पति पर भी बुरा पड़ सकता था।

अपने अतिथि से बात करते हुए, मैरिया को बराबर यह याद आ रहा था कि उन लोगों को शाम को एक पिकनिक में जाना था। और वान कोरेन ने विशेष रूप से उससे यह कहा था कि इसका जिक्र वह इन जापानी बन्दरों—लेव्सकी और नादियेजदा—से न करे लेकिन फिर उसके मुँह से वह बात अनचाहे निकल पड़ी और इसे कहते ही उसका मुँह सुर्ख हो गया और घबड़ाहट में वह केवल यह कह पाई, 'आशा है, तुम भी उसमें चलोगी न?'

६

यह तय हुआ था कि नगर के बाहर पाँच मील दूर यह सब लोग उस स्थान तक जायँगे जहाँ दो नदियों का—ब्लैक रिवर और येलो रिवर

अ०—४

का संगम है और वहाँ पर ही मछली आदि पकाई जायगी। ठीक पाँच बजे के बाद यह लोग अपने-अपने घरों से इकट्ठे होकर रवाना हुए। सब से आगे वाली गाड़ी में सैमाएलैन्को और लेव्सकी थे, उसके पीछे वाली गाड़ी में मैरिया कान्सटैन्टिनोवना, नादियेजदा फ्योद्रोवना, कैट्या और कोस्तया—इन लोगों की गाड़ी में तीन घोड़े लगे थे और इसी गाड़ी में खाने-पकाने के बर्तन और जरूरी खाद्य पदार्थों की एक टोकरी रखी थी। उसके बाद वाली गाड़ी में पुलिस का कप्तान किरीलिन, युवक एचमियोनाव—जिसके पिता की दूकान से नादियेजदा ने उधार सामान खरीदा था—और उनके सामने की गद्दी पर था निकोदिम एलिक्सैंड्रिच—साफ-सुथरा और अपने चँदले सिर पर के थोड़े से बालों को चिकना करके काढ़े हुए। सबसे अन्तिम गाड़ी में थे वान कोरेन और युवक पादरी—पादरी के पैरों के पास मछली की टोकरी रखी थी।

'बच के!' सैमाएलैन्को अपनी पूरी आवाज से चिल्लाता था जब रास्ते में कोई दूसरी गाड़ी या खच्चर पर बैठा हुआ कोई पहाड़ी यात्री मिलता था।

सबसे अन्तिम गाड़ी में बैठा हुआ वान कोरेन पादरी से कह रहा था, 'लगभग दो साल में आदमियों और उचित साधनों का प्रबन्ध हो जायगा और तब अपनी वैज्ञानिक शोध यात्रा पर जा सकूँगा। सागर के किनारे-किनारे मैं व्लाडीवास्टक से बहरिंग स्ट्रेट्स तक जाऊँगा और फिर वहाँ से येनिसी के मुहाने तक। हम लोग उस प्रदेश का नक्शा साथ ले जायँगे और वहाँ के वनस्पति और जीवों का अध्ययन करेंगे और भूविज्ञान, जीव-विज्ञान आदि में महत्त्वपूर्ण शोध कार्य कर सकेंगे। यदि तुम चाहो तो तुम भी हमारे साथ चल सकते हो।'

'नहीं, यह असम्भव है,' पादरी ने उत्तर दिया।

'क्यों?'

'मैं परिवार का आदमी हूँ और अनेक बन्धन हैं।'

'तुम्हारी पत्नी का प्रबन्ध हम लोग कर देंगे और मेरे विचार से वह तुम्हें चला जाने देंगी। और भी अच्छा होगा यदि तुम इन्हें भी समाज-सेवा के लिए महिलाओं की किसी धार्मिक संस्था में शामिल होने के लिए राजी कर लेते। तब तो तुम भी भिक्षु की तरह इस यात्रा में शामिल हो सकते हो। मैं तुम्हारे लिए यह प्रबन्ध कर सकता हूँ।'

पादरी इस पर चुप रहा। वान कोरेन ने प्रश्न किया, 'तुम धर्मग्रन्थों को अच्छी तरह जानते हो?'

'नहीं, बल्कि मेरा अध्ययन काफी खराब है,' पादरी ने उत्तर दिया।

'हूँ......इस विषय पर तो मैं तुम्हें कोई राय नहीं दे सकता क्योंकि मैं स्वयं धर्म-शास्त्रों के बारे में अधिक नहीं जानता। लेकिन तुम मुझे उन किताबों की सूची बता दो जिनकी तुम्हें आवश्यकता हो। मैं इन जाड़ों में तुम्हें यह पीटर्सबर्ग से मँगा दूँगा। यह भी आवश्यक है कि तुम पिछले धार्मिक यात्रियों के लेखों का भी अध्ययन कर लो। इनमें से कुछ भाषा विज्ञान के और पूर्वी-ग्रथों के अच्छे विद्यार्थी हैं। एक बार जब तुम्हें उन लोगों के काम का ढंग मालूम पड़ जायगा तो तुम्हारे लिए भी मार्ग सरल हो जायगा। और जब तक किताबें आती हैं तब तक तुम्हें खाली बैठने की जरूरत नहीं—तब तक तुम कुछ काम कर सकते हो—मेरे पास चले आया करो और हम लोग मिलकर कुतुबनुमे का और नक्षत्रों का अध्ययन किया करेंगे। यह सब भी बहुत आवश्यक है।'

'जरूर...जरूर......' पादरी ने कहा और फिर कुछ रुककर हँस पड़ा और बोला, 'मैं मध्य रूस में अपनी बदली कराने की कोशिश कर रहा हूँ और मेरे चाचा ने—जो मुख्य पुरोहित हैं—इस बात में मेरी सहायता करने का वचन दिया है। अगर मैं चला गया तो मेरे ऊपर की गई तुम्हारी सारी मेहनत बेकार जायगी।'

'तुम्हारी यह हिचक—यह निश्चयहीनता मेरी समझ में नहीं आती। अगर तुम बराबर ऐसे ही एक मामूली पादरी रहे, जिसे केवल छुट्टियों के

दिन उपदेश देना पड़ता है और जो बाकी दिन बेकार रहता है, तो अब से दस वर्ष बाद भी तुम ठीक वही होगे जो तुम आज हो। सिवा दाढ़ी और मूँछ बढ़ाने के तुम किसी और चीज में उन्नति नहीं कर सकोगे। लेकिन यदि तुम इस शोध-यात्रा पर गए तो दस वर्ष बाद एक बिलकुल बदले हुए व्यक्ति होगे—मात्र इस विचार से ही तुम्हारे अन्दर गम्भीरता और आत्मसम्मान आयेगा कि तुमने कुछ किया है,' वान कोरेन ने कहा।

और तभी महिलाओं वाली गाड़ी से भय और उल्लास की चीखें आती हुई सुनाई दीं। बात यह थी कि उस समय गाड़ियाँ एक ऐसी सड़क पर से होकर जा रही थीं जो खड्ड में निकली हुई चट्टान से खोखली करके निकाली गई थी और इसलिए बैठे हुए व्यक्तियों को ऐसा लग रहा था मानों वह किसी ऊँची सपाट दीवार पर टेढ़े दौड़े हुए चले जा रहे हों, किसी अदृश्य गर्त्त में कूद पड़ने के लिए। दाहिने हाथ की तरफ सागर का विस्तार था, बाएँ हाथ की तरफ पहाड़ की एक खुरदुरी, भूरी दीवार जिस पर काले धब्बे पड़े थे, लाल उभरी हुई नसें थी और मोटी-मोटी जड़ें और चट्टान के ऊपर 'फर' के झुके हुए पेड़ थे मानो वह भय और अचरज में नीचे झाँक रहे हों। एक मिनट चुप रहकर फिर वही चीखें और हँसी की आवाजें आईं—इस बार वह एक विशाल झुकी हुई चट्टान के नीचे होकर गुजर रहे थे।

'पता नहीं मैं तुम लोगों के साथ क्यों चला आ रहा हूँ,' लेव्सकी खीझकर कह रहा था, 'कितनी भद्दी और मूर्खतापूर्ण बात है। मैं यहाँ से भाग जाना चाहता था उत्तर के प्रदेशों में लेकिन पता नहीं क्यों मैं इस वेवकूफी के 'पिकनिक' में तुम लोगों के साथ चला आ रहा हूँ!'

'देखो...देखो, क्या दृश्य है!' सैमाएलैन्को ने कहा जैसे ही घोड़े बाएँ हाथ को मुड़े और येलो रिवर की घाटी दिखाई देने लगी। सूरज की रोशनी में नदी चमक रही थी—पीली, गँदली और विह्वल।

'मुझे इस दृश्य में कोई मजा नहीं आ रहा है, साशा,' लेव्सकी ने कहा, 'प्रकृति से आसानी से मुग्ध हो जाने का मतलब है कि हम में कल्पना

की कमी है। जो कुछ मैं अपनी कल्पना से देख या सोच सकता हूँ उसके सामने यह नदी, यह चट्टानें, यह सब कुछ कूड़ा है।'

गाड़ियाँ अब तक नदी के किनारे आ गई थीं। पहाड़ी किनारे अब एक दूसरे के और निकट खिसक आए थे—जैसे पूरी वादी सिकुड़ गई हो। वह पहाड़, जिस पर घूमकर लोग यहाँ आए थे, ऐसा लगता था मानों प्रकृति ने उसे कई जबरदस्त चट्टानों को दबाकर बनाया हो और हर चट्टान दूसरी पर इस भीषण बोझ से दबी हुई थी कि उन्हें देखकर सैमाएलैन्को हमेशा गहरे और भयपूर्ण आश्चर्य में पड़ जाता था। उस गहरे खूबसूरत पहाड़ में कई गहरी और छोटी दरारें थीं, जो रहस्यपूर्ण और रूमानी लगती थीं और जिनमें ओस की भीगी हुई सी खुशबू आती थी। इन दरारों में से पीछे के और भी पर्वत दिखाई पड़ते थे—भूरे, गुलाबी, धुएँ के से या चमकते हुए, नहाए हुए धूप में। अक्सर जब वह इन दरारों के पास से गुजरते थे तो ऊँचाइयों से पानी के पत्थरों पर गिरने की आवाज आती थी।

'ओफ, यह मनहूस पहाड़,' लेव्सकी ने कहा, 'मैं तो इनसे तंग आ गया हूँ।'

उस स्थान पर जहाँ ब्लैक रिवर येलो रिवर में मिलती है और ब्लैक रिवर का स्याह पानी पीली जलधार को मैला करता हुआ टकराता है, वहाँ तातार कर्बेले की "दुहन"* थी जिसकी छत पर रूस का झंडा लगा था और सफेद 'चाक' से एक तख्ती पर लिखा था—'सुखदायक दुहन।' पास में एक छोटा-सा बाग था—पत्थरों की चहारदीवारी से घिरा हुआ—और उसमें मेज-कुर्सियाँ निकली पड़ी थीं और कटीले पौदों की एक गन्दी झाड़ी से घिरा हुआ एक अकेला सनोबर का वृक्ष लगा था—साँवला और खूबसूरत।

---

* दुहन : एक छोटी सी सराय या रेस्तराँ।

कर्बेले एक नाटा और फुर्तीला तातार था। वह नीली कमीज और सफेद 'एप्रन'* पहने सड़क पर अपने पेट पर हाथ रखे खड़ा था और जब गाड़ियाँ निकट आईं और जब उसने मुस्कराते हुए झुककर अभिवादन किया तो उसके सफेद दाँतों की पंक्तियाँ चमक उठीं।

'गुड-ईवनिंग, कर्बेले,' सैमाएलैन्को ने पुकारकर कहा, 'देखो, हम लोग यहाँ से थोड़ा और आगे जायँगे—तुम कुछ कुर्सियाँ और 'सैमोवार' ले आओ—जल्दी!'

कर्बेले ने अपना मुड़ा हुआ सिर हिलाते हुए कुछ कहा जिसे केवल अन्तिम गाड़ी वाले लोग ही सुन पाये, 'हमारे पास ट्राउट मछली भी है, योर एक्सेलैन्सी!'

'तो वह भी लेते आना,' वान कोरेन ने उत्तर दे दिया।

दुहन से लगभग पाँच सौ कदम आगे गाड़ियाँ रोक ली गईं। सैमाएलैन्को ने घास का एक छोटा-सा ऐसा मैदान ढूँढ़ निकाला जिसके चारों तरफ बैठने की सुविधा के लिए बड़े-बड़े पत्थर पड़े थे—पास में ही किसी तूफान में जड़ से उखड़ा हुआ एक वृक्ष पड़ा था और उसकी जड़ पर काई और पीले नोकीले फूल निकल आए थे। पास ही नदी पर एक नाजुक, छोटा-सा, लकड़ी का पुल बना था और दूसरे किनारे पर मक्का सुखाने के लिए एक छोटा-सा खलिहान था जो चार नीची चट्टानों पर बना हुआ था और ऐसा लग रहा जैसे किसी बच्चों की कहानी वाली छोटी-सी झोपड़ी हो—एक तरफ खलिहान की किवाड़ से जमीन तक एक सीढ़ी झुकी हुई लगी थी।

---

*एप्रन : एक प्रकार का कपड़ों पर पहनने वाला।

*सैमोवार : चाय पकाने का धातु का बर्त्तन जिसमें भट्टी भी लगी होती है।

यहाँ पहुँचकर पहला भाव इन लोगों के मन में यह आया कि यहाँ से निकलकर कभी नहीं जा सकेंगे। चारो तरफ—जिधर भी दृष्टि जाती थी—ऊँचे-ऊँचे पहाड़ सिर उठाए हुए खड़े थे, उनसे बहुत ऊपर तक। और शाम की परछाइयाँ तेजी से बढ़ती चली आ रही थीं—दुहन की और उस साँवले, एकाकी सनोबर की परछाइयाँ—जो ब्लैक रिवर की कम चौड़ी, घूमी हुई तंग घाटियों को और भी कम तंग और चौड़ा बना रही थीं और पास के भयानक पर्वतों को ऊँचा—और ऊँचा। नदी की कलकल और टिड्डों और झींगुरों का निरन्तर शोर उन्हें सुनाई पड़ रहा था।

'ओह, कितना आकर्षक दृश्य है!' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने आनन्द और उल्लास की गहरी साँसें भरते हुए कहा, 'देखो बच्चो, कितना सुहावना दृश्य है—कितनी शांति!'

'हाँ—वास्तव में बहुत ही सुहावना है यह दृश्य,' लेव्सकी ने कहा। उसे यह दृश्य पसन्द आया था और आकाश की ओर 'दुहन' की चिमनी से नीले धुएँ को देखकर न जाने क्यों उसका मन उदास हो गया था। 'हाँ, बहुत सुन्दर है, वास्तव में।'

'ईवान आन्द्रीच, इस दृश्य का वर्णन करो,' मैरिया कान्सटैन्टि-नोवना ने प्रार्थना की—उसकी आँखें हर्ष से नम थीं।

'क्यों?' लेव्सकी ने पूछा, 'ऐसे दृश्य वर्णनों के ऊपर हैं। इसका जो सुखद और सुन्दर प्रभाव लोगों पर पड़ता है उसका वर्णन लेखकों ने बहुत ही भद्दे ढंग से करने की कोशिश की है।'

'सच?' वान कोरेन ने सख्ती से प्रश्न किया। वह जल के पास के सबसे बड़े पत्थर पर उचककर बैठने की कोशिश कर रहा था। 'सच?' उसने फिर उसी आवाज में लेव्सकी की ओर घूरते हुए पूछा, 'शेक्सपियर के 'रोमियो और जूलियट' में और पुश्किन की 'यूक्रेन में एक रात' में क्या है? प्रकृति को आकर इनके सामने सिर झुका देना चाहिए।'

'हाँ, शायद,' जो काहिली के कारण इस बात पर सोचना या वान

कोरेन ... विरोध नहीं करना चाहता था। लेकिन फिर कुछ रुककर उसने कहा, 'और आखिर 'रोमियो और जूलियट' में है ही क्या ? कविता के सौन्दर्य और प्रेम की पावनता के गुलाबों से वह उसकी कमजोरियों को ढक देना चाहते हैं। रोमियो भी हम लोगों जैसा ही एक जानवर है।'

'जो भी बात कोई उठाये तुम उसे वहीं लाकर खत्म कर देते हो।' कैट्या की ओर देखकर वान कोरेन अपनी बात साफ नहीं कर सका।

'कहाँ खत्म कर देता हूँ ?' लेव्सकी ने प्रश्न किया।

'मान लो तुमसे कोई कहे कि अंगूरों का यह गुच्छा कितना खूबसूरत है तो तुम उत्तर दोगे—हाँ, लेकिन कितना बदसूरत हो जाता है यह, जब इसे चबाकर पचा लिया जाता है। इसका क्या उत्तर है तुम्हारे पास ? यह कोई नई और खास बात नहीं है...और वह आदत भी बहुत अजीब है। वान कोरेन ने कहा।

लेव्सकी जानता था कि वान कोरेन उसे पसन्द नहीं करता और इसलिये उसकी उपस्थिति में उसे भय लगता था—ऐसा लगता था मानों हर आदमी शंकित हो और उसकी पीठ के पीछे कोई खड़ा हो। उसने इस बात का कोई उत्तर नही दिया और वहाँ से चल दिया, इस बात पर दुख करते हुए कि वह यहाँ आया ही क्यों ?

'साहबों, आग जलाने की लकड़ी ढूँढ़ने के लिये चलिये,' मजाक में सैमाएलैन्को ने फौजी आदेश दिया।

किरीलिन, एचमियोनाव और निकोदिम एलिक्सैंद्रीच के अलावा सब लोग भिन्न-भिन्न दिशाओं में लकड़ी ढूँढ़ने के लिये चले गए। कर्बेले कुर्सियाँ ले आया था। उसने जमीन पर एक कम्बल बिछा दिया और उस पर शराब की कुछ बोतलें रख दीं।

पुलिस कप्तान किरीलिन लम्बा और खूबसूरत आदमी था, जो हर मौसम में अपनी वर्दी के ऊपर एक बड़ा कोट पहने रहता था। अपने

गर्वीले स्वभाव, अच्छी सूरत-शक्ल, लम्बे कद, रोबदार चाल और भारी आवाज के कारण, किरीलिन किसी प्रदेश की पुलिस के सर्वोच्च और युवक अधिकारी जैसा लगता था। इस समय उसके चेहरे पर नींद का भारीपन था और उदासी थी—मानों किसी ने हाल में उसे उसकी मर्जी के खिलाफ उठा दिया हो।

'क्यों रे बदमाश, यह तू क्या ले आया?' किरीलिन ने कर्बेले को जोर से डाटते हुए पूछा, 'मैंने हुक्म दिया था कि 'क्वारेल' की बोतलें लाना और तू यह कौन-सी वाहियात शराब ले आया? क्यों?'

'हम लोगों के पास अपनी भी तो बहुत सी शराब है, येगोर एलेक्सीच,' नम्रता और शिष्टता से निकोदिम एलिक्सैंद्रिच ने कहा।

'हुआ करे, लेकिन मैं अपनी शराब भी चाहता हूँ। मैं भी तो इस 'पिकनिक' का सदस्य हूँ और मुझे भी अपना हिस्सा देने का अधिकार है मेरे ख्याल से। जा रे बदमाश, जाकर 'क्वारेल' की दस बोतलें ला,' किरीलिन ने बिगड़कर आज्ञा दी।

'लेकिन फिर इतनी क्यों?' निकोदिम एलिक्सैंद्रिच ने आश्चर्य में कहा, क्योंकि उसे मालूम था कि किरीलिन के पास पैसा नहीं है।

'जाओ, जाकर बीस-तीस बोतलें लाओ,' किरीलिन फिर दहाड़ा।

एचमियोनाव ने निकोदिम एलिक्सैंद्रिच के कान में कहा, 'चिन्ता मत करो—उसे मँगाने दो। पैसे मैं दूँगा।'

नादियेजदा फ्योद्रोवना आज बहुत प्रसन्न-चित्त और चंचल थी—वह दौड़ना चाहती थी, कूदना चाहती थी, हँसना, चीखना, छेड़ना, प्यार करना चाहती थी। अपने सस्ते, सूती गाउन में—जिस पर नीले फूलों की छपाई थी—लाल जूतों में और चटाई के हैट में उसे लग रहा था कि वह एक नाजुक, सीधी-सादी, मोहक, छोटी-सी परी है—तितली है। वह दौड़कर उस नाजुक लकड़ी के पुल पर गई और झुककर कुछ देर पानी में झाँकती रही ताकि उसे चक्कर आ जाए, फिर वह चीखती, हँसती हुई दूसरे पार खलिहान की तरफ चली गई यह सोचते हुए कि दूसरी ओर

खड़ा हुआ हर व्यक्ति—कर्बेले भी उससे मन ही मन आकर्षित हो रहा होगा। जब तेजी से ढलती हुई साँझ के अंधकार में पेड़ पिघलकर पहाड़ों में समाने लगे और घोड़े अपनी गाड़ियों में और दूर 'दुहन' की खिड़कियों में रोशनी झिलमिलाने लगी तो वह झाड़ियों और चट्टानों के बीच की एक पगडंडी से पहाड़ पर चढ़ गई और एक पत्थर पर बैठ गई। नीचे, कुछ दूर पर आग जल रही थी। आग के पास, आस्तीन चढ़ाए हुए पादरी इधर-उधर टहल रहा था और उसका लम्बा, काला साया आग के चारों ओर गोलाइयाँ बना रहा था। उसने आग में कुछ लकड़ियाँ डालीं और एक लकड़ी में चमचा बाँधकर आग पर चढ़े हुए बड़े डेकचे में चलाया। सैमाएलैन्को का चेहरा आग के कारण तमतमाकर ताँबे के रङ्ग का हो गया था और वह भी आग के पास घूम-घूमकर ऐसे शोर मचा रहा था मानों वह अपने ही घर के चौके में हो।

'अरे, नमक कहाँ है, भाई? सैमाएलैन्को कह रहा था, 'अवश्य तुम लोग भूल आए हो और तुम लोग सब नवाबों की तरह बैठो हो और मैं काम करते-करते मरा जा रहा हूँ।'

लेव्सकी और निकोदिम एलिक्सैंड्रिच गिरे हुए पेड़ के तने पर पास बैठे थे और गम्भीरता से आग को ताक रहे थे। मैरिया कान्सटैन्टिनोवना कैट्या और कोस्तया टोकरियों में से प्याले, तश्तरी आदि निकालकर बाहर रख रहे थे। वान कोरेन, नदी के किनारे पानी के पास खड़ा, हाथ मोड़े और पत्थर पर पैर रखे हुए कुछ सोच रहा था। सुर्ख रोशनी के बड़े-बड़े धब्बे जमीन पर पड़ती हुई आदमियों की परछाँइयों से खेल रहे थे और पहाड़ों पर, वृक्षों पर, पुल पर, खलिहान पर पड़कर काँप रहे थे—नाच रहे थे। दूसरी ओर ऊँचा, खोखला किनारा भी लपटों की सुर्ख रोशनी के तांडव में चमक रहा था और उसका साया नदी में झिलमिला रहा था और नदी का गँदला, अल्हड़ पानी उस साये को बार-बार कँप-कँपा देता था—तोड़ देता था।

कर्बेले नदी के पानी में, किनारे पर बैठा हुआ मछलियाँ धोकर साफ

कर रहा था। पादरी उनको लेने किनारे की तरफ बढ़ा लेकिन बीच में ही रुककर इधर-उधर देखने लगा।

हे भगवान, कितना सुन्दर लग रहा है यह सब, वह सोच रहा था, आदमी, चट्टानें, आग, साँझ का झुटपुटा, एक विशाल भयानक पेड़—और कुछ नहीं—लेकिन सब कुछ कितना खूबसूरत !

दूसरे किनारे पर, कुछ अजनबी व्यक्ति खलिहान के पास दिखाई पड़ने लगे थे। छोटी-सी आग की काँपती हुई रोशनी और उड़ते हुए धुएँ के कारण उस तरफ की चीजें साफ नहीं दिखाई पड़ रही थीं। लेकिन कभी-कभी किसी के हैट की, किसी की दाढ़ी की, किसी की नीली कमीज की, सिर से पाँव तक चिथड़े पहने हुए लेकिन छुरा बाँधे हुए किसी आकार की या किसी तन्दुरुस्त युवक चेहरे की झलक मिल जाती थी जिसकी मोटी काली भवें ऐसी मालूम पड़ती थीं कि कोयले से बनाई हुई हों। उनमें से पाँच व्यक्ति गोल बाँधे जमीन पर बैठे थे और बाकी पाँच खलिहान में चले गए थे। एक दरवाजे के पास इस ओर की आग की तरफ पीठ किए खड़ा था। पीठ के पीछे हाथ किए हुए वह कोई बात कह रहा था जो कि बहुत दिलचस्प या महत्वपूर्ण होगी। क्योंकि जब सैमाएलैन्को ने आग में कुछ और लकड़ियाँ डालीं और आग भड़क उठी और उसकी उड़ती हुई चिनगारियों से दूसरे पार के खलिहान पर और तेज रोशनी पड़ी तो दिखाई दिया कि दो शान्त आकृतियाँ जिन पर किसी बात पर ध्यान देने की गम्भीरता स्पष्ट थी—किवाड़ के बाहर देख रही हैं और जो पाँच व्यक्ति जमीन पर बैठे थे वह भी मुड़ गए और बोलने वाले की बातें ध्यान से सुनने लगे। थोड़ी देर बाद, जमीन पर बैठे हुए लोग धीमी-मीठी आवाज में गाने लगे एक ऐसा गाना जो गिरजे का धार्मिक गान जैसा लग रहा था। इस गाने को सुनकर पादरी सोचने लगा कि दस साल बाद वह क्या होगा—शोध यात्रा से लौटा हुआ एक युवक पुरोहित, एक भिक्षु, एक नामी लेखक, उसके पिछले काम भी अच्छे होंगे और वह उन्नति करेगा, करता जायगा 'बिशप' हो जायगा और किसी बड़े

'कैथीड्रल' में धर्मोपदेश देगा। और सोने का धार्मिक किरीट लगाकर वह लोगों के बीच में आकर रहेगा : 'हे भगवान, स्वर्ग से झाँककर इस उद्यान को देखो जिसे तुमने अपने हाथों से लगाया है।' और गाने वाले बच्चे अपनी मासूम, मीठी आवाजों में गायेंगे, 'हे भगवान-हे भगवान...'

'अरे डीकन, मछलियाँ कहाँ हैं?' पादरी के कानों में सैमाएलैन्को की आवाज पड़ी।

और जब वह आग की तरफ लौटा तो पादरी कल्पना कर रहा था कि गिरजे का जुलूस जुलाई के किसी गर्म दिन में किसी धूल भरी सड़क पर जा रहा है—सामने किसान बड़े-बड़े झंडे उठाए चल रहे हैं, पीछे औरतें और बच्चे 'आइकन' * लिए चल रहे हैं, उसके पीछे गीत गाने वाले बच्चों की टोली, इन सब के बाद वह और उसके पीछे पादरी और अन्त में सबसे पीछे धूल उड़ाते हुए, किसानों, औरतों, बच्चों का झुण्ड—उस झुण्ड में उसकी और दूसरे पादरियों की पत्नियाँ भी हैं। बच्चे गीत गा रहे हैं, छोटे बच्चे माताओं की गोद में रो रहे हैं, चिड़ियाँ बोल रही हैं...फिर जुलूस रुक जाता है और भीड़ पर गिरजे से लाया हुआ पवित्र जल डाला जाता है...फिर वह सब चल पड़ते हैं और फिर घुटने टेककर वर्षा के लिए प्रार्थना करते हैं...फिर भोजन पर बातचीत......

यह दूसरा स्वप्न भी—दूसरा चित्र भी बुरा नहीं है पादरी ने सोचा।

७

किरीलिन और एचमियोनाव छोटी पगडंडी से दूसरे पार के पहाड़ पर चढ़ने लगे। एचमियोनाव पीछे रह गया और किरीलिन सीधा चढ़ता हुआ नादियेजदा फ्योद्रोवना के पास पहुँच गया।

---

* आइकन : देवता की मूर्ति

'गुड-ईवनिंग,' किरीलिन ने कहा ।

'गुड-ईवनिंग,'

'कहो ?' आकाश की तरफ देखकर सोचते हुए किरीलिन ने कहा ।

'क्या कहूँ ?' नादियेजदा ने उत्तर दिया कुछ रुककर क्योंकि उसने देखा कि दूर खड़ा हुआ एचमियोनाव उन दोनों की ओर गौर से देख रहा है ।

'हूँ—तो ऐसा लगता है कि हम लोगों का प्यार फूलने के पहले ही मुरझा गया है,' किरीलिन ने धीरे-धीरे कहा, 'तुम्हारे इस व्यवहार का मैं क्या मतलब निकालूँ ? क्या मैं इसे यह समझूँ कि यह तुम्हारी मात्र तरसाने और लुभाने की भावना है या यह कि तुम मुझे इतना मूर्ख समझती हो कि जैसा व्यवहार चाहो मेरे साथ करो ?'

'वह हम लोगों की एक भूल थी; अब मुझे छोड़ दो,' उस खूबसूरत शाम को किरीलिन की ओर भय से देखते हुए नादियेजदा फ्योद्रोवना ने तेजी से कहा । वह स्वयं अपने आपसे यह प्रश्न कर रही थी हैरान होकर कि क्या वास्तव में कोई ऐसा समय रहा होगा जब वह उससे आकर्षित हुई होगी और उसके इतने करीब रही होगी ।

'अच्छा, तो यह बात है,' किरीलिन ने कहा । फिर कुछ देर खामोशी से सोचने के बाद उसने कहा, 'खैर, मैं तब तक प्रतीक्षा करूँगा जब तक तुम्हारा दिमाग ठीक न हो जाय लेकिन यह मैं तुम्हें समझा देना चाहता हूँ कि मैं एक शरीफ आदमी हूँ और मैं इसकी आज्ञा किसी को नहीं दे सकता कि वह इस बात में कोई शक करे । अच्छा फिर मिलेंगे ।' और झाड़ियों के बीच से अपने लिए मार्ग बनाते हुए किरीलिन लौट गया ।

कुछ देर बाद एचमियानोव कुछ हिचकता हुआ उसके पास आया ।

'कितनी अच्छी शाम है !' उसने कहा ।

एचमियानोव देखने में अच्छा लगता था, कपड़े अच्छे पहनता था और उसका व्यवहार किसी भी सुसंस्कृत युवक से अच्छा था और बनावटी नहीं था लेकिन नादियेजदा फ्योद्रोवना उसे इसलिए पसन्द नहीं करती थी

क्योंकि उसके पिता की वह तीन सौ रूबुल की कर्जदार थी। उसको यह बात भी बुरी लगी थी कि एक दूकानदार को अपने साथ पिकनिक के लिए आमंत्रित किया गया था और फिर उसे उसका उस समय आना बहुत बुरा लगा जब उसे लग रहा था कि उसका हृदय बहुत साफ है।

'हम लोगों का पिकनिक बिल्कुल सफल रहा,' एचमियानोव ने कहा, कुछ रुककर।

'हाँ,' नादियेजदा ने कहा लेकिन फिर उसे एकाएक वह कर्ज याद आ गया और उसने बहुत लापरवाही से कहा, 'और देखो, अपनी दूकान पर कह देना ईवान आन्द्रीच एक-दो दिन में आकर वह तीन सौ रूबुल दे देंगे...मुझे ठीक से रकम याद भी नहीं है।'

'अगर तुम रोज उस कर्ज का जिक्र न करो तो मैं तुम्हें तीन सौ रूबुल और दे दूँ। ऐसी शुष्क बात करके तुम सब मजा क्यों खराब कर देती हो,' एचमियानोव ने कहा।

नादियेजदा फ्योद्रोवना हँस दी। उसे यह मजेदार ख्याल आया कि अगर वह राजी होकर अपने नैतिक स्तर से गिर जाय तो एक मिनट में अपने उस कर्ज से मुक्ति पा ले। मान लो वह इस युवक को ही अपने आकर्षण में फाँस ले। यह बात कितनी अजीब और बेकार की होगी? और फिर एकदम से उसके मन में इच्छा उठी कि वह उसे अपने से प्यार करने दे, उसे खूब लूटे, बाद को छोड़ दे और फिर देखे कि क्या होता है?

'मुझे एक राय देने की आज्ञा दो,' एचमियानोव ने झिझकते हुये कहा, 'मैं चाहता हूँ कि तुम किरीलिन की ओर से होशियार रहो। वह तुम्हारे बारे में हर जगह खराब बातें कहा करता है।'

'कोई मूर्ख मेरे बारे में क्या कहता फिरता है, इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है,' नादियेजदा ने ठंडे-कठोर स्वर में उत्तर दिया और युवक एचमियानोव से प्रेम-क्रीड़ा करने का विचार जैसे एकदम हवा हो गया।

'चलो नीचे उतर चलें; वे लोग हमें बुला रहे हैं,' नादियेजदा ने कहा।

अब तक मछली का शोरबा तैयार हो चुका था। वह लोग तश्तरी भर-भरकर खा रहे थे उस गम्भीरता से जैसे केवल पिकनिक पर ही लोग खा सकते हैं। हर व्यक्ति शोरबे की तारीफ कर रहा था और यह सोच रहा था कि घर पर भी इतनी अच्छी चीज नहीं पक पाती है। और जैसा ऐसे पिकनिकों में होता है, खाने के झाड़नों का, पार्सलों का, और रद्दी कागजों का इतना गड़बड़झाला था कि किसी को यह पता न था कि कौन किस गिलास में पी रहा है और उसका रोटी का टुकड़ा कहाँ और कौन सा है। लोग कालीन पर और अपने घुटनों पर खूब शराब और नमक गिरा रहे थे। और जब अन्धेरा और घना भी हो गया और आग धीमी पड़ने लगी तो किसी में इतनी चुस्ती या फुर्ती नहीं थी कि उठकर आग में लकड़ियाँ डालता। सब शराब पी रहे थे—यहाँ तक कि कैट्या और कोस्तया को भी आधा-आधा गिलास दे दी गई थी। नादियेजदा गिलास पर गिलास दिए जा रही थी—कुछ देर में उसे नशा हो गया और वह किरीलिन के बारे में सब भूल गई।

लेव्सकी भी शराब के प्रभाव में चमक उठा, 'बहुत शानदार पिक-निक रहा और बहुत ही खूबसूरत शाम थी। लेकिन मुझे तो खूब जोर का जाड़ा इससे ज्यादा अच्छा लगता है।'

'हाँ, अपनी-अपनी पसन्द की बात है,' वान कोरेन ने कहा।

लेव्सकी को एकाएक कुछ उलझन-सी महसूस होने लगी। आग की गर्मी उसकी पीठ को तपा रही थी और वान कोरेन की घृणा, उसके चेहरे और सीने को—एक पढ़े-लिखे, समझदार आदमी की घृणा, जिसका शायद कोई ठीक कारण भी हो। इस घृणा से लेव्सकी को डर भी लगा और इसे न सह पाकर उसने उसे मनाने के स्वर में उसकी सी बात कही: 'मुझे भी प्रकृति से बहुत प्रेम है लेकिन भाग्यवश मेरा, तुम्हारी तरह, प्रकृति-विज्ञान का अध्ययन नहीं है। मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ।'

'लेकिन मैं तुमसे ईर्ष्या नहीं करती, और मुझे इस बात का कोई दुख भी नहीं है,' नादियेजदा ने कहा, 'मेरी समझ में नहीं आता जानवरों,

चिड़ियों आदि में किसी की दिलचस्पी कैसे हो सकती है जब कि हमारी मानव जाति ही इतने कष्ट भोग रही है।'

लेव्सकी भी नादियेजदा के मत से सहमत था। वह भी प्रकृति-विज्ञान से बिलकुल अनभिज्ञ था और इसलिए उसकी समझ में नहीं आता था कि इस प्रकार के वैज्ञानिक क्यों रोब की बातें करते हैं और उसकी समझ में यह भी नहीं आता था कि वे लोग कैसे और क्यों मानव के विकास-विज्ञान के सिद्धान्त बनाते हैं लेकिन नादियेजदा के शब्दों में इस समय उसे झूठ मालूम पड़ा और इसलिए उसकी बात काटते हुए लेव्सकी बोला, 'महत्त्व चिड़ियों या जानवरों का नहीं है—उन सिद्धान्तों का है जो इसके कारण बनाये जाते हैं।'

८

लगभग ग्यारह बजे थे जब इन लोगों ने वापसी के लिए गाड़ियों में बैठना शुरू किया। सब लोग बैठ गए थे—केवल नादियेजदा फ्योद्रोवना और एचमियानोव नदारद थे और वह दोनों नदी के दूसरे किनारे पर एक दूसरे के पीछे भाग-भाग कर खेल रहे थे।

'जल्दी करो,' सैमाएलैन्को ने चिल्ला कर रहा।

'औरतों को इतनी शराब पीने को नहीं देनी चाहिए,' वान कोरेन ने आहिस्ता से कहा।

पिकनिक से, वान कोरेन की घृणा से और अपने विचारों के भार से थका हुआ लेव्सकी नादियेजदा को बुलाने के लिए स्वयं गया। नादियेजदा उस समय बहुत खुश और मस्त थी और लेव्सकी के निकट आते ही उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिए और प्यार में उसके सीने पर अपना सिर झुका दिया। लेव्सकी दो कदम पीछे हटा और रूखे स्वर में बोला, 'यह तुम क्या कर रही हो?' लेव्सकी को स्वयं अपनी कही हुई यह बात बहुत कड़वी और भद्दी लगी और उसे एकाएक नादियेजदा पर बहुत तरस

आ गया। लेव्सकी के नाराज और थके हुए चेहरे पर नादियेजदा को घृणा, दया और स्वयं अपने-आप से चिढ़ दिखाई दी और भय और आशंका से उसका दिल बैठ गया। उसे एकदम लगा कि वह सीमा से आगे बढ़ गई है, उसका व्यवहार उच्छृश्रृङ्खल हो गया है। उसे लगा कि वह असभ्य और अशिष्ट है, नशे में है और इस दुख से घबड़ाकर वह सबसे पास वाली खाली गाड़ी में एचमियानोव के साथ बैठ गई। लेव्सकी और किरी-लिन दूसरी गाड़ी में साथ बैठ गये, वान कोरेन और सैमाएलैन्को एक साथ और पादरी •बाकी लोगों के साथ बैठ गया और सब लोग वापस लौट पड़े।

'तुमने देखा, कैसे हैं ये जापानी बन्दर!' अपने आप को कपड़े से ढँक कर और आँखें बन्द करके वान कोरेन बोला, 'तुमने सुन लिया कि कीड़े-मकोड़ों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं है क्योंकि मानव कष्ट भोग रहा है। ये जापानी बन्दर हम वैज्ञानिकों को यही समझते हैं। लेकिन ये एक चालाक और गुलाम जाति के लोग हैं जो मार-काट से ही डरते हैं और उसी के सामने सिर झुकाते हैं। लेकिन किसी ऐसी आजाद फिजा में इन्हें छोड़ दो जहाँ इनका गला पकड़ने वाला कोई न हो, तब इनका रंग देखो। चित्रशालाओं में, संग्रहालयों में, थियेटरों में ये कितने जोर में होते हैं और विज्ञान की बात भी ये किस रोब से करते हैं—उसे गाली देते हैं, आलोचना करते•हैं, क्योंकि यह तो गुलामों की विशेषता ही होती है—यह बात समझ लो—ये लोग जेब-कटों से भी बुरे होते हैं और समाज में इन्हीं लोगों का—इन गुलामों का—तीन-चौथाई भाग है। यह कभी नहीं है कि कोई गुलाम आपके किसी अच्छे काम के लिए आपको बधाई या धन्यवाद दे।'

'पता नहीं तुम चाहते क्या हो,' सैमाएलैन्को ने जम्हाई लेते हुए कहा, 'वह बेचारी साफ दिल से कोई बात कह गई और तुम उसके यह मतलब निकाल रहे हो। तुम लेव्सकी से न जाने किस कारण नाराज हो और इसीलिए नादियेजदा फ्योद्रोवना से भी। वह बहुत अच्छी औरत है।'

'क्या बकवास है ? एक बहुत साधारण औरत—भद्दी और पतित। सुनो—एलिक्जैन्डर डैविडिच, जब कोई साधारण गाँव की औरत तुम्हारे पास आती है जो अपने पति के साथ न रहती हो और व्यर्थ में मसखरा-पन किया करती हो तो तुम उसे डाटकर कह देते हो कि जाकर काम करे। लेकिन इसके साथ तुम साफ और सत्य बोलने में क्यों डरते हो ? क्या केवल इसलिये कि नादियेजदा फ्योद्रोवना किसी मल्लाह की नहीं, एक पढ़े-लिखे अधिकारी की रखेल है ?'

'तो मैं क्या करूँ ?' सैमाएलैन्को ने नाराज होकर कहा, 'मारूँ-पीटूँ ?'

'नहीं—लेकिन फिर इस पतन और पाप की प्रशंसा भी मत करो। हम इस पाप की बुराई केवल पीठ के पीछे करते हैं। मैं एक वैज्ञानिक हूँ, तुम एक डाक्टर हो, समाज हममें विश्वास करता है। हमें चाहिए कि समाज को यह बताएँ कि उसे और उसकी अगली पीढ़ी को नादियेजदा आइवनोवना जैसी औरतों से कितना खतरा है ?'

'आइवनोवना नहीं—फ्योद्रोवना !' सैमाएलैन्को ने गलती ठीक करते हुए कहा, 'लेकिन समाज क्या करे ?'

'समाज ? यह तो वही जाने ! मेरे ख्याल से सबसे प्रभावपूर्ण रास्ता है जबरदस्ती का ! उसे अपने पति के पास लौटने के लिए मजबूर कर देना चाहिये और यदि पति उसे स्वीकार न करे तो या तो सजा कर देना चाहिये, या किसी ऐसे आश्रम में भेज देना चाहिये जहाँ उसका सुधार हो जाय।'

'ओफ !' सैमाएलैन्को ने थकान की गहरी साँस भरी। फिर कुछ रुक कर उसने आहिस्ता से पूछा, 'तुम उस दिन कह रहे थे कि लेव्सकी जैसे लोगों को खत्म कर देना चाहिये...तो क्या यदि यह कार्य तुमसे करने को कहा जाय तो...तो तुम इसे कर सकोगे ?'

'हाँ—अवश्य।'

९

लेव्सकी और नादियेजदा फिर अपने उस घर में लौट आये जिसमें अन्धकार था, घुटन थी, मनहूसियत थी। दोनों खामोश थे। लेव्सकी ने कमरे में आकर मोमबत्ती जलाई और नादियेजदा बिना अपना हैट और कपड़े उतारे ही एक कुर्सी पर बैठ गई और अपनी उदास आँखें उठाकर भयपूर्ण दृष्टि से लेव्सकी की ओर देखा।

वह जानता था और सोच रहा था कि नादियेजदा उससे जवाब की आशा कर रही होगी। लेकिन जवाब देना कितनी थका देने वाली और बेकार बात होगी। फिर भी उसका दिल भारी था; क्योंकि 'पिकनिक' के अवसर पर वह नियंत्रण खो बैठा था और उसने नादियेजदा के प्रति अशिष्टता की थी। उसने एकाएक अपनी जेबें उस पत्र के लिए टटोलीं, जो वह कई दिनों से नादियेजदा को पढ़कर सुनाना चाहता था और उसने सोचा कि वह इसी समय ऐसा क्यों न कर दे। लेकिन उसे शंका थी कि कहीं ऐसा करने से नादियेजदा कुछ और न समझने लगे।

अब अपने सम्बन्धों को सुलझाने—समझ लेने का समय आ गया है लेव्सकी ने सोचा, इसलिए अब उसे दे ही दूँ—चाहे जो भी हो।

जेब से पत्र निकालकर उसने नादियेजदा को दे दिया—'इसे पढ़ लो, यह तुमसे सम्बन्ध रखता है।'

और इतना कहकर वह अपने कमरे में चला गया और बिना तकिया लगाये ही एक सोफा पर लेट गया। नादियेजदा ने उस पत्र को पढ़ा... ऐसा लगा जैसे सिर पर छत टूट पड़ेगी और दीवारें तङ्ग होकर उसका दम घोट देंगी—लगा जैसे बहुत गहरा और भयानक अन्धकार एकाएक कमरे में भर गया है।

'भगवान उन्हें शान्ति दो...शान्ति दो।'

और इतना कहकर वह रोने लगी। यह सोचकर कि लेव्सकी उसकी कुर्सी के पीछे खड़ा है, वह बच्चा की तरह सिसक पड़ी और बोली, 'पहले क्यों नहीं बताया कि उनकी मृत्यु हो गई है? मैं पिकनिक पर न जाती...वहाँ मुझे इस तरह हँसना नहीं चाहिए था...लोगों ने वहाँ मुझसे बहुत खराब बातें कही थीं। कितना बड़ा पाप किया मैंने—कितना बड़ा पाप! वैन्या, मुझे बचाओ...मुझे बचाओ...मैंने कितना बड़ा पाप किया है—मैं डूब गई हूँ...'

लेव्सकी ने उसकी सिसकियाँ सुनीं। उसने भारी घुटन महसूस की—उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। अपनी उलझनों के कारण वह उठ पड़ा और कमरे के बीचोबीच में खड़ा हो गया और अँधेरे में रास्ता टटोलता हुआ मेज के पास पड़ी हुई आराम कुर्सी पर जाकर बैठ गया।

यह एक जेल है...... उसने सोचा, मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये...मुझसे नहीं सहा जाता यह अब!

बाहर जाकर ताश खेलने का समय खत्म हो गया था और नगर में कोई रेस्तराँ भी नहीं था। उसने लेटकर अपने कान बन्द कर लिये ताकि वह नादियेजदा की सिसकियों की आवाज न सुन सके और फिर उसे एकाएक यह ख्याल आया कि वह सैमाएलैन्कों के पास तो जा सकता है। इसलिए कि नादियेजदा के पास होकर उसे न गुजरना पड़े, वह अपने कमरे की खिड़की में से ही निकलकर बाहर बाग मे आ गया और बाग की चहारदीवारी फाँदकर सड़क पर आ गया।

सड़क पर अन्धकार था। कोई जहाज—और उसकी जलती हुई बत्तियों से मालूम पड़ता था कि कोई बड़ा यात्रियों का जहाज—अभी ही शायद बन्दरगाह में आया था...लंगर पड़ने की आवाज उसे सुनाई पड़ रही थी। किनारे के जहाज की दिशा में एक लाल रोशनी तेजी से जा रही थी। अवश्य 'कस्टम' की नाव उसके पास जा रही होगी।

यात्री शायद अपने-अपने 'केबिनों' में सो रहे होंगे... लेव्सकी ने सोचा और दूसरे लोगों की मानसिक शान्ति से उसे ईर्ष्या हुई।

सैमाएलैन्को के मकान की खिड़कियाँ खुली हुई थीं। लेव्सकी ने उनमें से एक से झाँककर देखा और फिर किसी दूसरी से—कमरे अन्धेरे और खामोश थे।

'एलिक्जैन्डर डैविडिच, तुम सो रहे हो,' लेव्सकी ने पुकारा—'एलिक्जैन्डर डैविडिच !'

किसी के खाँसने और नाराज होकर चिल्लाने की आवाज आई, 'कौन कमबख्त है ?'

'मैं हूँ, एलिक्जैन्डर डैविडिच, माफ करना।'

कुछ देर में दरवाजा खुला, लैम्प की ढँकी हुई मद्धिम रोशनी की चमक दिखाई दी और उसके पीछे सैमाएलैन्को का विशाल आकार—सफेद कपड़े और टोपी पहने हुए।

'क्यों, कैसे ?' अपनी गंजी खोपड़ी खुजलाते और नींद के बाद जोर से साँस लेते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'ठहरो, मै अभी दरवाजा खोलता हूँ।'

'रहने दो—मैं खिड़की से अन्दर आ जाऊँगा।' और यह कह लेव्सकी खिड़की से कूदकर अन्दर कमरे में आ गया और सैमाएलैन्को के पास आकर उसके हाथ अपने हाथों में थाम लिए।

'एलिक्जैन्डर डैविडिच,' काँपती हुई आवाज में लेव्सकी बोला, 'मुझे

बचा लो, मैं तुम्हारी प्रार्थना करता हूँ—मुझे बचा लो। अपनी परिस्थितियों से मुझे बहुत पीड़ा मिल रही है। यदि यही हाल दो दिन और रहा तो मैं अपना गला घोट लूँगा।'

'ठहरो......क्या कह रहे हो तुम ?'

'एक मोमबत्ती जला लो।'

'ओह...हाँ...' आहें भरते हुए सैमाएलैन्को ने मोमबत्ती जला ली, 'हे भगवान...हे भगवान...अरे, यह तो एक से भी ज्यादा बज गया !'

'हाँ, माफ करना लेकिन घर पर रहना भी मेरे लिए असम्भव था इस समय,' लेव्सकी ने कहा—रोशनी से और सैमाएलैन्को की उपस्थिति से उसे बहुत सुख मिला था, 'तुम मेरे सबसे अच्छे...नहीं...केवल एक मात्र मित्र हो—एलिक्जैन्डर डेविडिच...तुम्हीं केवल मेरी एक आशा हो। भगवान के लिए—चाहे तुम चाहो या न चाहो—मेरी सहायता करो। चाहे जो भी हो, मुझे यहाँ से चले ही जाना चाहिए। मुझे रुपया उधार दे दो।'

'हे भगवान...' सैमाएलैन्को ने आह भरते और अपना शरीर खुजलाते हुए कहा, मैं सोने ही जा रहा था कि पहले मुझे जहाज की सीटी सुनाई दी और फिर तुम...क्या तुम्हें ज्यादा बड़ी रकम चाहिए ?'

'कम से कम, तीन सौ रूबुल। मैं उसके लिए सौ रूबुल छोड़ दूँगा और सफर के लिए साथ में दो सौ रूबुल रख लूँगा....मुझे तुमको चार सौ रूबुल पहले के भी देने हैं लेकिन मैं तुम्हें सब लौटा दूँगा....सब !'

दाढ़ी पर हाथ रखकर, दोनों पैर फैलाए हुए, वह कुछ देर तक खड़ा सोचता रहा।

'हूँ....तीन सौ....हाँ ! लेकिन इतना तो नहीं है मेरे पास। बाकी मुझे किसी से उधार लेना पड़ेगा।'

'भगवान के लिए किसी से उधार ले लो,' लेव्सकी ने कहा।

सैमाएलैन्को की मुद्रा से उसे यह लग रहा था कि वह उसे उधार देना चाहता है और दे भी देगा, 'उधार ले लो—और मैं तुम्हें वापस कर दूँगा। पीटर्सबर्ग में तुम्हें पूरा रुपया लौटा दूँगा। इस बारे में तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो। और साशा—मैं तुम्हें एक बात बताऊँ.....आओ, कुछ शराब पी जाय।'

'हाँ...हाँ, क्यों नहीं ?'

और दोनों डाइनिंग-रूम में चले गए।

'और नादियेजदा फ्योद्रोवना का क्या होगा ?' शराब की तीन बोतलें और आड़ू की तश्तरी मेज पर रखते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'वह यहाँ रह तो नहीं जायगी ?'

'मैं इसका भी प्रबन्ध कर दूँगा,' एकदम बहुत खुश होकर लेव्सकी ने कहा, 'मैं उसे बाद को रुपया भेज दूँगा और वह भी वहाँ आ जायगी... तब हम अपने सम्बन्धों को ठीक तरह समझ कर सुलझा लेंगे।....यह एक जाम.....'

'जरा ठहरो,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'यह बोतल पहले पियो....यह मेरे अंगूरों के बाग की है। यह बोतल नवरिद्ज के बाग के अंगूरो से बनी है और यह, एहतूलॉव के बाग की है। तीनों चखकर मुझे अपने सही राय बताओ....मेरी वाली में अम्ल की तेजी कुछ ज्यादे है....क्यों ? तुमने चखा नहीं ?'

'हाँ। लेकिन तुमने मुझे बहुत शान्ति दी है, एलिक्जैन्डर डैविडिच ! धन्यवाद....मुझे बहुत अच्छा लग रहा है !'

'क्या कुछ तेजी है ?'

'भगवान जाने, मुझे तो कुछ पता नहीं लगता। लेकिन तुम बहुत ही अच्छे आदमी हो।'

लेव्सकी के जर्द, उत्तेजित और भले स्वभाव के चेहरे को देखकर

सैमाएलैन्को को याद आया कि वान कोरेन ने कहा था कि ऐसे आदमियो का नाश कर देना चाहिए और उसे लगा कि लेव्सकी केवल एक कमजोर निस्सहाय बच्चा है जिसे कोई भी चोट पहुँचा सकता है—जिसे कोई भी खत्म कर सकता है। और कुछ रुककर उसने कहा, 'और वहाँ पहुँचकर तुम अपनी माँ से सुलह कर लेना—यह अच्छी बात नहीं है।'

'हाँ—हाँ, अवश्य,' लेव्सकी ने उत्तर दिया।

कुछ देर वह दोनों चुप रहे। जब पहली बोतल खत्म हो गई तो सैमाएलैन्को ने कहा, 'तुम्हें वान कोरेन से भी सुलह कर लेनी चाहिये। तुम दोनों बहुत अच्छे और बहुत चतुर आदमी हो लेकिन भूखे शेरों की तरह एक दूसरे की तरफ देखते हो।'

'हाँ, वह बहुत अच्छा और बहुत चतुर आदमी है,' लेव्सकी ने सैमाएलैन्को की बात का समर्थन करते हुए कहा क्योंकि इस समय वह हर एक की तारीफ करने और उसे माफ करने के लिए तैयार था, 'वह निस्संदेह बहुत विलक्षण आदमी है लेकिन मेरा उससे पटना असम्भव है। उँहूँः! हम लोगों के स्वभाव एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत हैं। मैं निरीह, कमजोर और काहिल स्वभाव का आदमी हूँ। शायद समय आने पर—जल्दी ही—मैं मैत्री का हाथ उसकी तरफ बढ़ा दूँ लेकिन वह घृणा में मेरी ओर से मुँह मोड़ लेगा।' शराब का एक घूँट पीकर वह कमरे में इधर-उधर टहलने लगा और फिर कमरे के बीचोबीच में आकर खड़ा हो गया; 'मैं वान कोरेन को बहुत अच्छी तरह से समझता हूँ। उसका स्वभाव दृढ़, सशक्त और एकाधिकारी है। वह बार-बार अपनी वैज्ञानिक यात्रा की बात किया करता है—बहुत गम्भीरता से। वह लम्बे, फैले हुए खुले प्रदेश चाहता है, चाँदनी रातें चाहता है जहाँ खुले आकाश के नीचे बहुत खेमे गड़े हों जिनमें उसके थके हुए मजदूर, गाइड, कुली, डाक्टर, पुरोहित यात्रा की थकान से चूर पड़े हुए सो रहे हों और केवल वह—वह अकेला अपनी कुर्सी पर बैठा जाग रहा हो—इन थके हुए लोगों का, इस विस्तृत,

निर्जन प्रदेश का स्वामी ; और वह आगे बढ़ता जायगा—एक भयंकर आत्म-शक्ति से चालित और उसके साथी एक-एक करके मरते चले जायँगे—लेकिन वह रुकेगा नहीं और अन्त में स्वयं भी मर जायगा—लेकिन फिर भी वह उस मरु का स्वामी रहेगा क्योंकि गुजरते हुए कारवाँ दूर से उसकी कब्र पर लगा हुआ एकाकी क्रूश देख सकेंगे। मुझे अफसोस है कि वह सेना में क्यों नहीं है—वह बहुत महान योद्धा होता। अपने सैनिकों को नदी मे डूबने की आज्ञा देते हुए उसे तनिक भी हिचक न होती और मुर्दों पर चलता हुआ—रौंदता हुआ वह आगे बढ़ जाता। वास्तव मे इस विशेषता की आवश्यकता सबसे अधिक फौज में पड़ती। मै उसे खूब... खूब अच्छी तरह समझता हूँ। अच्छा, यह बताओ कि वह अपना समय, अपनी प्रतिभा यहाँ क्यों नष्ट कर रहा है? यहाँ वह क्या चाहता है?'

'समुद्री जीवो का वैज्ञानिक अध्ययन कर रहा है।'

'नहीं.....नहीं,' गहरी आह भरते हुए लेव्सकी ने कहा, 'एक वैज्ञानिक ने—जो मुझे जहाज पर मिला था—बताया कि काले सागर में इन जीवो का अभाव है और वैज्ञानिक कारणो से इन जीवो को सागर की तहो में भी पाना असम्भव है। सब गम्भीर जीव-विज्ञान-वेत्ता नेपिल्स या विलाफ्रान्श के शोध-भवनो में ही काम करते हैं। लेकिन वान कोरेन स्वतन्त्र और हठी प्रवृत्ति का आदमी है, वह यहाॅ काले सागर में काम इसलिए कर रहा है क्योंकि कोई दूसरा यहाँ काम नहीं कर रहा है, विश्वविद्यालय से उसका झगड़ा है, अपने साथी वैज्ञानिको को या उनके काम को जानने की वह परवाह नहीं करता क्योंकि वैज्ञानिक होने से पहले वह स्वभाव से स्वेच्छाचारी है। और तुम देखोगे कि वह कुछ न कुछ कर लेगा। वह अभी से यह ख्वाब देखता है कि अपनी इस शोध यात्रा से लौटने के बाद वह विश्वविद्यालयों के अन्दरूनी झगड़े-फिसाद को खत्म करके उन्हें सुधार देगा और वैज्ञानिको को ठीक कर देगा। स्वेच्छाचार सेना में ही नहीं, विज्ञान में चलता है। और वह दूसरी गर्मी इस छोटे से कस्बे में इसलिए काट रहा है क्योंकि

बड़े नगर में एक मामूली आदमी होने से गाँव में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझा जाना उसे ज्यादा पसन्द है। यहाँ वह बादशाह है—जैसे आकाश में चील होती है; वह यहाँ के निवासियों को अपनी विद्वता की शक्ति से दबाये रहता है; केवल मैं उसके प्रभाव के बाहर हूँ—इसलिए वह मुझसे घृणा करता है। उसने तुमसे कहा कि मुझे खत्म कर देना चाहिए या कड़ी सजा देनी चाहिए ?'

'हाँ,' हँसते हुए सैमाएलैन्को ने उत्तर दिया। लेव्सकी भी हँस पड़ा और उसने थोड़ी-सी शराब और पी। 'उसके आदर्श भी उसके स्वभाव की तरह स्वेच्छाचारी हैं,' हँसते हुए और एक आड़ू को दाँत से काटते हुए लेव्सकी ने कहा, 'साधारण पुरुष अपने पड़ोसियों के बारे में—मेरे, तुम्हारे, मानवता के बारे में—सोचते हैं यदि मानवता के हित का ध्यान होता है लेकिन वान कोरेन की दृष्टि में केवल कठपुतली है—एक अदना सी चीज है जो उसके जीवन और विचारों के लिए बहुत मामूली और छोटी है। वह काम करेगा—अपनी इस शोध-यात्रा में जाकर अपनी जान दे देगा—साधारण इन्सान के लिए नही, मानवता के अर्थहीन आदर्शों के लिए, आने वाली पीढ़ियों के लिए, मानव की एक आदर्श पौध के लिए। वह कहता हैं कि मानवता के उत्थान के लिए मेहनत कर रहा है। लेकिन हम उसकी दृष्टि में गुलाम हैं, कीड़े हैं, तोपों के लिए चारा हैं, बोझ ढोने वाले खच्चर हैं। इनमें से कुछ को वह खत्म कर देना चाहता है, कुछ को वह कड़े संयम से ठीक करना चाहता है, अराक्चीव की तरह ढोल की आवाज पर उठने या सोने के लिए मजबूर करना चाहता है। वह चाहेगा कि हमारी नैतिकता पर निगरानी रखने के लिए वह हिजड़ों को नियुक्त करना चाहेगा और इसकी आज्ञा दे देगा कि रूढ़ नैतिकता की संकुचित सीमा के बाहर जो निकले उसे गोली मार दी जाय—-यह सब मानवता को सुधारने के लिए ! और मानवता है क्या ? एक भ्रम, एक मृग तृष्णा...हर स्वेच्छाचारी ऐसे भ्रमों से आक्रान्त रहा है। मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूँ। मैं उसकी अच्छाई समझता हूँ और उसके महत्त्व को कम नहीं

समझता...यह संसार उसी जैसे के कंधों पर ही तो रुका हुआ है। यदि दुनिया हम जैसे व्यक्तियों के हाथ में छोड़ दी जाय तो अपने तमाम भले इरादों और स्वभाव के बावजूद, हम इतना गड़बड़ कर दें जितना इन मक्खियों ने उस चित्र के साथ किया है। हाँ...' यह कहते हुए लेव्सकी सैमाएलैन्को के पास बैठ गया और सच्चे हृदय से बोला, 'मैं एक मूर्ख, बेकार और पतित आदमी हूँ। जो कुछ भी मैंने जीवन से अब तक लिया है—यह हवा, यह शराब, प्रेम—उस सबके बदले में मैंने अब तक झूठ, बेकारी और कायरता के अतिरिक्त कुछ नहीं दिया है। अब तक मैंने स्वयं अपने आपको और दूसरों को धोखा दिया है; मैंने इसके कारण तकलीफ भोगी है लेकिन मेरी तकलीफ छोटी और साधारण थी। मैं वान कोरेन की घृणा के सामने नत् मस्तक हूँ क्योंकि कभी-कभी मैं स्वयं अपने आप से घृणा करता हूँ।'

उत्तेजना में लेव्सकी कमरे में इधर से उधर टहलने लगा और बोला, 'मुझे खुशी है कि मैं अपने दोष साफ पहचान रहा हूँ और उनका मुझे अहसास है। इससे मुझे अपने आपको सुधारकर एक अच्छा व्यक्ति बनने में सहायता मिलेगी। मेरे दोस्त, काश, तुम जानते कि ऐसे सुधार का मैं हृदय से कितना इच्छुक हूँ---कितना अधीर हूँ। मैं शपथ खाता हूँ कि मैं ऐसा व्यक्ति बनूँगा, अवश्य बनूँगा। मैं नहीं कह सकता कि यह सब मैं शराब के नशे में कह रहा हूँ या वास्तव में सत्य कह रहा हूँ लेकिन मुझे लगता है कि बहुत समय से मैंने ऐसे अच्छे-साफ क्षण नहीं बिताये हैं।'

'सोने का समय हो गया, मित्र,' सैमाएलैन्को ने कहा।

'हाँ...हाँ, क्षमा करो, मैं अभी चला जाता हूँ।' लेव्सकी जल्दी-जल्दी मेज-कुर्सियों और खिड़कियों के पास जाकर अपनी टोपी तलाश करने लगा।

'धन्यवाद...धन्यवाद, दया और मैत्री के शब्द किसी भी दान से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होते हैं। तुमने मुझे नया जीवन दे दिया है।'

लेव्सकी को टोपी मिल गई लेकिन फिर भी अपराधी की भाँति वह खड़ा हुआ सैमाएलैन्को की तरफ देखता रहा।

'एलिक्जैन्डर डैविडिच !' जैसे भीख सी माँगते हुए लेव्सकी ने कहा।

'क्या है ?'

'आज रात मुझे यहीं रह जाने दो।'

'अवश्य...क्यों नहीं ?' सैमाएलैन्को ने कहा।

लेव्सकी 'सोफे' पर लेट गया और देर तक सैमाएलैन्को से बातें करता रहा।

१०

पिकनिक के तीन दिन बाद, मैरिया कान्सटैन्टिनोवना अचानक नादियेजदा फ्योद्रोवना के यहाँ आई और बिना अपना हैट उतारे या अभिवादन किये उसने नादियेजदा के दोनों हाथ अपने सीने पर जोर से लगा लिए और बहुत उत्तेजित होकर बोली, 'मुझे बहुत दुख हुआ, प्रिये, यह खबर सुनकर। डाक्टर सैमाएलैन्को ने निकोदिम एलिक्सैंड्रिच को कल बताया कि तुम्हारे पति की मृत्यु हो गई है। क्या यह...क्या यह सही है ?'

'हाँ, सही है,' नादियेजदा ने उत्तर दिया।

'बहुत बुरा हुआ...बहुत बुरा हुआ। लेकिन हर गम के साथ कोई खुशी होती है—कोई सन्तोष होता है। तुम्हारे पति अवश्य बहुत ही भले आदमी रहे होंगे और ऐसे लोगों की आवश्यकता इस धरती से अधिक स्वर्ग में होती है।' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना के चेहरे का हर भाग—हर लाइन काँप रही थी मानों खाल के नीचे छोटी-छोटी सुइयाँ तड़प रही हों। अपनी उस चिकनी मुस्कराहट से हँसते हुए बोली, 'लेकिन अब

तुम स्वतन्त्र हो गई हो। अब तुम सिर उठाकर चल सकती हो और लोगों से आँख मिला सकती हो। अब न भगवान और न समाज तुम्हारे और इवान आन्द्रीच के सम्बन्ध पर भवें सिकोड़ सकेंगे। बहुत अच्छा हुआ यह—मुझे तो बेहद खुशी हो रही है। मै तुम्हारा विवाह कराऊँगी...मै और मेरे पति दोनों तुमसे बहुत स्नेह करते हैं और अपने विवाह पर शुभ आशीर्वाद देने का सुअवसर तुम हमें अवश्य देना। कब तक तुम लोग विवाह करोगे?'

'अभी मैंने कुछ सोचा नहीं है,' अपने हाथ छुड़ाते हुए नादियेजदा ने कहा।

'लेकिन यह तो असम्भव है। तुमने कुछ न कुछ तो अवश्य सोचा होगा।'

'सच, कुछ नहीं,' नादियेजदा ने हँसते हुए उत्तर दिया, 'फिर शादी की आवश्यकता ही क्या है? हम लोग ऐसे भी तो रहते रह सकते हैं।'

'क्या कह रही हो तुम?' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने घबड़ाकर कहा, 'हे भगवान, यह क्या कह रही हो तुम?'

'तो हमारे विवाह करने से परिस्थिति क्या अच्छी हो जायगी? बल्कि और खराब ही हो जायगी। हम लोगों की आजादी खत्म हो जायगी।'

'ओफ! क्या रही हो तुम?' थोड़ा पीछे हट कर मैरिया कान्सटैन्टि-नोवना ने घबड़ाहट में हाथ हिलाते हुए कहा, 'तुम पागलों की सी बात कह रही हो—तुम्हें स्वयं पता नहीं कि तुम क्या कह रही हो? तुम्हें विवाह करके जम जाना चाहिए।'

'जम जाना चाहिए? क्या मतलब तुम्हारा? अभी तो पूरी तरह से मैंने जीवन ही नहीं देखा है।'

और नादियेजदा सोच रही थी कि वास्तव में अभी पूरी तरह से

उसने जिन्दगी को ही कब देखा है। उसने एक होस्टल में अपना शिक्षा-काल बिताया था और फिर एक ऐसे आदमी से विवाह कर लिया था जिससे वह प्यार नहीं करती थी, उसके बाद लेव्सकी और उसके साथ इस सूने निर्जन प्रदेश का जीवन जिसमें हमेशा किसी अच्छी घटना की आशा लगी रहती थी। क्या यही जिन्दगी थी? फिर उसने सोचा, लेकिन मुझे शादी तो कर ही लेनी चाहिए। लेकिन एकाएक किरीलिन और एचमियानोव का ख्वाल आते ही वह घबड़ा गई और स्पष्ट बोल पड़ी, 'नहीं, यह असम्भव है। अगर इवान आन्द्रीच घुटनो के बल शादी के लिए प्रार्थना भी करे तो मैं मना कर दूं।'

एक मिनट तक मैरिया कान्सटैन्टिनोवना 'सोफा' पर खामोश बैठी रही—गम्भीर और उदास, शून्य में स्थिर आँखों से देखती हुई। फिर वह उठ खड़ी हुई और ठंडे-रूखे स्वर में बोली, 'अच्छा तो विदा। कष्ट देने के लिए क्षमा करना। मेरे लिए यह कहना आसान नहीं है लेकिन मुझे तुमसे यह कह देना आवश्यक है कि आज से हम लोगों में कोई सम्बन्ध न रहेगा और यद्यपि हम इवान आन्द्रीच का आदर करते हैं फिर भी तुम मेरे यहाँ कभी न आना।'

बहुत गम्भीरता से मैरिया ने यह शब्द कहे थे। उसका चेहरा फिर काँपने लगा था और उस पर फिर वही चिकनी मुस्कराहट आ गई थी। उसने अपने दोनों हाथ फिर नादियेजदा की ओर बढ़ाए—क्योंकि नादियेजदा बहुत घबड़ा गई थी—और बोली, 'मुझे आज्ञा दो कि कुछ देर को मैं तुम्हारी माँ या बड़ी बहन बन सकूँ और माँ की तरह तुमसे स्पष्ट बात कर सकूँ।'

नादियेजदा को अपने ऊपर तरस आया और उसके दिल में स्नेह उमड़ आया मानों उसकी माँ स्वयं जीवित होकर उसके सामने खड़ी हो गई हो। उसी उत्तेजना में वह मैरिया से चिपट गई और अपना चेहरा उसने मैरिया के कन्धे पर टेक दिया। दोनों की आँखों से आँसू बहने

लगे। वह सोफा पर बैठ गई और कुछ देर तक बिना एक दूसरे की तरफ देखे सिसकती रहीं।

'मेरी प्यारी बच्ची,' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने कहा, 'चाहे तुम्हें कष्ट क्यों न हो, मैं तुम्हें कुछ अप्रिय सत्य बताना चाहती हूँ।'

'अवश्य! भगवान के लिए अवश्य।'

'मुझ पर विश्वास रखो, प्रिये, तुम्हें याद होगा कि केवल मैं यहाँ पर एक ऐसी महिला थी जिसने तुम्हे अपने से मिलने दिया। मुझे भी तुम पहले दिन से नापसन्द थीं लेकिन दूसरों की तरह मैं तुमसे घृणा नहीं करना चाहती थी। इवान आन्द्रीच के लिए भी मैं दुखी और परेशान थी जैसे वह मेरा लड़का हो—एक अजनबी जगह में ऐसे युवक के लिए जो अनुभवहीन है, कमजोर है, जिसकी माँ नहीं है...मेरे पति ने इसका विरोध किया कि हम लोग उनसे मिलें लेकिन उन्हें मनाकर मैंने राजी कर लिया। हम लोग तुमसे मिलने लगे। अगर हम ऐसा न करते तो इवान आंद्रीच का अपमान होता। लेकिन मेरे दो बच्चे हैं...और तुम जानती हो कि बच्चों का दिमाग कितना कच्चा होता है—उनका दिल कितना साफ और पवित्र होता है। फिर भी मैंने तुम्हें अपने घर में स्वीकार किया और अपने बच्चों के हित के लिए घबड़ाती रही। ओह, जब तुम माँ बनोगी तब मेरी घबड़ाहट समझ पाओगी। और सब लोग इस बात पर आश्चर्य करते थे। देख, बुरा न मानना, मैं तुम्हें एक भद्र औरत के रूप में कैसे स्वीकार करती हूँ, कुछ ने मुझसे कहा भी, घुमा-फिरा कर—तुम जानती हो कि क्या किस्से और अफवाहें गढ़ी जाती हैं—और दिल में मैं तुमको दोष भी देती थी लेकिन तुम स्वयं परेशान थीं, उदास थीं, दया की पात्र थीं और मेरा दिल भर आया था तुम्हारे लिए।'

'लेकिन क्यों—क्यों?' बहुत उत्तेजित होकर नादियेजदा ने पूछा, 'मैंने ऐसा किसी का क्या बिगाड़ा है?'

'तुमने बहुत बड़ा पाप किया है। गिरजे में तुमने पति के लिए जो कसमें खाई थीं वह तोड़ दी थी, तुमने एक अच्छे, भले युवक को फुसलाया

था, जो कि—यदि वह तुमसे न मिला होता—अपने वर्ग की किसी अच्छी लड़की से जायज शादी करके आज प्रसन्न होता। तुमने उसका जीवन बर्बाद कर दिया। देखो, अभी कुछ न कहो-सुनो। मैं नहीं मानती कि ऐसे पाप में पुरुष का दोष होता है; दोष केवल स्त्रियों का होता है। इस प्रकार की बातों में पुरुष ज्यादा गम्भीर नहीं होते हैं—वह मन से नियंत्रित होते हैं, दिल से नहीं। बहुत-सी बातें ऐसी होती हैं जो वह समझ नहीं पाते लेकिन औरत सब कुछ समझ लेती है। सब कुछ उसी पर निर्भर है। सब कुछ उसी को मिलता है और बहुत कुछ की उससे आशा की जाती है। यदि इस मामले में वह पुरुष से ज्यादा कमजोर या मूर्ख होती तो बच्चों का पालन-पोषण उसको न सौंपा जाता। लेकिन तुम पाप की राह पर आ गईं—अपने सब उचित कर्त्तव्य भूल कर। तुम्हारी जगह दूसरी औरत होती तो वह अपने को आदमियों से दूर छिपाकर रखती और केवल गिरजों में दिखाई देती—दुखी काले कपड़े पहने, आँसू बहाते हुए, और लोग दयार्द्र होकर कहते, 'हे भगवान, पाप के मार्ग पर भटकी हुई देवी फिर तेरी शरण में वापस आ रही है...' लेकिन तुमने तो जैसे भद्रता और समझदारी से विदा माँग ली है, तुम बेशर्मी से खुलकर रही हो मानो इस पर तुम्हें गर्व हो। तुम खुश रही हो, हँसी हो और तुम्हें देखकर घृणा हुई है—डर लगा है कि कहीं तुम्हारे हमारे यहाँ बैठे-बैठे हमारे घर पर भगवान के कोप की बिजली न गिर पड़े। देखो, अभी चुप रहो, अभी मुझे कह लेने दो,' मैरिया ने देखा कि नादियेजदा कुछ कहना चाहती है, 'मुझ पर विश्वास रखो। मैं तुम्हारी आत्मा की आँखों से एक भी सत्य न छिपाऊँगी। सुनो, भगवान बड़े पापियों को छाँट लेता है और तुमने महान पाप किया है। तुम्हारे पहनने के कपड़े हमेशा ही बहुत भड़कीले होते हैं।'

नादियेजदा अपने कपड़ों को बहुत अच्छा समझती थी। यह बात सुनकर उसने रोना बन्द कर दिया और आश्चर्य से देखने लगी।

'हाँ, बहुत बेहूदा और भड़कीले,' मैरिया ने कहा, 'तुम्हारे कपड़ों से ही तुम्हारे चरित्र और आचरण का पता लग सकता है। लोग तुम्हें देखकर हँसते थे और घृणा करते थे और मुझे दुख होता था। फिर तुम्हारी व्यक्तिगत आदतें भी गन्दी हैं—क्षमा करना—लेकिन इवान आंद्रीच की चीजों को देखकर भी दुख होता है क्योंकि उसकी टोपी, कपड़े, जूते कभी साफ नहीं होते और मालूम पड़ता है कि घर पर उसकी कोई देखभाल नहीं करता है। फिर वह हमेशा भूखा रहता है। अगर घर पर कोई खाने का प्रबन्ध ठीक न रखे तो रुपया होटलों में खराब करना ही पड़ता है। घर में भी तुम्हारे भयानक गन्दगी रहती है। शहर में कहीं मक्खियाँ नहीं हैं लेकिन तुम्हारे यहाँ मक्खियों की कोई कमी नहीं है—बर्त्तनों पर तो हमेशा भिनभिनाया करती हैं। मेज, कुर्सियों और खिड़कियों पर सिर्फ धूल, भरी हुई मक्खियाँ और गिलास दिखाई पड़ते हैं। दिन में इस समय तक बर्त्तन साफ नहीं दिखाई पड़ते और तुम्हारे सोने के कमरे में जाते हुए तो जी घबड़ाता है—हर तरफ अन्दर पहनने वाले कपड़े, रबर के ट्यूब, बाल्टियाँ, तसले बिखरे पड़े रहते हैं। पत्नी को घर को साफ-सुथरा और सजाकर रखना चाहिए—खास तौर पर पति के सामने। मैं उजाला होने के पहले ही सुबह उठ जाती हूँ और ठंढे पानी से मुँह धो लेती हूँ ताकि निकोदिम एलिक्सैंड्रिच मुझे सोया हुआ या ऊँघता हुआ न देख लें।'

'वह सब बेकार की बात है,' नादियेजदा ने सिसकते हुए कहा, 'काश, मैं खुश होती लेकिन मैं बहुत दुखी हूँ।'

'हाँ, तुम बहुत दुखी हो।' अपने आप को किसी तरह रोने से रोकते हुए मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने आह भरते हुए कहा, 'और भविष्य में तुम्हारे लिए बहुत दुख और कष्ट हैं। बुढ़ापे का अकेलापन, बीमारी और कमजोरी और फिर भगवान के सामने जवाबदेही...सब कुछ बहुत भयानक है। और अब, जब भाग्य तुम्हें मदद दे रहा है तो तुम उसे ठुकरा रही हो। शादी कर लो—जल्दी से जल्दी कर लो।'

अ०—६

'हाँ, हमें अवश्य शादी कर लेनी चाहिए,' नादियेजदा ने कहा, 'लेकिन यह असम्भव है।'

'क्यो ?'

'बिल्कुल असम्भव। काश, तुम जानतीं और समझ सकतीं।'

नादियेजदा की इच्छा हुई कि उसे किरीलिन के बारे में बता दे और युवक एचमियोनोव के बारे में भी जिससे बन्दरगाह पर उसकी मुलाकात हुई थी और उसके दिमाग में यह पागलपन का विचार आया था कि तीन सौ रूबुल के कर्ज को वह अपने शरीर के सौदे से निपटा दे, बहुत मजा आया था उसे यह सोचने में और जब शाम को वह देर से घर लौटी थी तो उसे लग रहा था कि उसने अपने आप को बेच दिया है, और अब उसके लिए कोई मार्ग नहीं बचा है। वह स्वयं नहीं जानती थीं कि जो कुछ उस शाम को हुआ—कैसे हुआ। और नादियेजदा ने चाहा कि मैरिया के सामने कसम खाये कि वह कर्ज अदा कर देगी लेकिन शर्म से उसका मुँह नहीं खुला और सिसकियों से उसका कंठ रुँधा रहा।

'मैं चली जा रही हूँ,' उसने कहा, 'इवान आन्द्रीच यहाँ रहें शायद, लेकिन मैं जा रही हूँ।'

'कहाँ ?'

'वापस—रूस।'

'लेकिन तुम वहाँ रहोगी कैसे ? तुम्हारे पास कुछ भी तो नहीं है,' मैरिया ने कहा।

'अनुवाद कर लूँगी...या लाइब्रेरी खोल लूँगी...कुछ भी।'

'देखो, इस तरह बहको मत। लाइब्रेरी खोलने के लिए रुपया चाहिए। अब मैं जा रही हूँ, तुम अपने आप को शान्त करो और सब बातों पर ठीक से विचार करो; फिर कल मेरे पास प्रसन्न-चित्त होकर

आना। यह अच्छा होगा। अच्छा, प्रिये, मैं चल रही हूँ। चलते-चलते, मुझे अपना मुख चूम लेने दो।'

मैरिया ने नादियेजदा का मस्तक चूम लिया और उस पर हाथ से क्रूश का संकेत बनाकर चुपचाप वहाँ से चल दी। अँधेरा हो गया था और ओल्गा ने चौके में बत्ती जला दी थी। रोते हुए ही नादियेजदा जाकर बिस्तर पर लेट गई। उसे उत्तेजना से बुखार-सा आने लगा था। लेटे ही लेटे उसने कपड़े उतारे और पैर के पास कपड़ों को डालकर बिस्तर में दुबक गई। उसे प्यास लग रही थी लेकिन पास में पानी देने वाला कोई न था।

मैं वह तीन सौ रूबल दे दूँगी उसने अपने आप से कहा। बुखार की तेजी से सरसाम बढ़ने लगा था और नादियेजदा देख रही थी कि वह किसी बीमार स्त्री की चारपाई के सिरहाने बैठी है और बीमार स्त्री वह स्वयं है। मैं वापस कर दूँगी...यह सोचना भी वाहियात है कि मैंने पैसे के लिए वह काम किया था...मैं...मैं यहाँ से चली जाऊँगी और पीटर्सबर्ग से उसे रुपया भेज दूँगी—पहले एक सौ...फिर एक सौ...फिर एक सौ...

काफी रात को लेव्सकी लौटा।

'पहले एक सौ...' नादियेजदा ने उससे कहा, 'फिर एक सौ...'

'तुम्हें कुनीन खानी चाहिए,' लेव्सकी ने कहा; वह सोच रहा था, कल बुध के जहाज से तो मैं जा नहीं सकूँगा, मुझे शनिवार तक यहाँ रहना पड़ेगा।

नादियेजदा पलँग पर उठकर बैठ गई, 'मैंने अभी कुछ कहा था क्या?' मुस्कराते हुए और रोशनी से आँखें झपकाते हुए उसने कहा।

'नहीं, कुछ नहीं, कल डाक्टर को बुलाना पड़ेगा। अब सो जाओ।'

तकिया लेकर लेव्सकी दरवाजे की तरफ चल पड़ा। जब से उसने

यहाँ से चले जाने का निश्चय किया था तब से उसको नादियेजदा पर तरस आने लगा था और उसके सामने वह अपने को अपराधी समझता था जैसे किसी बीमार घोड़े के सामने, जिसे वह मारने का इरादा कर चुका हो।

'वहाँ पिकनिक पर मेरा मन कुछ खिन्न था और मैंने तुमसे कुछ अशिष्ट बात कह दी थी। भगवान के लिए मुझे क्षमा कर दो,' लेव्सकी ने कहा।

यह कहकर वह अपनी अध्ययनशाला में जाकर लेट गया और बहुत देर तक उसे नींद नहीं आयी।

दूसरे दिन सुबह, छुट्टी होने के कारण, सैमाएलैन्को—मान चिन्हों और पदकों से सजी हुई अपनी पूरी पोशाक पहनकर आया। सोने के कमरे में उसने नादियेजदा की नब्ज और जबान की परीक्षा की। जब वह बाहर निकलने लगा तो लेव्सकी दरवाजे पर ही उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने अधीरता से पूछा, 'क्यों—क्या?' उसके चेहरे पर आशंका, परेशानी और आशा के भाव स्पष्ट थे।

'चिन्ता मत करो, कोई भयानक बात नहीं है,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'मामूली बुखार है।'

'मेरा वह मतलब नहीं है,' लेव्सकी ने अधीरता से भवें सिकोड़ते हुए कहा, 'रुपये का प्रबन्ध हो गया?'

'क्षमा कर दो, भाई,' घबराहट में द्वार की तरफ देखते हुए सैमाए-लैन्को ने कहा, 'भगवान के लिए क्षमा कर दो। किसी के पास कुछ देने को था ही नहीं और पाँच-दस रूबुल करके मैं कुल एक सौ दस इकट्ठे कर सका हूँ। आज किसी और से बात करूँगा। धैर्य रखो।'

'लेकिन शनिवार तो अन्तिम दिन है,' अधीरता से काँपते हुए लेव्सकी ने कहा, 'भगवान के लिए शनिवार तक प्रबन्ध अवश्य कर दो।

अगर शनिवार तक रुपये का इन्तजाम न हुआ तो सब बेकार हो जायगा। मेरी समझ में नहीं आता कि एक डाक्टर के पास रुपया क्यों नहीं है ?'

'क्या करूँ ?' तेजी से फुसफुसाते हुए सैमाएलैन्को ने कहा—उसकी आवाज में हल्का सा चिड़चिड़ापन भी था, 'मेरे पास रही क्या गया है। सात हजार रूबुल मैंने इधर-उधर उधार दे रखे हैं और मैं स्वयं कर्ज में हूँ। इसमें मेरा क्या दोष है ?'

'तो तुम शनिवार तक प्रबन्ध कर दोगे न ?'

'कोशिश करूँगा।'

'करो—मैं प्रार्थना करता हूँ। ऐसा करो कि शुक्रवार की सुबह तक रुपया मिल जाय ?'

सैमाएलैन्को ने बैठकर नादियेजदा के लिए नुस्खा लिखा और चल दिया।

११

'तुम्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है मानो तुम मुझे गिरफ्तार करने आ रहे हो,' पूरी पोशाक में सैमाएलैन्को को आते हुए देखकर वान कोरेन ने कहा।

'मैं इधर से जा ही रहा था कि सोचा, तुमसे मिल लूँ,' सैमाएलैन्को ने एक मेज के पास बैठते हुए कहा जिसे वान कोरेन ने स्वयं बनाया था।

'गुड-मार्निङ्ग, डीकन,' सैमाएलैन्को ने देखा कि खिड़की के पास बैठा हुआ पादरी किसी चीज की नकल कर रहा है, 'मैं बस कुछ ही देर रुकूँगा और फिर जाकर दोपहर के भोजन की व्यवस्था करूँगा। मैं तुम लोगों का समय तो नहीं ले रहा हूँ।'

'नहीं, बिल्कुल नहीं,' वान कोरेन ने कहा। फिर लिखे हुए पृष्ठों पर

मेज पर फैलाते हुए वह बोला, 'हम लोग एक लेख की प्रतिलिपि बना रहे थे।'

'ओह ! हे भगवान......' सैलाएलैन्को ने आह भरते हुए कहा और फिर बहुत धीरे से मेज पर से एक धूल से लदी हुई पुरानी पुस्तक—जिस पर एक मरी हुई मकड़ी पड़ी थी—उठाते हुए कहा, 'जरा सोचो कि कोई छोटा सा कीड़ा इधर-उधर घूम रहा हो और उस पर अचानक ऐसा दैत्य टूट पड़े—कितना घबड़ा जायगा वह नन्हा सा कीड़ा ?'

'हाँ !'

'अपने आपको बचाने के लिए क्या उस छोटे से कीड़े को प्रकृति की ओर से जहर मिलता है ?'

'हाँ—अपने को बचाने के लिए भी और हमला करने के लिए भी,' वान कोरेन ने उत्तर दिया।

'हाँ—प्रकृति की हर व्यवस्था उचित होती है,' सैमाएलैन्को ने आह भरते हुए कहा, 'लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती। तुम तो बहुत चतुर और पढ़े-लिखे आदमी हो—तुम मुझे समझाओ। कुछ ऐसे छोटे-छोटे जानवर होते हैं जिनका आकार चूहों से बड़ा नहीं होता है जो देखने में तो खूबसूरत लगते हैं लेकिन जो बहुत बुरे होते हैं और जिनका आचरण बहुत खराब होता है। मान लो एक ऐसा जानवर जंगल में चला जा रहा है। वह एक चिड़िया देखता है और उसे झपट कर पकड़ लेता है और खा जाता है। इसके बाद उसे एक घोंसले में कुछ अन्डे दिखाई पड़ते हैं, वह उन्हें खाना नहीं चाहता क्योंकि उसका पेट भरा हुआ है, फिर भी वह एक को तोड़कर चखता है और बाकी सब को तोड़कर इधर-उधर फैला देता है। इसके बाद उसे एक मेंढक मिलता है और उसको परेशान करना शुरू कर देता है, फिर कुछ देर बाद उसे एक नन्हा-सा कीड़ा मिलता है जिसे वह अपने पंजों से दबाकर मार डालता है और इस प्रकार उसे जो भी राह में मिलता है उन सबको वह नष्ट कर देता है—वह दूसरे

जानवरों के बिल में घुसकर उत्पात करता है, दीमकों के घिरौंदों को तोड़ देता है और केकड़े का ऊपरी खोल दबाकर चटखा देता है। अगर उसे कोई चूहा मिलता है तो उससे वह लड़ता है, कोई साँप मिलता है तो उसका गला घोंटकर मार डालता है—सारे दिन वह यही करता रहता है। अब यह बताओ कि इस जानवर का लाभ क्या है ? इसका जन्म ही क्यों हुआ ?'

'मुझे पता नहीं कि किस विशेष जानवर की तुम चर्चा कर रहे हो,' वान कोरेन ने कहा, 'लेकिन इतना बता सकता हूँ कि वह चिड़िया को इसलिए खा सका कि चिड़िया होशियार नहीं थी, घोंसला इसलिए तोड़ सका कि घोंसला ठीक नहीं बना था और चिड़िया ने उसे ठीक तरह से नहीं छिपाया था। मेढक को अपने आपको छिपाने वाले रंग कुछ खराब रहे होंगे...तुम्हारा यह जानवर केवल उन्हीं को नष्ट कर पाता है जो कमजोर हैं, लापरवाह हैं, कुशल नहीं हैं—अथवा वह ऐसे जन्तु हैं जिनमें कुछ ऐसे दोष हैं जिनके उनकी नस्ल में चलते रहने को प्रकृति उचित नहीं समझती। केवल वही जातियाँ जीने की स्पर्धा में टिक पाती हैं जो मजबूत और होशियार और ज्यादा प्रगति की हुई होती हैं। और इसलिए वह तुम्हारा यह दुष्ट जानवर, बिना जाने, सृष्टि को सुधारने में बराबर योग देता रहता है।'

'हाँ—तुम ठीक कहते हो ! अच्छा भाई,' सैमाएलैन्को ने लापरवाही से कहा, 'क्या तुम मुझे सौ रूबुल उधार दे सकते हो ?'

'अवश्य, कीड़े खाने वाले जानवरों में कुछ बहुत दिलचस्प जातियाँ होती हैं।' और यह कहते हुए वान कारेन ने एक बक्स खोलकर एक सौ रूबुल का नोट निकाला, 'यह लो लेकिन एक शर्त पर कि तुम यह रुपया लेव्सकी को मत देना।'

'और यदि लेव्सकी को ही देने का इरादा हो तो,' एकदम से नाराज होते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'तुम्हें इससे क्या मतलब।'

'तब फिर, लेव्सकी को देने के लिए मैं तुम्हें यह रुपया नही दे सकता। मै जानता हूँ कि तुम लोगों को आसानी से रुपया उधार देते रहते हो। तुम तो डाकू केरिम को भी दे सकते हो, लेकिन अगर तुम्हें लेव्सकी को रुपया देना है तो मुझे खेद है मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता।'

'हाँ, मैं लेव्सकी के लिए ही यह रुपया ले रहा हूँ,' सैमाएलैन्को क्रोध में कुर्सी से उठ पड़ा था और दाहिना हाथ उत्तेजना में घुमा रहा था, 'हाँ—लेव्सकी के लिए और किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि मुझे यह बताए कि मैं अपना रुपया कैसे खर्च करूँ। अगर तुम न चाहो तो रहने दो।'

पादरी हँसने लगा। वान कोरेन ने कहा, 'इतना क्यों बिगड़ रहे हो बिना कारण ? जरा सोचो तो...लेव्सकी के साथ भलाई उतना ही निरर्थक है जितना टिड्डियों को खिलाने की चेष्टा करना या सूखी हुई झाड़ियों में पानी देना।'

'मैं तो यह समझता हूँ कि पड़ोसियों की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।' सैमाएलैन्को अब भी उतना ही उत्तेजित था।

'अगर यही बात है तो उस बेचारे भूखे तुर्की की मदद करो जो चहारदीवारी के बाहर पड़ा रहता है,' वान कोरेन ने कहा, 'वह मजदूर है और समाज के लिए उसकी उपयोगिता लेव्सकी से अधिक है—उसे दे दो यह सौ रूबुल का नोट या मेरी शोध यात्रा के लिए दान दे दो।'

'मुझे रुयया दोगे या नहीं—मैं तुमसे अन्तिम बार पूछ रहा हूँ,' सैमाएलैन्को ने कहा।

'अच्छा तो यह स्पष्ट बताओ कि उसे चाहिए क्यों ?' वान कोरेन ने पूछा।

'इसमें कोई भेद नहीं—वह शनिवार तक पीटर्सबर्ग चला जाना चाहता है।'

'हूँ—तो यह बात है !' वान कोरेन ने कहा, 'अब मैं समझा । और क्या वह उसके साथ जा रही है या नहीं ?'

'अभी वह तो कुछ दिन यहाँ रहेगी,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'वह पीटर्सबर्ग पहुँचकर व्यवस्था ठीक करेगा । फिर वह नादियेजदा फ्योद्रोवना को रुपया भेज देगा ताकि वह भी चली आए ।'

'वाह—क्या चतुर योजना है !' वान कोरेन ने एक व्यंगात्मक हँसी हँसते हुए कहा । फिर उठकर वह सीधा सैमाएलैन्को के निकट गया और उसकी आँख में आँख गड़ा कर उसने पूछा, 'अच्छा, यह बताओ कि क्या वह उससे ऊब गया है ? क्यों ?...क्यों ?'

'हाँ,' सैमाएलैन्को को जोर से पसीना आने लगा ।

'कितनी गन्दी और वीभत्स बात है,' वान कोरेन के चेहरे पर घृणा स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी, 'दो बातों में से एक बात है—एलिक्जैन्डर डैविडिच—या तो इस बात में तुम उससे मिले हुए हो, या—क्षमा करना—मूर्ख हो ! इतना तो तुम समझ सकते हो कि वह तुम्हें बेवकूफ बना रहा है और तुम बच्चों की तरह बने जा रहे हो । बिल्कुल साफ है कि वह उससे पीछा छुड़ाना चाहता है और उसे यहीं त्यागकर चला जाना चाहता है । बाद में वह तुम पर एक बोझ बन जायगी । फिर तुम्हें ही अपने खर्चे से उसे पीटर्सबर्ग भेजना पड़ेगा । यह तो नहीं हो सकता कि तुम्हारे मित्र ने अपने गुणों से इतना चौंधिया दिया हो कि तुम इतनी स्पष्ट बात भी न देख पाओ ।'

'यह तो केवल अन्दाज से सोच लेने की बात है,' सैमाएलैन्को ने फिर से बैठते हुए कहा ।

'अन्दाज !' वान कोरेन ने कहा, 'तो वह उसको साथ न ले जाकर अकेला क्यों जा रहा है ? उससे पूछो कि वह नादियेजदा फ्योद्रोवना को पहले क्यों नहीं भेज देता ? बदमाश कहीं का !'

सैमाएलैन्को को अपने मित्र के बारे में स्वयं भ्रम होने लगा और

उसका निश्चय ढीला पड़ गया। क्षीण आवाज में वह बोला, 'लेकिन यह असम्भव है।' और यह कहते हुए उसे वह रात याद आ गई जब लेव्सकी उसके यहाँ आकर ठहरा था और वह बोला, 'लेकिन वह कितना दुखी है!'

'इससे क्या हुआ?' वान कोरेन की आँखों में कठोरता थी, 'चोर और बदमाश भी तो दुखी होते हैं!'

'अच्छा, यह मानते हुए भी कि तुम सही हो...' सैमाएलैन्को ने झिझकते हुए कहा, 'लेकिन हमें यह मान लेना चाहिए कि...कि अभी वह कम उम्र है, विद्यार्थी है। हम लोग भी तो कभी विद्यार्थी थे, और हमारे सिवा उसकी सहायता और कौन करेगा?'

'पाप करने में—बुरे काम करने में उसकी सहायता करना केवल इसलिए कि तुम्हारी तरह वह भी विश्वविद्यालय में पढ़ चुका है—यह बकवास है,' वान कोरेन ने कहा।

'ठहरो, इस बात पर हमें ठंडे दिमाग से विचार करना चाहिए। मेरा ख्याल यह है कि कुछ प्रबन्ध किया जा सकता है...' सैमाएलैन्को अपनी उँगलियाँ घुमाते हुए सोच रहा था, 'देखो, मै उसे रुपया दे दूँगा लेकिन उससे उसके सम्मान का वास्ता देकर यह वादा करा लूँगा कि वहाँ पहुँचने के एक सप्ताह के अन्दर वह नादियेजदा फ्योद्रोवना के आने के लिए रुपया भेज दे।'

'और वह वादा कर भी देगा—यही नहीं वह आँसू भी बहायेगा और शायद वह अपने वादे में स्वयं विश्वास भी करे। लेकिन उसके सम्मान और उसके वादे की कीमत क्या? वह वादा नहीं निभायेगा और साल-दो साल बाद कभी 'नेवस्की प्रास्पेक्ट' पर किसी दूसरी रखैल की बगल में हाथ डाले मिलेगा तो बहाना करेगा कि उसका कोई दोष नहीं—इस सभ्यता ने उसे पंगु बना दिया है, भगवान के लिए उसे छोड़ो। कीचड़ से दूर ही रहो, उसे दोनों हाथों से उछालो मत।'

कुछ देर सोचकर, सैमाएलैन्को ने दृढ़ता से उत्तर दिया, 'लेकिन फिर भी मै उसे रुपया दूँगा अवश्य। तुम जो चाहो कहो। मात्र किसी धारणा पर मै किसी की सहायता करने से पीछे नहीं हटूँगा।'

'अवश्य—खुशी से। जितना चाहो स्नेह करो उससे,' वान कोरेन ने व्यंग्य करते हुए कहा।

'तो सौ रूबल मुझे दे दो,' सैमाएलैन्को ने डरते हुए कहा।

'नहीं, मै नहीं दूँगा।'

एकाएक कमरे में खामोशी हो गई। सैमाएलैन्को बिल्कुल चूर हो गया था—उसके चेहरे पर अपराध, शर्म और किंचित नाराजी का भाव था। इतनी शानदार पोशाक पहने और राजकीय सम्मान के तमगे लगाए हुए एक लम्बे-चौड़े आदमी के चेहरे पर बच्चे का-सा दयनीय और शर्मिन्दा भाव बहुत अजीब लग रहा था।

'इस इलाके का 'बिशप' बजाय गाड़ी के घोड़े पर दौरा करता है,' अपना कलम रखते हुए पादरी ने कहा, 'उसे घोड़े पर बैठा देखकर बड़ा असर पड़ता है। उसके अन्दर बाइबिल के-से सन्तो का-सा सीधापन और धर्मभीरुता है।'

'क्या वह अच्छा आदमी है?' वान कोरेन ने कहा। वह खुश था कि बात का विषय बदल गया है।

'बिलकुल। अगर ऐसा न होता तो क्या कभी वह बिशप बनाया जाता?' पादरी ने कहा।

'हॉ, बहुत से बिशप भले और प्रतिभाशाली व्यक्ति होते हैं,' वान कोरेन ने कहा, 'केवल यही एक दोष उनमें से कुछ में होता है कि वह अपने धार्मिक कामों के स्थान पर राजनीति में दिलचस्पी लेने लगते है। उन्हें चाहिए कि वह अपना काम ठीक से देखें।'

'जनता के किसी आम व्यक्ति को बिशपों की आलोचना करने का अधिकार नहीं है,' पादरी ने कहा।

'क्यों ? बिशप भी तो हमारी-तुम्हारी तरह ही आदमी होता है,' वान कोरेन ने कहा।

'हाँ—लेकिन बिल्कुल वही नहीं।' वान कोरेन के इस कथन से पादरी थोड़ा रुष्ट हो गया और उसने फिर कलम उठा लिया, 'अगर तुम सब एक ही तरह के होते तो भगवान तुम्हें ही बिशप क्यों नहीं बनाता ? और क्योंकि तुम बिशप नहीं हो, इसलिए प्रमाणित होता है कि तुम उस तरह के व्यक्ति नहीं हो।'

'बेकार बात मत करो, डीकन,' सैमाएलैन्को ने गिरे हुए मन से कहा और वान कोरेन की तरफ घूमकर बोला, 'सुनो, मैं एक व्यवस्था बताता हूँ—मुझे सौ रूबल मत दो। लेकिन तीन महीने तक तुम मेरे साथ भोजन करते रहोगे, इसलिए उन तीन महीनों के खाने का रुपया मुझे अभी दे दो।'

'नहीं—मैं नहीं दूँगा,' वान कोरेन ने कहा।

सैमाएलैन्को की पलक झपकी और उसका चेहरा सुर्ख हो गया। यन्त्रवत् उसने मेज पर से वह किताब उठा ली जिस पर मकड़ी चिपकी थी—उसे देखा और फिर अपना हैट लेकर उठ पड़ा।

वान कोरेन को उस पर एकाएक दया आ गई—'ऐसे आदमियों से भी सम्बन्ध रखना पड़ता है।' और यह कह कर उसने घृणा में पास जमीन पर पड़े हुए कागज के टुकड़े को ठोकर मारकर कोने में फेंक दिया, 'लेकिन यह तुम्हें समझ लेना चाहिये कि जो कुछ तुम उसके लिए कर रहे हो वह स्नेह या दया नहीं है, बल्कि कायरता और सुस्ती और जहर है। जो कुछ बुद्धि से बन पाता है उसे तुम जैसे लोगों की कमजोरी और अतिशय भावुकता खत्म कर देती है। जब मैं बचपन में एक बार बीमार पड़ा था और मुझे टाइफायड हो गया था तो मेरी एक चाची ने स्नेहवश मुझे खाने को कुछ दे दिया था जिसके कारण मैं मरते-मरते बचा था। तुम लोगों को यह समझना चाहिए कि इन्सान से प्यार दिल

से या पेट से नहीं किया जाता है, इससे किया जाता है,' अपने मस्तक की ओर उँगली से इशारा करते हुए वान कोरेन ने कहा। और फिर सैमाएलैन्को के हाथ में सौ रूबल का नोट थमाते हुए कहा, 'यह लो।'

'तुम नाराज क्यों हो रहे हो, कोल्या,' नोट को सफाई से मोड़ते हुए सैमाएलैन्को ने कहा, 'मैं तुम्हारी बात पूरी तरह समझता हूँ, लेकिन जरा अपने को मेरी जगह रख कर सोचो।'

'तुम तो बिल्कुल बूढ़ी औरतों जैसे हो।'

वान कोरेन की इस बात को सुनकर पादरी जोर से हँस पड़ा।

फिर बिगड़ते हुए वान कोरेन ने कहा, 'मेरी अन्तिम इच्छा सुन लो, एलिक्जैन्डर डैविडिच। उस बदमाश को जब रुपया देना तो यह शर्त्त लगा देना कि वह अपनी उस रखैल को अपने साथ लेता जाय और इस वादे के बिना उसे मत देना। उसके साथ कोई शिष्टता करने की जरूरत नहीं है। उससे कहना यह सब, और अगर तुम नहीं कहोगे तो मैं तुम्हे बता रहा हूँ कि मैं उसके दफ्तर जाकर उसे ठोकर मारकर सीढ़ियों के नीचे गिरा दूँगा और तुमसे भी अपने सम्बन्धों का अन्त कर दूँगा। समझ लो।'

'हाँ, उसको साथ ले जाने या उसको पहले भेज देने में उसे कोई आपत्ति नहीं होगी,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'बल्कि इस बात पर तो वह खुश होगा। अच्छा, विदा।'

स्नेहपूर्वक बिदा लेकर सैमाएलैन्को ने बाहर जाने के लिए दरवाजा खोला, किन्तु जाने के पूर्व उसने वान कोरेन की तरफ तेजी से देखते हुए कहा, 'तुम्हें इस जर्मन जाति ने और उनके विचारों ने बर्बाद कर दिया है—समझे।'

१२

अगले बृहस्पतिवार को मैरिया कान्सटैन्टिनोवना अपने लड़के कोस्तया का जन्म-दिन मना रही थी। सब लोगों को दोपहर में आने का निमंत्रण था—खाने के लिए और शाम तक रुककर 'चाकलेट' पीने के लिये। शाम को जब लेव्सकी और नादियेजदा आये तो वान कोरेन ने, जो वहाँ पहले से उपस्थित था, सैमाएलैन्को से पूछा, 'तुमने बात कर ली उससे?'

'अभी नहीं।'

'देखो—ज्यादा शिष्टता मत बरतो, उसके साथ। यह लोग भी कितने ढीठ और निर्लज्ज हैं! यह पूरी तरह जानते हैं कि इस परिवार का इन लोगों के नाजायज सम्बन्धों के बारे में क्या विचार है, फिर भी यह बेशर्मी से चले आ रहे हैं।'

'अगर इसी तरह लोग इस बात से डरने लगें कि दूसरे उनके बारे में क्या गलत धारणाएं बनाये हुए हैं तो कोई कहीं नहीं जा पाये,' सैमा-एलैन्को ने कहा।

'तो तुम्हारे कहने का मतलब है कि लोगो को ऐसे अनैतिक सम्बन्धो से जो घृणा है वह मात्र गलत धारणा है?' वान कोरेन ने पूछा।

'अवश्य, गलत धारणा भी है और घृणा भी है। मामूली सिपाही किसी चंचल लड़की को देखकर सीटियाँ बजाते हैं—छेड़ते हैं लेकिन उनसे जरा पूछो कि वह स्वयं क्या हैं।'

'वह बेकार सीटियाँ नहीं बजाते हैं। क्या लड़कियों का अपने नाजायज बच्चों का गला घोंट देना और उसके लिए सजा काटना या बिना जाने हम लोगों की कैटूया की मासूमियत से प्रसन्न होना या हम सब लोगों में पवित्र प्रेम के लिए एक अदृष्ट कामना होना—क्या यह सब रूढ़ और गलत धारणाओं के कारण है? केवल यही तो एक भावना है जिसके कारण विकास के क्रम में हमारा घाटा नहीं है। स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर सामाजिक प्रतिबन्ध न होता तो लेव्सकी जैसे लोग जो चाहते करते और दो ही वर्षों में मानवता का पतन और अन्त हो जाता।'

ड्राइंग-रूम में आकर लेव्सकी ने सब लोगों से हाथ मिलाया और वान कोरेन से भी हाथ मिलाया। फिर कुछ देर मौका देखकर सैमाएलैन्को से कहा, 'एलिक्जैन्डर डैविडिच, मुझे तुम से दो शब्द कहने हैं।'

सैमाएलैन्को उठ पड़ा और लेव्सकी की कमर में हाथ डालकर उसके साथ निकोदिम एलिक्जैन्ड्रिच की अध्ययनशाला में चला गया।

'कल शुक्रवार है,' नाखून दाँतों से काटते हुए लेव्सकी ने कहा, 'वह काम हो गया जिसका तुमने वादा किया था?'

'केवल दो सौ मिल सके हैं। बाकी का इन्तजाम मैं एक-दो दिन में कर दूँगा। चिन्ता मत करो।'

'ओह, धन्यवाद,' सन्तोष की आह भरते हुए लेव्सकी ने कहा—उसके हाथ खुशी से काँप रहे थे, 'तुमने मेरी रक्षा कर ली, एलिक्जैन्डर डैविडिच, और भगवान को या अपनी खुशी को या जिस चीज को तुम कहो साक्षी रख कर शपथ खा सकता हूँ कि वहाँ पहुँचते मैं रुपया भेज दूँगा और जो पहले का तुम्हें देना है, वह भी।'

'देखो वैन्या...' सैमाएलैन्को का चेहरा घबड़ाहट से लाल हो गया और लेव्सकी के कोट का बटन पकड़कर उसे रोकते हुए, सैमाएलैन्को ने कहा, 'अपनी निजी बातों में दखल देने के लिए क्षमा कर दो लेकिन... लेकिन नादियेजदा फ्योद्रोवना को तुम अपने साथ ही क्यों नहीं ले जाते?'

'अजीब आदमी हो तुम, यह कैसे संभव हो सकता है ? हम दोनों में से एक को तो यहाँ रहना ही चाहिए वरना हम जिनके कर्जदार हैं वह लोग आफत कर देंगे। दूकानों को ही मुझे लगभग सात सौ रूबुल से अधिक देना है। जरा ठहरो—पहले मैं उन्हें रुपया भेज कर सन्तुष्ट कर दूँगा, फिर नादियेजदा को बुलवा लूँगा,' लेव्सकी ने कहा।

'हूँ, समझा. . . .लेकिन पहले उन्हें ही क्यों नहीं भेज देते ?'

'क्या बात करते हो ? यह सम्भव है क्या ?' लेव्सकी ने भयभीत हो कर कहा, 'वह औरत है और वहाँ अकेले क्या कर सकेगी ? उसे क्या मालूम कि पीटर्सबर्ग में क्या करना है। इससे तो वक्त और पैसा दोनों खराब होगा।'

बात तो ठीक मालूम पड़ती है. . . ., सैमाएलैन्को ने सोचा लेकिन वान कोरेन की बात याद आते ही उसने निगाह नीची किए हुए नाराजी से कहा, 'मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ। तुम उसको साथ ले जाओ या उसे पहले भेज दो, वरना. . . . वरना मैं तुम्हें रुपया नहीं दूँगा। यह मेरे अन्तिम शब्द हैं. . . . .'

सैमाएलैन्को बात तो कह गया लेकिन एकदम घबड़ाहट से उसका चेहरा लाल हो गया और चेतनहीन सा वह उस कमरे के बाहर चला गया।

शुक्रवार. . .शुक्रवार. . . ड्राइंग-रूम में वापस लौटते हुए लेव्सकी सोचता जा रहा था, . . .शुक्रवार. . . .

एक प्याला चाकलेट किसी ने उसे पीने को दी; उसने अपनी जीभ और होंठ जला लिए—दिमाग में वही एक शब्द नाच रहा था, शुक्रवार . . . .शुक्रवार. . . .

किसी कारण वह उस शब्द को दिमाग से नहीं निकाल पा रहा था; शुक्रवार के सिवा और दूसरी चीज के बारे में वह सोच ही नहीं पा रहा था और उसके धुँधले हुए दिमाग में नहीं, दिल में यह बात स्पष्ट थी कि

वह इस शनिवार को नहीं जा सकेगा, उसके सामने निकोदिम एलिक्जैन्ड्रिच खड़ा था—साफ-सुथरा, बाल गंजे सिर पर चिकनाई से कढ़े हुए, और वह कह रहा था लेव्सकी से, 'खाने के लिए कुछ लो. . . .'

मैरिया कान्सटैन्टिनोवना अतिथियों को कैट्या की परीक्षा-फल दिखा रही थी और कह रही थी, 'आजकल स्कूल में बहुत सफलता प्राप्त कर पाना बहुत मुश्किल हो गया है क्योंकि पढ़ाई का स्तर इतना ऊँचा हो गया है. . . . .'

और एक लजाई हुई मासूम कुवाँरी की तरह, जो लोगों की तारीफों से और भी घबड़ा गई थी, कैट्या शर्म से केवल इतना कह पाई—'माँ !'

लेव्सकी ने भी परीक्षा-फल देखा और तारीफ की। विषय: धर्म-ग्रन्थ, भाषा, आचरण, ५—४—सब कुछ उसकी आँखों के सामने तैर रहा था और इस सब के बीच में 'शुक्रवार. . .शुक्रवार' का अनवरत और पागल कर देने वाला संगीत और निकोदिम एलिक्सैंन्ड्रिच और कैट्या के लाल कुँवारे गाल—इस सबसे लेव्सकी का मन इतनी जोर से ऊबा कि उसकी इच्छा हुई कि वह चीख पड़े। वह पागलों की तरह सोच रहा था, क्या यह सम्भव है—क्या यह सम्भव है कि मैं नहीं जा सकूँगा यहाँ से ?

उपस्थित लोगों ने दो ताश की मेजें जोड़कर रख दी थीं और सब लोग 'चिट्ठी-डाकिए' का खेल खेलने के लिए इकट्ठा होने लगे थे।

और ऊपर से मुस्कराते हुए वह एक शब्द लेव्सकी के दिमाग में घूम रहा था—शुक्रवार...शुक्रवार. . .जेब से उसने एक पेन्सिल निकाली—'शुक्रवार. . .शुक्रवार...'

वह अपनी परिस्थितियों पर विचार करना चाहता था लेकिन विचार करने से डरता था। वह इस बात से घबड़ा गया था कि सैमाएलैन्को उस झूठ को जान गया है जो औरों के साथ-साथ वह स्वयं अपने आप से भी बोल रहा था। जब कभी वह अपने भविष्य के बारे में सोचता था तो कभी अपने विचारों को एक विशेष सीमा से आगे नहीं बढ़ने देता था—

वह किसी गाड़ी में बैठकर चल देगा, और उसकी तमाम समस्याएँ सुलझ जायेंगी—इससे आगे वह कभी नहीं सोचता था। दूर, खेतों में चमकती हुई किसे धुँधले चिराग की तरह, यह विचार अक्सर उसके दिमाग में आता था कि पीटर्सबर्ग की किसी गली में—बहुत दिनों बाद—उसे अपना कर्ज अदा करने और नादियेजदा फ्योद्रोवना से पीछा छुड़ाने के लिए एक छोटा सा झूठ बोलना पड़ेगा—लेकिन झूठ केवल एक ही बार तो बोलना पड़ेगा और उसके बाद तो उसका नया जीवन शुरू हो जायगा। ठीक ही तो है—एक छोटे से झूठ से भविष्य में वह कितना बड़ा सुख और सत्य पा सकेगा।

लेकिन अब जब सैमाएलैन्को के स्पष्ट इनकार ने लेव्सकी के भ्रम और धोखे के आवरण को झटके से नोच दिया था तो लेव्सकी को एकाएक यह लगा कि धोखा और झूठ उसे बहुत दिनों बाद ही नहीं बोलना पड़ेगा बल्कि आज और कल और परसों—हमेशा बोलते रहना पड़ेगा। यहाँ से निकल पाने के लिए उसे नादियेजदा से, जिन लोगों का कर्ज था उनसे, अपने ऊपर के अधिकारियों से झूठ बोलना पड़ेगा और पीटर्सबर्ग पहुँच कर रुपया पाने के लिए उसे अपनी माँ से झूठ बोलना पड़ेगा, उसे कहना पड़ेगा कि उसने नादियेजदा से सम्बन्ध तोड़ लिए हैं और इस पर भी उसकी माँ उसे पाँच सौ रूबुल से अधिक देगी नहीं। इस प्रकार वह सैमाएलैन्को को भी धोखा देगा क्योंकि, जैसा उसने वादा किया था, वह उसे थोड़े समय में कर्ज का सब रुपया नहीं लौटा सकेगा। और बाद को जब नादियेजदा पीटर्सबर्ग आ जायगी तब तो उसे बराबर धोखा देते रहना पड़ेगा ताकि वह अपने आप को उस औरत से मुक्त कर सके और फिर वही आँसू और उदासी और उबाहट—एक घृणित जीवन और पश्चात्ताप—जीवन बिल्कुल भी अच्छा या नया या सुखी नहीं होगा इस सब के बाद भी। केवल धोखा और झूठ—और कुछ नहीं। लेव्सकी की कल्पना में झूठ का एक पूरा पहाड़ उठ खड़ा हुआ। इस सबको, छोटे-छोटे झूठ बराबर बोलने के स्थान में एक ही छलाँग में फाँद लेने

के लिए लेव्सकी को दृढ़-निश्चित काम करने होंगे—जैसे बिना कुछ कहे इसी समय उठ पड़ना और हैट उठाकर बिना पैसे के—बिना किसी को कुछ बताये चल देना। लेकिन लेव्सकी सोच रहा था कि ऐसा उसके लिए सम्भव नहीं है।

...शुक्रवार...शुक्रवार...शुक्रवार... वही एक शब्द फिर से लेव्सकी के दिमाग में घूमने लगा।

खेल की मेज के चारों तरफ बैठे हुए लोग छोटी-छोटी चिट्ठियाँ लिख कर निकोदिम एलिक्सैन्ड्रिच के एक पुराने हैट में डाल रहे थे। जब ढेर काफी बड़ा हो गया तो कोस्तया ने, जो डाकिये का काम कर रहा था, मेज के चारों ओर घूम-घूम कर चिट्ठियाँ बाँटनी शुरू कर दी। पादरी, कैट्या और कोस्तया, जिन्हें मजेदार पत्र मिले थे, बहुत खुश थे और स्वयं भी दूसरों को विनोदपूर्ण पत्र लिख रहे थे।

'हम लोगों को उस विषय पर बात कर ही लेनी चाहिए,' नादियेजदा ने एक छोटे से पत्र में पढ़ा। उसने पत्र पढ़कर मैरिया कान्सटैन्टिनोवना की तरफ देखा और मैरिया ने अपनी चिकनी हँसी हँसते हुए सिर हिला दिया।

किस विषय पर बात? नादियेजदा सोच रही थी, अगर मैं सब बातें कह नहीं सकती तो थोड़ी या दबी हुई बात करने से क्या फायदा।

शाम को घर से चलने के पहले उसने लेव्सकी का 'क्रैवेट' ठीक से बाँधा था और इस एक छोटे सीधे-सादे काम करने से उसकी आत्मा में उदासी और करुणा भर गई थी। लेव्सकी के चेहरे पर स्पष्ट चिन्ता की छाप, उसका खोया-खोया-सा रहन, उसके चेहरे का पीलापन—एक विशाल और अनोखा अन्तर जो उसके अन्दर पिछले कुछ दिनों से आ गया था और यह बात कि वह स्वयं उससे अपना एक बहुत भयंकर राज छिपाए हुई थी और यह कि शाम को लेव्सकी का 'क्रैवेट' बाँधते समय उसका हाथ कुछ काँप गया था—इस सब से उसके मन में यह विचार

उठ खड़ा हुआ था कि अब उन्हें अधिक दिन साथ नहीं रहना है। वह लेव्सकी की तरफ ऐसे देख रही थी मानों भगवान की मूर्ति की तरफ भय और पश्चात्ताप की दृष्टि से देख कर कह रही हो--मुझे क्षमा करो—क्षमा कर दो!

उसके ठीक सामने एचमियानोव बैठा था और उसकी काली आँखें—प्यार में डूबी हुईं—बराबर नादियेजदा फ्योद्रोवना की तरफ घूर रही थीं। नादियेजदा के अन्तर में वासना करवटें लेने लगी और स्वयं लज्जित भी हो गई और उसे भय लगने लगा कि उसकी तकलीफें और उदासी भी उसे ज्यादा देर अनैतिक वासना की बाहों में समर्पण करने से रोक सकेंगी और शराब से मदहोश किसी व्यक्ति की तरह उसमें अपने आपको रोकने की शक्ति भी नहीं रहेगी।

उसने निश्चय किया कि वह यहाँ से चली जाय ताकि उस जीवन से बच सके जो उसके लिए पतन का मार्ग है और लेव्सकी के लिए शर्म की बात है। वह लेव्सकी से रोकर प्रार्थना करेगी कि वह उसे चला जाने दे और यदि वह नहीं मानेगा तो वह बिना कुछ कहे ही चल देगी। वह उसे न तो बताएगी और न जानने देगी कि क्या हुआ—वह चाहती थी कि लेव्सकी के मन में वह अपना पवित्र व्यक्तित्व किसी तरह कायम रख सके।

'मैं तुमसे प्यार करता हूँ—प्यार—प्यार—प्यार,' उसने पढ़ा। यह पत्र एचमियानोव का लिखा हुआ था।

वह दूर जाकर किसी अनजान जगह में बस जायगी और वहाँ काम करके लेव्सकी को बिना उसको भी जाहिर हुए रुपया, कपड़े और तम्बाकू आदि भेजती रहेगी और जब बहुत-बहुत बुड्ढी हो जायगी तब उसके पास लौटकर आयेगी या पहले भी यदि वह कभी बहुत बीमार पड़ जायगा और सेवा-सुश्रुषा के लिए उसे उसकी आवश्यकता होगी। जब बुढ़ापे में लेव्सकी को पता चलेगा कि वह उसे छोड़कर क्यों चली गई और उसने

उससे विवाह क्यों नहीं किया तो वह उसके बलिदान की महानता समझ लेगा और उसके अपराध को क्षमा कर देगा।

'तुम्हारी नाक बहुत लम्बी है,' यह कोस्तया ने लिखा होगा या पादरी ने।

नादियेजदा सोच रही थी कि लेव्सकी से बिदा लेते समय वह उसे कस के आलिंगन में बाँध लेगी, उसका हाथ प्यार से चूम लेगी और आजीवन उससे प्रेम करने की शपथ खायेगी और जब वह कहीं दूर किसी अजनबी शहर में अजनबियों के बीच में होगी तो यह विचार उसे रोज बल देगा कि कहीं दूर उसका एक प्रेमी है—एक मित्र है—ऐसा ज़िसे वह प्यार करती है—एक महान व्यक्ति जिसके दिल में उसकी पवित्र तस्वीर अब भी कायम है।

'अगर तुम मुझे नहीं मिलती हो तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं कुछ गड़बड़ करूँगा। भले आदमियों के साथ तुम ऐसा व्यवहार नहीं कर सकती—यह समझ लो।' यह किरीलिन का पत्र था।

१३

लेव्सकी को दो पत्र मिले। उसने एक खोलकर पढ़ा, उसमें लिखा था, 'अभी न जाओ, प्रिय दोस्त।'

यह कौन लिख सकता है? लेव्सकी सोच रहा था, सैमाएलैन्को तो हो नहीं सकता। पादरी? नहीं—क्योंकि वह यह नहीं जानता कि मैं जाने वाला हूँ। वान कोरेन—शायद! अवश्य सैमाएलैन्को ने बात फैलाई होगी।

दूसरे पत्र में भी उसी छिपी हुई लिपि में लिखा था, 'कोई व्यक्ति शनिवार को नहीं जा सकेगा।'

क्या बेवकूफी का मजाक है, लेव्सकी ने मन ही मन नाराज होकर कहा। वह सोच रहा था, . . . शुक्रवार . . . शुक्रवार . . .

उसके गले में लगा जैसे कुछ अटक गया है। उँगली से कालर ढीला करके वह खाँसा लेकिन गले से खाँसी के बजाय हँसी का कहकहा निकल पड़ा।

'हा-हा--हा !' लेव्सकी हँसे जा रहा था, 'हा--हा--हा ! किस बात पर हँस रहा हूँ मैं ? हा--हा--हा !'

उसने अपनी हँसी रोकने की कोशिश की—अपना मुँह हाथ से दबाया लेकिन रुकी हुई हँसी उसका गला और सीना घोटने लगी और उसका हाथ मुँह को न रोक सका।

ओफ ! क्या बेवकूफी की बात है, हँसी से लोट-पोट होते हुए वह सोच रहा था, क्या मेरा दिमाग खराब हो गया है ?

हँसी और तेज होती गई। लेव्सकी ने चाहा कि वहाँ से उठ पड़े लेकिन उसके पैरों ने उसका साथ न दिया और बिना उसकी इच्छा के उसका दाहिना हाथ मेज पर कागजों को मरोड़ता हुआ नचाता रहा। उसने देखा कि लोग हैरान हैं—सैमाएलैन्को गम्भीर है और डरा हुआ है, वान कोरेन की आँखों में रूखी उपेक्षा और उपहास है और तब उसे लगा कि उसे 'हिस्टीरिया' का दौरा हो गया है।

कितनी भद्दी—कितनी शर्मनाक बात है लेव्सकी सोच रहा था और आँखों से निकलते हुए आँसुओं की गर्मी वह अपने चेहरे पर महसूस कर रहा था, . . .कितनी शर्म की बात है। ऐसा तो मेरे साथ नहीं हुआ था—

उसकी बगल में हाथ डालकर और सिर के पीछे हाथ लगाकर उसे वहाँ से उठा कर ले गए—एक गिलास उसकी आँखों के सामने चमचमाया, उसके भिंचे हुए दाँतों से टकराया और पानी उसके सीने पर गिर पड़ा। वह एक छोटे कमरे में था जिसमें दूध-सी सफेद चादरों से ढँके हुए दो पलँग बराबर-बराबर पड़े थे। एक पर पड़ा हुआ वह सिसक रहा था।

'अरे, कोई खास बात नहीं है—कोई खास बात नहीं है,' सैमाए-लैन्को बार-बार कह रहा था, 'ऐसा तो होता ही रहता है।'

भय और आशंका से काँपती हुई नादियेजदा पलँग के पास खड़ी थी और बार-बार पूछ रही थी, 'क्यों क्या हुआ इन्हें—क्या हुआ है? भगवान के लिए कोई बताओ।'

और वह मन में सोच रही थी, किरीलिन ने तो इन्हें कुछ नही लिख दिया?

'अरे, कोई बात नहीं है,' हँसते और आँसू बहाते हुए लेव्सकी ने कहा, 'तुम जाओ, प्रिये, चिन्ता की कोई बात नहीं है।'

उसके चेहरे पर न घृणा थी, न अरुचि। इसीलिए यह तो निश्चित है कि लेव्सकी को 'उस' के बारे में कुछ नहीं मालूम। इस विचार से नादियेजदा को बहुत सन्तोष मिला और वह वापस ड्राइंग-रूम में चली गई।

'परेशान मत हो,' पास बैठकर, हाथ में हाथ ले कर मैरिया कान्स-टैन्टिनोवना ने कहा, 'यह तो अभी ठीक हुआ जा रहा है। आखिर, पुरुष भी तो हम लोगों की तरह ही कमजोर होते हैं। फिर तुम दोनों एक भीषण मानसिक उथल-पुथल में होकर गुजर रहे हो, यह तो कोई भी समझ सकता है। और हाँ—प्रिये—मैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही हूँ। आओ, बात कर लें।

'नहीं, इस समय बात नहीं करेंगे,' लेव्सकी की सिसकियाँ सुनकर नादियेजदा ने कहा, 'मेरा मन इस समय बहुत उदास और गिरा हुआ है. . .अब मुझे घर जाने की आज्ञा दो—बस!'

'अरे—यह क्या कह रही हो?' मैरिया कान्सटैन्टिनोवना ने घबड़ा कर कहा, 'क्या बिना खाना खिलाए मैं तुम्हें चला जाने दूँगी? अभी हम भोजन करेंगे—उसके बाद तुम चली जाना।'

'मैं बहुत दुखी और उदास हूँ...' नादियेजदा ने बहुत धीमे से कहा और अगर वह कुर्सी नहीं पकड़ लेती तो शायद गिर ही पड़ती।

'लेव्सकी को हिस्टीरिया का दौरा हुआ है,' ड्राइंग-रूम में घुसते हुए वान कोरेन ने कहा। लेकिन नादियेजदा को वहाँ देखकर वह चकराया और लौट पड़ा।

दौरा खत्म हो जाने के बाद, चारपाई पर बैठकर लेव्सकी सोचने लगा, कितनी शर्म की बात है! मैं लड़कियों की तरह शोर मचा रहा था। अवश्य ही उस अवस्था में मैं घृणा के योग्य रहा होऊँगा। मैं पीछे की सीढ़ियों से चला जाता हूँ...लेकिन नहीं। इससे तो लगेगा कि मैं अपने इस दौरे से घबड़ा गया हूँ। मुझे तो दिखाना चाहिए जैसे मैं इसे केवल एक आकस्मिक मजाक मानता हूँ।

उसने उठकर शीशे में अपनी सूरत देखी और कुछ देर बाद ड्राइंग-रूम में चला गया।

'यह लो मैं आ गया, उसने मुस्कराते हुए कहा हालाँकि उसे बहुत शर्म लग रही थी और दूसरे लोगों को भी उसके सामने। बैठते हुए उसने कहा, 'जरा सोचो तो. . .मैं यहाँ बैठा था कि अचानक इस तरफ बहुत भयानक दर्द उठा—उसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था—मैं भी नहीं सह सका और . . . और उसी के कारण यह मजाक हुआ। यह युग ही ऐसा है जिसमें आदमी के अन्तर पर बड़ा खिंचाव पड़ता है—कोई क्या कर सकता है?'

खाने के वक्त उसने कुछ शराब पी। वह कभी-कभी अचानक अपने सीने के बगल में सहराने लगता था मानों अब भी थोड़ा-सा दर्द बाकी हो। वह जानता था और देख रहा था कि नादियेजदा के सिवा किसी ने उसकी इस बात का विश्वास नहीं किया है।

नौ बजे के बाद, वे सब लोग सड़क पर टहलने के लिए आ गए।

नादियेजदा, इस डर से कि रास्ते में किरीलिन अवश्य कुछ बात करेगा, मैरिया कान्सटैन्टिनोवना और बच्चों के साथ चल रही थी। भय और दुख के कारण वह कमजोरी महसूस कर रही थी और उसे लग रहा था कि उसे बुखार आ जायगा। वह बहुत थकी हुई थी और उससे चला भी नहीं जा रहा था। लेकिन वह घर नहीं गई क्योंकि उसे मालूम था कि किरीलिन या एचमियानोव या दोनों उसका पीछा करेंगे। किरीलिन ठीक पीछे निकोदिम एलिक्सैन्ड्रिच के साथ चल रहा था और बड़बड़ाता जा रहा था :

'मैं लोगों को मुझसे मजाक करने की, खेलने की आज्ञा कभी नहीं देता हूँ—कभी नहीं।'

सड़क से वह लोग सागर-तट वाले बरामदे में की तरफ गए, फिर सागर-तट पर टहलते हुए देर तक पानी की सतह पर झिलमिलाती हुई रोशनी देखते रहे। वान कोरेन उन लोगों को यह समझा रहा था कि यह चमक किस कारण है।

१४

'अच्छा, मेरा तो 'विन्ट' खेलने का समय आ गया, लोग मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे,' लेव्सकी ने कहा, 'इसलिए मुझे तो आज्ञा दीजिए।'

'एक मिनट ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ,' उसके हाथ में हाथ डालते हुए नादियेजदा ने कहा।

दोनों ने लोगों से बिदा माँगी और चल दिए। किरीलिन ने भी कहा कि उसे भी उसी तरफ जाना है और वह भी उन लोगों के साथ चल दिया।

अच्छा अब जो होना होगा----वह होगा ही नादियेजदा ने सोचा।

और उसे लगा कि उसके दिमाग की सारी अपवित्र स्मृतियाँ रूप

लेकर उसके साथ अन्धेरे में चल रही हैं—जोर से साँसें लेती हुई—और वह, स्वयं, कमजोर पतिंगे की तरह जो स्याही में गिर चुकी है, मार्ग पर कष्ट से चल रही और लेव्सकी की बाँह और शरीर के पार्श्व भाग को स्याही से गन्दा कर रही है। और यदि किरीलिन ने कोई अनुचित बात की तो इसमें दोष किरीलिन का नहीं, स्वयं उसका होगा। एक समय था जब कोई उससे इस स्तर पर बात नहीं कर सकता था जैसे किरीलिन करता है। लेकिन उसने अपने वातावरण से—अपने वर्ग से अपने को निकाल लिया है और उस लंगर को तोड़ दिया है जिससे वह टिकी हुई थी—उस सूत्र को भंग कर दिया है जिसके द्वारा वह समाज से जुड़ी हुई थी—यह दोष किसका है? स्वयं अपनी वासना से पागल होकर, वह एक अजनबी की ओर मुसकराई थी शायद केवल इसलिए कि वह लम्बा और तन्दुरुस्त आदमी था। लेकिन दो बार उससे सम्बन्ध होने के बाद वह उससे ऊब गई थी—उसे छोड़ दिया था। क्या अब किरीलिन को उसके साथ मन-मानी करने का अधिकार नहीं था?

'अच्छा, प्रिये, यहाँ से मैं तो चलता हूँ,' लेव्सकी ने उस स्थान पर पहुँचकर जहाँ से उसका रास्ता अलग होता था कहा, 'इलिया मिहेलिच तुम्हें घर तक छोड़ देंगे।'

और किरीलिन की ओर सिर हिलाकर, तेजी से पार करके वह शेशकाव्सकी के यहाँ चला गया। वहाँ खिड़कियों से कमरे की रोशनी बाहर निकल रही थी। फाटक खोलकर अन्दर जाने और फाटक बन्द हो जाने की आवाज इन दोनों ने सुनी।

'देखो, मैं तुम्हें बताऊँ,' किरीलिन ने कहा, 'एचमियानोव या और किसी की तरह मैं बच्चा नहीं हूँ—मैं तुम्हारी ओर से गम्भीर सम्बन्ध चाहता हूँ।'

नादियेजदा का दिल जोर से धड़कने लगा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

'अचानक तुम्हारा रुख बदल जाने से पहले मैं यह समझा कि तुम केवल खेल में मुझे तरसा रही हो,' किरीलिन कहता रहा, 'लेकिन मैं अब यह देख रहा हूँ कि शरीफ आदमियों से सम्बन्ध रखना तुम्हें आता ही नही है। तुम मुझसे केवल खेलना चाहती थी जैसे तुम उस छोकरे—एचमियानोव—से खेल रही हो। लेकिन मैं शरीफ आदमी हूँ और मैं चाहता हूँ कि मेरे साथ उचित बर्त्ताव करो। अब बोलो कब . . .'

'देखो, मैं बहुत दुखी हूँ,' नादियेजदा रोने लगी और अपने आँसुओं को छिपाने के लिए उसने मुँह फेर लिया।

'मैं भी तो दुखी हूँ, लेकिन क्या किया जाय?' इतना कहकर किरीलिन कुछ देर चुप रहा, फिर स्पष्ट और निश्चित रूप से बोला, 'देखो, मैं तुम्हें फिर यह बता देना चाहता हूँ कि आज इस समय यदि मेरी इच्छा पूरी नही करोगी तो मैं आज ही तुम्हें बदनाम करना शुरू कर दूँगा।'

'आज छोड़ दो,' नादियेजदा ने गिड़गिड़ाकर कहा और क्योंकि आवाज अत्यन्त दयनीय और कमजोर थी इसलिए वह स्वयं अपनी आवाज नहीं पहचान पाई।

'नहीं, मैं तुम्हें सबक देना चाहता हूँ...इस अशिष्टता के लिए क्षमा करना लेकिन तुम्हें सबक देना आवश्यक है—मुझे खेद है लेकिन मैं मजबूर हूँ। मैं दो दफा अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति चाहता हूँ—आज और कल। कल के बाद तुम बिल्कुल स्वतन्त्र होगी जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है।'

अपने मकान के पास पहुँचकर नादियेजदा रुक गई। 'देखो, मुझे जाने दो,' नादियेजदा ने काँपते हुए कहा। अन्धकार में सिर्फ किरीलिन का सफेद कोट दिखाई पड़ रहा था, 'तुम ठीक हो बिल्कुल—मैं वास्तव में बहुत खराब औरत हूँ—दोष मेरा ही है लेकिन मुझे छोड़ दो—मैं प्रार्थना करती हूँ।'

'मुझे अफसोस है लेकिन मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। मैं अवश्य तुम्हें सबक देना चाहता हूँ और मेरा स्त्रियों में कोई विश्वास नहीं है।'

'मैं दुखी हूँ......' नादियेजदा सागर की लहरों का अनवरत शोर सुन रही थी—सितारों से जड़ा हुआ आसमान देख रही थी और एकाएक उसकी इच्छा हुई कि जो कुछ होना है उसे जल्दी से जल्दी हो जाने दे और बात खत्म कर दे—जिन्दगी के मनहूस अहसास से परे हो जाय जिसमें सागर हैं—सितारे हैं—आदमी हैं—बीमारियाँ हैं।

और रूखे स्वर में उससे कहा, 'लेकिन मेरे घर में तो नहीं। कहीं और ले चलो।'

'म्यूरिडाव के यहाँ ठीक रहेगा।'

'यह कहाँ है?'

'पुरानी दीवार के पास।'

सड़क पर वह कुछ दूर तेजी से चलती रही और फिर एक गली में मुड़ गई जो पहाड़ों की ओर जाती थी। अन्धेरा था। गली की जमीन पर पास के मकानों की खिड़कियों से आती हुई रोशनी के धब्बे जगह-जगह पड़ रहे थे और उसे लग रहा था कि बार-बार पतिंगे की तरह वह स्याही में गिर जाती है और बार-बार रोशनी में आ जाती है। एक स्थान पर किरीलिन को ठोकर लगी, गिरते-गिरते बचा और हँसने लगा।

'शराब पिए हुये है, नादियेजदा ने सोचा, लेकिन जाने दो...जाने दो...यही सही।

लेव्सकी, नादियेजदा और किरीलिन के बाकी लोगों से बिदा लेकर चल पड़ने के कुछ बाद ही एचमियानोव भी चल पड़ा वहाँ से और नादियेजदा के पीछे चलने लगा उससे पूछने के लिए कि क्या वह उसके साथ नाव पर सैर करने चलेगी। उसके घर पहुँचकर चहारदीवारी के पार एचमियानोव ने झाँका लेकिन खुली हुई खिड़कियों में पूर्ण अन्धकार था।

'नादियेजदा फ्योद्रोवना?' उसने पुकारा। एक मिनट बाद आवाज आई 'कौन है?' यह आवाज ओल्गा की थी।

'नादियेजदा फ्योद्रोवना हैं ?'

'नहीं, अभी लौटी नहीं हैं।'

ताज्जुब की बात है, एचमियानोव सोचने लगा, घर ही तो आई थी वह।

सड़क पर टहलता हुआ वह उस गली में पहुँचा जिसमें शेशकाव्सकी का मकान था। खिड़की से दिखाई पड़ रहा था कि लेव्सकी कोट उतारे तन्मयता से पत्तों की तरफ देख रहा है।

'आश्चर्य है, अगर वह घर पर नहीं है तो गई कहाँ ?'

वह फिर लौट कर नादियेजदा के मकान गया—खिड़कियों में अब भी अन्धेरा था। धोखा दिया है उसने, एचमियानोव सोच रहा था क्योंकि दोपहर को मैरिया कान्सटैन्टिनोवना के यहाँ नादियेजदा ने वादा किया था कि शाम को वह उसके साथ नाव में जायगी।

किरीलिन के मकान की बत्तियाँ भी बुझ गई थीं और फाटक के पास एक बेन्च पर एक सिपाही सो रहा था। एचमियानोव की समझ में सब बात आ गई। उसने तय किया कि अब वह घर जायगा लेकिन न जाने कैसे वह फिर नादियेजदा के मकान के पास पहुँच गया। फाटक के पास की बेन्च पर वह हैट उतार कर बैठ गया क्योंकि उसे लग रहा था कि उसका सिर क्रोध और ईर्ष्या से जल रहा है।

नगर के गिरजे की घड़ी दिन में केवल दो ही बार बोलती थी—आधे दिन पर और आधी रात पर। आधी रात का घंटा बोलने के कुछ ही बाद उसे तेजी से चलते हुए कदमों की आहट सुनाई दी।

'कल शाम को फिर म्यूरिडाव के यहाँ आठ बजे। अच्छा, बिदा।' एचमियानोव ने किरीलिन की आवाज पहिचान ली।

बाग के पास नादियेजदा भी दिखाई दी लेकिन बिना यह देखे कि एचमियानोव बेन्च पर बैठा है, वह एक छाया की तरह उसके पास से

होकर निकल गई और फाटक को खुला छोड़कर घर के अन्दर चली गई। अपने कमरे में पहुँचकर उसने एक मोमबत्ती जलाई, जल्दी से कपड़े उतारे लेकिन बिस्तर पर लेटने के बजाय वह एक कुर्सी के पास झुक कर बैठ गई और उसके दोनों तरफ बाहें लपेट कर उसने कुर्सी पर अपना सिर झुका दिया।

लेव्सकी दो बजे के बाद लौटकर आया।

१५

इस निश्चय पर पहुँचकर, कि झूठ उसे एक बार नहीं, बार-बार बोलना है, लेव्सकी अगले दिन एक बजे के बाद सैमाएलैन्को के यहाँ रुपया माँगने गया ताकि यह पक्का हो जाय कि वह शनिवार को जा सकेगा। पिछली रात के दौरे के बाद—जो कि दिमाग की उस हालत में लेव्सकी को और भी ज्यादा शर्मनाक लगा था—तो इस स्थान पर रहने की बात सोचना भी असम्भव ही था। यदि सैमाएलैन्को फिर उन्हीं शर्तों पर अड़ा तो उसकी बात पर राजी होकर वह रुपया ले लेगा और अगले दिन जाते समय यह कह देगा कि नादियेजदा ने जाने से इनकार कर दिया है। और आज शाम को वह नादियेजदा को इस बात के लिए मना भी लेगा कि यह व्यवस्था उसके लिए भी लाभदायक है। यदि वान कोरेन के प्रभाव के कारण फिर भी न माना या उसने कोई नई शर्त्तें लगाई और रुपया देने से इनकार किया तो लेव्सकी उसी दिन शाम को किसी माल लादने वाले जहाज पर नोवीएथान या नोवोरासिस्क चला जायगा, वहाँ से कोई अप· मानजनक तार भेज देगा और तब तक वहाँ रुका रहेगा जब तक उसकी माँ उसे आने के लिए रुपया न भेज दे।

सैमाएलैन्को के मकान में घुसते ही ड्राइंग-रूम में उसकी भेंट वान कोरेन से हुई। वहाँ कोरेन खाना खाने आया हुआ था और आदत के अनुसार एक पुरानी तस्वीरों के 'एल्बम' में अजनबी चेहरे देख रहा था।

उसे देखते ही लेव्सकी ने सोचा, यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि यह यहाँ है; यह तो बाधक होगा। और फिर वह स्पष्ट बोला—'गुड-मार्निङ्ग।'

बिना उसकी ओर देखे ही वान कोरेन ने उत्तर दिया, 'गुड-मार्निङ्ग।'

'क्या एलिक्जैन्डर डैविडिच हैं?'

'हाँ, चौके में।'

लेव्सकी चौके में गया लेकिन यह देखकर कि सैमाएलैन्को सलाद बना रहा है, वह ड्राइंग-रूम में वापस लौट आया। यूँ तो हमेशा लेव्सकी को वान कोरेन की उपस्थिति में घबड़ाहट होती थी लेकिन इस समय तो विशेषतया यह चिन्ता लगी थी कि कहीं उस दिन के दौरे की बात न शुरू हो जाय। एक मिनट कमरे में खामोशी रही। एकाएक वान कोरेन ने निगाह उठा कर पूछा, 'कल के बाद से तबियत कैसी है?'

'बिल्कुल ठीक,' लेव्सकी का चेहरा लाल हो गया, 'कोई खास बात तो थी नहीं...'

'कल तक तो मेरा ख्याल था कि इस प्रकार की बीमारी केवल औरतों को ही होती है लेकिन.....'

लेव्सकी के चेहरे पर एक क्रोध भरी मुस्कराहट आई और वह सोचने लगा, कितनी बत्तमीजी है इसकी यह। यह जानता है कि यह विषय मेरे लिए कितना अप्रिय है.... और फिर मुस्कराते हुए ही वह स्पष्ट बोला, 'हाँ-अजीब बेहूदा हरकत थी कल वह मेरी। आज सुबह से उसी को सोच कर हँसी आ रही है। इस प्रकार के दौरों में सब से अजीब बात यह होती है कि मालूम होता है कि यह मजाक हो रहा, दिल में हँसी आती है लेकिन साथ ही साथ सिसकना भी पड़ता है। इस 'न्यूरोटिक' युग में हम सब अपनी 'नर्व्ज' के दास होते हैं—वे ही हमारे स्वामी होते हैं और जो चाहते हैं हमारे साथ करते हैं, सभ्यता ने हमारी बहुत बड़ी हानि की है.....'

बात करते हुये ही, लेव्सकी को यह बुरा लग रहा था कि वान कोरेन उसकी तरफ इतनी गम्भीरता से टकटकी लगा कर देख रहा था मानो वह उसका किसी पुस्तक की तरह अध्ययन कर रहा हो और स्वयं उसे अपने ऊपर क्रोध आया कि यद्यपि वह वान कोरेन को पसन्द नहीं करता फिर भी बात करते समय उसके चेहरे पर मुस्कराहट क्यों है।

'लेकिन इतनी बात अवश्य है,' लेव्सकी ने कहा, 'कि इस दौरे के और भी दूसरे कारण हैं—एक तो मेरा स्वास्थ पिछले कुछ दिनों से बहुत खराब है, इसके साथ गहरी ऊब, लगातार आर्थिक कठिनाइयों का रहना, लोगों का और किसी काम का अभाव. . . .वास्तव में हालत किसी गवर्नर से ज्यादा खराब है।'

'हाँ—तुम्हारी परिस्थितियाँ वास्तव में बहुत खराब हैं और उनके सुधरने की आशा नहीं !' वान कोरेन ने उत्तर दिया।

इन शान्त ठंडे शब्दों ने—जिनमें उपहास भी था और लेव्सकी के भविष्य के बारे में एक अनचाही आलोचना—लेव्सकी को नाराज कर दिया। उसे पिछली शाम की वान कोरेन की आँखो की घृणा और उपेक्षा याद आ गई। वह कुछ देर चुप रहा और फिर बिना मुस्कराए हुए उनसे पूछा, 'मेरी परिस्थिति के बारे में तुम्हें क्या मालूम ?'

'अभी तो स्वयं तुम ही उसकी बात कर रहे थे। इसके अतिरिक्त तुम्हारे मित्रों को तुम्हारे अन्दर इतनी दिलचस्पी है कि सारे दिन तुम्हारे बारे में कुछ न कुछ सुनता रहता हूँ,' वान कोरेन ने शान्त आवाज में कहा।

'कौन दोस्त ? सैमाएलैन्को ?'

'हाँ—वह भी !'

'तो मै एलिक्जैन्डर डैविडिच और अपने अन्य मित्रों से कह दूँगा कि मेरे बारे मे इतनी बात न किया करें।'

'यह लो, सैमाएलैन्को आ गए—पहले इन्हीं से कह दो।'

'तुम्हारा बात करने का ढंग मेरी समझ मे नहीं आता,' लेव्सकी ने कहा मानो एकाएक उसे यह भास हुआ कि वान कोरेन उससे घृणा करता है, उसका मजाक उड़ा रहा है और उसका सबसे कट्टर शत्रु है।

'इस तरह किसी और से ही बात किया करो,' लेव्सकी ने आहिस्ता से कहा क्योंकि घृणा के कारण उसके गले से आवाज नहीं निकल रही थी और उसका सीना दबा जा रहा था जैसे पिछली रात को हँसी के कारण हुआ था।

खाली कमीज पहने, पसीने से तर और मुँह लाल किये हुए, सैमाए-लैन्को कमरे में आया।

'ओह ! तुम !' उसने कहा, 'गुड-मार्निङ्ग मित्र ! खाना खा लिया ? देखो, तकल्लुफ मत करना ! खाना खा लो।'

'एलिक्जैन्डर डैविडिच,' खड़े होकर लेव्सकी ने कहा, 'हालाँकि मैंने तुमसे एक निजी काम के सम्बन्ध में सहायता माँगी थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि तुम बुद्धिमानी त्याग दो और मेरे निजी रहस्यो का आदर न करो ?'

'क्या कह रहे हो ?' सैमाएलैन्को ने हैरान होकर पूछा।

'अगर तुम्हारे पास रुपया न हो तो,' उत्तेजना में लेव्सकी की आवाज ऊँची उठ गई थी, 'मत दो—इनकार कर दो। लेकिन तुम्हें यह अधिकार तो नहीं कि हर जगह यह बात फैला दो कि परिस्थिति खराब है—मेरी दशा शोचनीय है। ऐसे मित्र की उदारता और सहायता की मुझे जरूरत नहीं है जो बात ज्यादा करे और मदद बहुत कम। तुम चाहे अपनी उदा-रता की कितनी भी डींग मारो लेकिन तुम्हें मेरे जाती मामलों के बारे में अफवाहें फैलाने का कोई अधिकार नहीं है।'

'कौन से जाती मामले ?' सैमाएलैन्को के समझ में बात आ नहीं रही थी और उसे धीरे-धीरे गुस्सा आने लगा था, 'अगर तुम यहाँ लड़ने-गाली

अ०—८

बकने आये हो तो अच्छा होगा कि यहाँ से निकल जाओ। बाद को लौट आना।'

उसे यह नियम याद आया कि अगर पड़ोसी से लड़ाई हो जाय तो सौ तक गिनती गिननी चाहिए और इससे दिमाग शान्त हो जायगा। और वह तेजी से गिनने लगा।

'मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अब तुम मेरे बारे में परेशान मत हो,' लेव्सकी ने कहा, 'मेरी ओर मत ध्यान दो। और इस बात का किसी से क्या मतलब कि मैं क्या करता हूँ—कैसे रहता हूँ। हाँ—मैं जानता हूँ मैं कर्जमन्द हूँ, शराब पीता हूँ, किसी दूसरे की पत्नी के साथ रहता हूँ, मुझे दौरे आते हैं, मैं साधारण हूँ, मैं कुछ दूसरों की तरह महान नहीं हूँ। लेकिन इसका किसी से क्या मतलब ? दूसरों के प्रति विश्वास और आदर करना सीखो।'

'माफ करना भाई,' सैमाएलैन्को अब तक पैंतीस तक गिन चुका था, 'लेकिन...'

'दूसरों के व्यक्तित्व का आदर करो,' बात काटते हुए लेव्सकी ने कहा, 'यह और लोगों के झगड़ों के बारे में बराबर बातें करना, यह आहें भरना और हमदर्दी दिखाना, अन्दर घुसकर दूसरों के भेद का पता लगाना, छिपकर सुनना—क्या वाहियात है। कर्ज देने के लिए शर्त्त ऐसे लगाते हैं मानो मैं कोई छोटा बच्चा हूँ। भगवान ही जानता है कि मेरे साथ कितना खराब व्यवहार किया जा रहा है। मुझे कुछ नहीं चाहिए,' क्रोध और उत्तेजना से लेव्सकी बोला—उसे डर लगा कि दौरा कहीं फिर न आ जाय। तो मैं शनिवार को नहीं जा सकूँगा—यह बात उसके दिमाग में बिजली की तरह चटकी। फिर वह बोला, 'मैं कुछ नहीं चाहता। केवल इतना चाहता हूँ कि मेरे लिए इतनी चिन्ता और परवाह करना छोड़ दो। न मैं बच्चा हूँ और न पागल और मैं तुमसे फिर प्रार्थना करता हूँ कि मेरी देख-रेख छोड़ दो।'

पादरी कमरे में आया और लेव्सकी को इतना उत्तेजित होकर प्रिंस वारान्सटाप के चित्र के सामने रोषपूर्ण भाषण देते हुए देखकर, वह दर-वाजे के पास ही सहम कर खड़ा हो गया।

'यह मेरी आत्मा में इस प्रकार बराबर झाँकने की यह चेष्टा,' लेव्सकी ने कहा, 'मेरे आत्म-सम्मान के लिए अपमानजनक है और मै इन भेदियों से यह प्रार्थना करता हूँ कि वह इस प्रकार की जासूसी करना छोड़ दें। बहुत हो गया।'

'क्या कहा—क्या कहा?' सैमाएलैन्को ने कहा। वह सौ तक गिनती गिन चुका था। उसका चेहरा लाल हो गया और वह लेव्सकी के करीब गया।

'यही कि बहुत हो गया,' उत्तेजना में जोर से साँस लेते हुए लेव्सकी ने कहा और अपना हैट उठा लिया।

'मै एक डाक्टर हूँ—भद्रवर्ग में मेरा जन्म हुआ है और मैं सिविल काउन्सिलर भी हूँ,' सैमाएलैन्को ने जोर देकर कहा, 'मैंने कभी भेद जानने का या जासूसी का काम नहीं किया है और मैं किसी से अपमानित होने के लिए तैयार नहीं हूँ।' सैमाएलैन्को ने चिल्लाते हुए कहा, 'अपनी जबान बन्द करो!'

पादरी ने सैमाएलैन्को को कभी इतने क्रोध में, इतनी शान और अकड़ में, इतना लाल या खूँख्वार नहीं देखा था। वह मुँह बन्द करके बाहर भाग गया और वहाँ जोर से हँस पड़ा।

आँखों के आगे आये हुए धुन्ध में से लेव्सकी ने देखा कि वान कोरेन पतलून की जेब में हाथ डालकर प्रतीक्षा की मुद्रा में सतर खड़ा है मानो इस बात का इन्तजार कर रहा हो कि अब क्या होने वाला है। उसकी यह शान्त मुद्रा लेव्सकी को बहुत धृष्ट और अपमानजनक लगी। सैमाएलैन्को चिल्लाया, 'अपने अन्तिम शब्द वापस लो।'

लेव्सकी यह भूल गया था कि उसके अन्तिम शब्द क्या थे। उसने कहा, 'मुझे अकेला छोड़ दो। मैं कुछ नहीं चाहता—केवल इतना चाहता हूँ कि तुम और यह जर्मन-यहूदी मुझे परेशान न करें और यदि ऐसा न होगा तो मैं तुमसे लड़ूँगा !'

'अब मैं समझा !' मेज के पीछे से सामने आते हुए वान कोरेन ने कहा, 'जाने से पहले मि० लेव्सकी मुझसे द्वन्द करना चाहते हैं। मैं उन्हें निराश नहीं करूँगा ! मैं आपकी ललकार स्वीकार करता हूँ।'

'ललकार,' लेव्सकी ने नीची आवाज में वान कोरेन के पास आकर घृणा से उसकी ओर देखते हुए कहा, 'हाँ ! मैं तुमसे नफरत करता हूँ—नफरत करता हूँ।'

'सहर्ष ! कल सुबह, कर्बेले की 'दुहन' के पास। बाकी सब बातें मैं आपकी इच्छा पर छोड़ता हूँ। अब निकल जाइए यहाँ से !'

'मैं तुमसे नफरत करता हूँ,' गहरी साँस लेते हुए लेव्सकी ने कहा, 'मैं तुमसे बहुत दिनों से घृणा करता रहा हूँ। द्वन्द—हाँ, अवश्य !'

'एलिक्जैन्डर डैविडिच, यहाँ से निकालो इन्हें वर्ना मैं चला जाऊँगा,' वान कोरेन ने कहा, 'यह मुझे काट खायगा !'

वान कोरेन की ठंडी, भावहीन आवाज से सैमाएलैन्को शान्त हुआ। एकदम जैसे वह फिर ठीक हो गया—वैसे ही जैसे पहले था। लेव्सकी की कमर में दोनों हाथ डालकर, वान कोरेन से दूर ले जाते हुए वह दोस्ती की भावुकतापूर्ण आवाज में कहता रहा, 'दोस्तों—तुम लोग एक दूसरे से नाराज हो गए हो यही बहुत काफी है. . . .काफी है !'

सैमाएलैन्को की मुलायम, मित्रतापूर्ण आवाज सुनकर लेव्सकी को लगा कि न जाने कौन सी भीषण बात उसके साथ हो गई है—मानो कोई गाड़ी उसके ऊपर से निकल गई हो। वह एकदम से रो पड़ा और हाथ हिलाता हुआ कमरे के बाहर भाग गया।

थोड़ी देर बाद सागर-तट के होटल के बरामदे में बैठा हुआ लेव्सकी सोच रहा था, यह महसूस करना कि कोई स्वयं घृणा का पात्र है, दयनीय, घृणास्पद और बेबस अवस्था में उस व्यक्ति के सामने पड़ना जो घृणा करता है—हे भगवान कितना कष्ट होता हैं इसमें !

ब्रान्डी और ठंडे पानी का एक घूँट पीकर लेव्सकी का दिमाग ठीक हुआ। वान कोरेन का शान्त और गर्वीला चेहरा उसकी आँखों के सामने ज्यादा सफाई से आ गया, उसकी आँखों का कलवाला भाव, कालीन नुमा कपड़े की उसकी कमीज, उसकी आवाज, उसका सफेद हाथ—सब उसकी आँखों के आगे नाचने लगे और एक भारी, उत्तेजक और भूखी नफरत उसके दिल में तड़पने लगी —सन्तोष पाने के लिये चीखने लगी। अपने विचारों में लेव्सकी ने वान कोरेन को भूमि पर पटक दिया और पैरों से कुचल डाला। उसे कुछ देर पहले की घटनाएँ साफ-साफ याद आईं और उसे आश्चर्य हुआ कि उससे बात करते वक्त वह मुस्करा कैसे पा रहा है और क्यों और कैसे उसने एक छोटे से नगर के अदना निवासियों की बातों की परवाह की जिन्हें कोई नहीं जानता और जो ऐसे छोटे से नगर में रहते हैं जिसका नाम नक्शे पर भी ढूँढ़ पाना मुश्किल होगा और जिसका नाम पीटर्सबर्ग के सभ्य समाज के किसी व्यक्ति ने कभी न सुना होगा। अगर यह मनहूस नगर किसी तरह अचानक जल जाय या बर्बाद हो जाय तो इसके समाचार में कोई इतनी दिलचस्पी न लेगा जितनी पुराने फर्नीचर के नीलाम में ली जाती है। और वह कल वान कोरेन को मार देगा या जिन्दा छोड़ देगा इसका भी क्या महत्त्व ? यह अच्छा होगा कि गोली उसके हाथ या पाँव में मार दी जाय और उसके पंगु हो जाने पर उसका मजाक उड़ाया जाय और उस टाँग टूटे हुये की तरह, जो घास में ही कहीं खो जाता है, उसे साधारण, बेमाने लोगों के इस समूह में अपनी शारीरिक यातना सहने के लिये छोड़ दिया जाय।

लैव्सकी ने जाकर शेशकाव्सकी को सब बातें बताईं और उससे

कहा कि वह उसका 'सेकन्ड'* बन जाय और इसके बाद वह दोनों डाक-तार के सुपरिन्टेन्डेन्ट के पास गए कि दूसरा 'सेकन्ड' बन जाय और उसके बाद वहीं रुक कर खाना खाया। खाने के समय काफी हँसी-मजाक चलता रहा। लेव्सकी ने स्वयं अपने ऊपर ही मजाक किये कि वह तो पिस्तौल चलाना भी नहीं जानता।

'इन महोदय को अच्छा सबक पढ़ाना चाहिए...' उसने कहा।

खाने के बाद यह लोग ताश खेलने बैठ गये। लेव्सकी खेलते समय शराब पीते हुए यह सोच रहा था कि द्वन्द लड़ने की प्रथा बेवकूफी की प्रथा है क्योंकि तर्क को वह साफ नहीं करती है—उलझा देती है। लेकिन कभी-कभी उसके बिना काम भी नहीं चलता है। इसी किस्से में लीजिए, वान कोरेन ने जो कुछ कहा और किया उस पर मुकदमा तो चलाया नहीं जा सकता था। और इस द्वन्द से यह लाभ भी था कि उसके बाद लेव्सकी का उस नगर में रहना भी असम्भव कर देता था। खेल में दिलचस्पी बढ़ने लगी और वह ज्यादा पी गया। काफी देर बाद वह फुर्सत से वहाँ से गया।

लेकिन जब सूरज डूबने लगा और साँझ का अँधियारा घिरने लगा तो लेव्सकी परेशान होने लगा। यह भय मृत्यु की सम्भावना के कारण नहीं था क्योंकि ताश खेलते समय पता नहीं उसे कैसे विश्वास हो गया था कि इस द्वन्द का फल कुछ निकलेगा नहीं; यह भय उस अज्ञात घटना का था जो कल सुबह पहली बार उसके जीवन में होने वाली थी और आने वाली रात का भय था...वह जानता था कि रात लम्बी होगी, नींद नहीं आयेगी और उसे न केवल वान कोरेन और उसकी घृणा के बारे में सोचना पड़ेगा बल्कि उन बहुत से झूठों के बारे में सोचना पड़ेगा जो उसके लिए अब कहना अनिवार्य हो गया था और जिनसे बचने

---

* सेकन्ड : वह व्यक्ति जो द्वन्द के नियमों के अनुसार प्रत्येक प्रतिद्वन्दी के साथ रहते हैं।

की न तो उसमें शक्ति थी और न योग्यता। उसे लगा कि जैसे अचानक उसे कोई बीमारी हो गई है और एकदम ताश में और दोस्तों में उसकी दिलचस्पी खत्म हो गई। वह बेचैन हो गया और घर जाने की आज्ञा माँगने लगा। घर जाकर बिना हिले-डुले वह बिस्तर में लेट जाने के लिए बेचैन था और रात की बातों के बारे में सोचने की तैयारी करना चाहता था। शेशकाव्सकी और सुपरिन्टेन्डेन्ट उसे घर छोड़कर वान कोरेन के यहाँ द्वन्द की व्यवस्था पूरी करने चले गए।

अपने घर के पास लेव्सकी को एचमियानोव मिला। युवक बहुत उत्तेजित था और हाँफ रहा था।

'मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था, इवान आन्द्रीच,' उसने कहा, 'प्रार्थना करता हूँ कि फौरन मेरे साथ चले आओ।'

'कहाँ ?'

'कोई तुमसे मिलना चाहता है—तुम उसे नहीं जानते हो—किसी जरूरी काम से और उसने यह प्रार्थना की है कि तुम एक ही मिनट के लिए चले आओ। वह तुमसे किसी सम्बन्ध में बात करना चाहता है... उसके लिए वह जिन्दगी और मौत का सवाल है...'

'लेकिन वह है कौन ?' लेव्सकी ने पूछा।

'उसने कहा है कि उसका नाम तुम्हें न बताऊँ।'

'उससे कह दो कि आज मुझे अवकाश नहीं है, हो सका तो कल...'

एचमियानोव भौचक्का रह गया, 'यह कैसे कर सकते हो तुम! वह तुमसे कोई बहुत आवश्यक महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहता है। अगर तुम आज ही नहीं चले तो कोई भयानक घटना हो जायगी।'

'ताज्जुब है...' लेव्सकी बड़बड़ाया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एचमियानोव इतना उत्तेजित क्यों है और इस साधारण स्थिति में ऐसी कौन सी महत्वपूर्ण बातें—कौन से रहस्य हो सकते हैं कि...

'अजीब बात है,' उसने कुछ हिचकते हुए दोहराया, 'लेकिन चलो—देखें क्या बात है हालाँकि मुझे बिल्कुल परवाह नहीं।'

एचमियानोव तेजी से आगे चल रहा था और लेव्सकी उसके पीछे चल रहा था। एक सड़क पर चलने के बाद वे एक गली में मुड़ गए।

'क्या वाहियात है यह सब!' लेव्सकी ने कहा।

'एक मिनट—बस—एक मिनट... हम लोग नजदीक आ ही गए हैं।'

पुरानी दीवार के पास वह एक तंग गली में घुस गए जो दो खाली मकानों के बीच में थी और फिर एक मैदान में घुसकर एक छोटे से मकान की तरफ बढ़े।

'यह म्यूरीडाव का मकान है?' लेव्सकी ने कहा।

'हाँ।'

'लेकिन हम पीछे की गलियों से क्यों आये—समझ में नहीं आता। सड़क से क्यो नहीं आये—नजदीक पड़ता...'

'इसकी चिन्ता न करो...'

लेव्सकी को बड़ा अजीब लगा कि एचमियानोव उसे पीछे के दरवाजे से लाया है और उसे इशारा कर रहा है कि वह खामोशी से आगे जाय।

'इस तरफ...' आहिस्ता से किवाड़ खोलकर पंजो के बल चलते हुए एचमियानोव को आगे बुलाया—'बहुत खामोशी से—भगवान के लिए—नहीं तो वे लोग सुन लेंगे।'

फिर एक गहरी साँस खींचकर उसने कहा, 'उस दरवाजे को खोलकर अन्दर जाओ—डरो नहीं!'

लेव्सकी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। उसने दरवाजा खोला

और एक नीचे पटे हुए कमरे में घुसा। मेज पर एक मोमबत्ती जल रही थी।

'कौन है ?' पास के कमरे से किसी की आवाज आई, 'क्या तुम हो म्यूरीडाव ?'

लेव्सकी दूसरे कमरे में पहुँच गया—एक बिस्तर पर किरीलिन और नादियेजदा लेटे हुए थे।

किसी ने क्या कहा वह नहीं सुन सका—वहाँ से लड़खड़ाता हुआ बाहर निकला—पता नहीं वह कैसे सड़क पर आ गया। वान कोरेन के लिए घृणा—उसकी परेशानी—सब उसके दिल से गायब हो गए। घर लौटते समय वह अजीब ढंग से अपना दाहिना हाथ हिला रहा था और नीची निगाह किये सँभाल-सँभाल कर उस जमीन पर चल रहा था जो चिकनी थी। घर पहुँचकर वह अपनी अध्ययनशाला में देर तक टहलता रहा, हाथ मलता, कंधे उचकाता मानों उसका कोट और कमीज उसके शरीर पर बहुत छोटे हो—फिर एक मोमबत्ती जलाकर मेज के पास कुर्सी डालकर बैठ गया।

१६

'मानवी हित के जिन शास्त्रों की चर्चा तुम कर रहे हो, वे मानवी जिज्ञासा और विचार को केवल तभी सन्तुष्ट कर सकेंगे जब वह विज्ञान और प्रगति के साथ कदम मिलाकर चल सकेंगे और नए पैदा होने वाले प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता उनमें बनी रहेगी। दोनों का संगम वैज्ञानिक माइक्रास्कोपों के नीचे होगा या साहित्य में या किसी नवीन धर्म में—यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन मैं यह समझता हूँ कि ऐसा सम्भव होने के पहले दुनिया बर्फ की तहों के नीचे दब चुकेगी। समस्त मानवी ज्ञान में ईसा के उपदेशों का स्थान वास्तव में उच्चतम है। लेकिन जरा यह सोचो

कि उनके भी कितने विभिन्न अर्थ लगाए जा सकते हैं। कुछ लोग उससे यह अर्थ निकालते हैं कि हमें अपने सब पड़ोसियो को प्यार करना चाहिए ; उनके अतिरिक्त जो सैनिक हैं, अपराधी हैं या पागल हैं। सैनिको को वह युद्ध में मर जाने देते हैं, अपराधियो को वह मरने या दंड भुगतने देते हैं और अन्तिम श्रेणी के व्यक्तियों को वह विवाह करने से रोकते हैं। दूसरे पक्ष के विचारक उसी दर्शन का दूसरा अर्थ निकालकर कहते हैं कि बिना किसी भेद-भाव के हमें अपने सब पड़ोसियों को प्यार करना चाहिये—लोगो के गुणों या अवगुणो की ओर ध्यान दिये बगैर। उनके अनुसार यदि क्षय का कोई रोगी या हत्यारा या पागल आपकी लड़की से शादी करना चाहे तो आपको स्वीकृति दे देनी चाहिये। यदि कमजोर या असभ्य जातियाँ मानसिक या शारीरिक रूप से शक्तिशाली वर्ग पर आक्रमण करें तो उन्हें अपने को बचाना नहीं चाहिए। यह प्यार के लिए प्यार का तर्क, कला के लिए कला के तर्क की तरह, यदि व्यापार और सशक्त हो जायगा तो मानवता को उस मार्ग पर ले जायगा जिसका अन्त केवल सर्वनाश होता है और इस प्रकार यह सबसे बड़ा और अक्षम्य अपराध होगा—ऐसा जिससे बड़ा और भयानक संसार में अब तक नहीं हुआ होगा। इस प्रकार किसी भी चीज के कितने ही मतलब निकाले जा सकते हैं और क्योकि संख्या इतनी अधिक है, इसलिए गम्भीर विचार इनमें से किसी से भी सन्तुष्ट नहीं होता है और अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। इसलिए तुम्हें कभी कोई प्रश्न धार्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोण से नहीं पूछना चाहिए क्योकि इस प्रकार तुम प्रश्न को उत्तर से ज्यादा दूर हटा देते हो।'

पादरी वान कोरेन की बात बहुत ध्यान से सुन रहा था। थोड़ा सोचकर उसने पूछा, 'क्या दार्शनिको ने वह अनिवार्य नैतिक सिद्धान्त बनाया है, जो हर व्यक्ति में स्वभाविकतः होता है। या भगवान ने व्यक्ति के शरीर के साथ उसकी सृष्टि की है।'

'मै नहीं जानता। क्योकि यह सिद्धान्त इतना व्यापक है कि हर

जाति में, पीढ़ी में और काल में पाया जाय तो यह सोचा जा सकता है कि इसका निर्माण और उत्पत्ति मनुष्य के शरीर के तत्त्वों के साथ हुई है। विज्ञान या दर्शन उसे खोजता या बनाता नहीं है—वह तो 'है' और होगा भी। मेरे कहने का आशय यह नहीं है कि वह सिद्धान्त इतना पार्थिव या जड़ है कि उसे किसी दिन 'माइक्रास्कोप' के नीचे देखा जा सकेगा लेकिन मानव के पार्थिव व्यक्तित्व से उसका सम्बन्ध इस प्रकार दिखाया और प्रमाणित किया जा सकता है कि इस सिद्धान्त के गड़-बड़ होने से ही संतुलन बिगड़ता है और फलस्वरूप मानसिक बीमारियाँ या पागलपन होता है,' वान कोर्गेन ने कहा।

'ठीक। इसलिए जिस प्रकार पेट हमारे खाना खाने के लिए आग्रह करता है उसी प्रकार हमारा नैतिक सिद्धान्त यह आदेश देगा कि हम अपने पड़ोसियों से प्यार करें ? लेकिन व्यक्ति—स्वाभाविक व्यक्ति—अपने आप से प्यार करने के कारण आत्मा और विवेक की बात अनसुनी कर देता है। हम से बहुत से टेढ़े सवाल मन में उठते हैं—हम उन सवालों का उत्तर किसके पास माँगने जायँ यदि तुम हमें यह मना कर देते हो कि हम अपने प्रश्न दार्शनिक दृष्टिकोण से न पूछें ?' पादरी ने सवाल किया।

'उस थोड़े से विज्ञान से पूछो जो हमारे पास है। प्रमाण और वस्तु तर्क पर विश्वास रखो। यह ठीक है इस ज्ञान का क्षेत्र और मात्रा हमारे पास अभी पर्याप्त नहीं है—कम है लेकिन दर्शन से कम तरल या हवाई है। मान लो कि नैतिक सिद्धान्त और कानून यह कहते हैं कि हम अपने पड़ोसी से प्यार करें ? तब ? प्रेम तो उन बातों में उपस्थित और प्रमाणित होना चाहिए जिनसे हम उन तमाम चीजों का नाश करते हैं जिनसे वर्त्त-मान या भविष्य में मानवता को डर या खतरा है। हमारे ज्ञान और प्रमाण यह बताते हैं कि जो व्यक्ति मानसिक या शारीरिक स्तर पर असन्तुलित होते हैं, उन्हीं से सभ्यता को और मानवता को खतरा है। इसलिए तुम्हें

इस असन्तुलित वर्ग से संघर्ष करना चाहिए और यदि तुम उन्हें ठीक नहीं कर सकते तो उन्हें शक्तिहीन करने और खतरनाक न रहने देने के लिए तुम्हारे अन्दर शक्ति और बुद्धि होनी चाहिए'।

'तो क्या शक्तिशाली की कमजोरी पर विजय ही प्रेम है ?' पादरी ने प्रश्न किया।

'बिल्कुल।'

'लेकिन तुम्हें यह मालूम है कि शक्तिशालियो ने ही ईसा को क्रूश पर जड़ा था ?' पादरी ने तनिक आवेश में कहा।

'वास्तव में जिन्होने ईसा को क्रूश पर जड़ा वह ताकतवर नहीं—कमजोर थे। संस्कृति जीने की स्पर्धा और प्राकृतिक चुनाव का अन्त करने या कम से कम कमजोर करने के लिए संघर्ष करती रहती है—इसी के कारण कमजोर आदमी ज्यादे संख्या में इधर-उधर फैल जाते हैं और शक्तिशाली वर्ग पर भी हावी हो जाते हैं। कल्पना करो किसी तरह तुम मधु-मक्खियां में मामूली मानवी आदर्श पहुँचा देते हो। तब क्या होगा ? वे मक्खियाँ जिन्हें मार देना चाहिए जिन्दा रहेंगी, सब शहद खत्म कर देंगी, और बाकी मक्खियों को खराब करेंगी या मार डालेंगी—इस प्रकार शक्तिशालियों का नैतिक पतन कराकर, शक्तिहीन उन पर प्रभुत्व जमा लेगी। यही बात आज हमारे साथ हो रही है—कमजोर ताकतवर को दबा रहा है। उस पर अत्याचार कर रहा है। जंगली जातियो में—जिन्हें सभ्यता ने कहीं से भी नहीं छुआ है—जो सबसे तगड़ा, चतुर और भला होता है वही नेतृत्व करता है—वही मालिक होता है, एकाधिकारी नेता होता है। लेकिन हम सभ्य जातियों ने ईसा को क्रूश पर चढ़ाया है और बराबर चढ़ाते रहते हैं...इसलिए हमारे अन्दर कोई कमी है... उस कमी को हमें अपने अन्दर से निकाल देना चाहिए अन्यथा यह गलतियाँ बराबर होती रहेंगी।'

'लेकिन कमजोर और ताकतवर में आप पहचान कैसे करेंगे?' पादरी ने कहा।

'ज्ञान और प्रमाण की सहायता से। जो क्षय या स्काफुला के रोगी होते हैं वे सूरत से पहचाने जा सकते और जो पागल या चरित्रहीन होते हैं वे अपने कामों से।'

'लेकिन गलतियाँ भी तो हो सकती हैं।'

'हाँ—लेकिन जब तेज वर्षा होने की सम्भावना हो तो पैर भिगोने से क्या डरना।'

'यह तो दर्शन है,' पादरी ने हँसते हुए कहा।

'कतई नहीं! इस स्कूली दर्शन ने तुम्हारे मस्तिष्क को इतना बिगाड़ दिया है कि हर बात में तुम्हें एक धुन्ध-सा दिखाई पड़ता है। युवावस्था में तुम्हें ऐसी शिक्षा दी गई जो तुम्हें वास्तविकता से दूर ले जाकर अनिश्चितता के कोहरे में छोड़ देती है। शैतान की तरफ आँखें मिलाकर देखो और यदि वह शैतान है तो उससे स्पष्ट कह दो कि वह शैतान है और महान दार्शनिको के पास उत्तर पाने के लिए दौड़ते हुए मत जाओ।' फिर कुछ रुककर वान कोरेन ने बात जारी रखते हुए कहा, 'दो और दो, चार होता है—पत्थर को केवल पत्थर ही कहा जा सकता है। कल एक द्वन्द होना है। हम लोग कहेंगे कि द्वन्द का विचार बेकार और मूर्खतापूर्ण है, कि उसका युग खत्म हो चुका, कि वास्तव में इस प्रकार के द्वन्द में और शराबियों की लड़ाई में कोई अन्तर नहीं है लेकिन फिर भी हम रुकेंगे नही! हमारे अन्दर कोई ऐसी शक्ति है जो शायद हमारे विवेक से ज्यादा सशक्त है। हम बराबर चिल्लाते रहते हैं कि युद्ध, जुल्म है, इन्सानियत का कत्ल है, हम खून देखें तो बेहोश हो जाएँ लेकिन जरा फ्रान्सीसी या जर्मन हमारा अपमान तो कर दें फिर देखो हम कितने जोशीले हो जाते हैं और हर्ष से चीखते हुए दुश्मन पर हमला करते हैं। और तुम और तुम्हारा गिरजा उन हथियारो को आशीर्वाद

दोगे जो मानव जाति का नाश करेंगे और दूसरे देश और जातियाँ हमारी वीरता से प्रभावित और उत्साहित होंगी । फिर यह बात सिद्ध होती है कि हमारे दर्शन से यदि ऊँची नहीं तो ज्यादा सशक्त चीज है । हम लोग उसे नहीं रोक सकते जैसे हम सागर के ऊपर ऊँचे उड़ते हुए मेघ-खंड को नहीं रोक सकते । बनो मत, नाक सिकोड़कर यह मत कहो, 'ओह, यह तो पुरानी और मूर्खता की बात है—धार्मिक ग्रन्थों के विपरीत ।' उस बात का सामना करो, यह मानो कि वह विवेकपूर्ण है और जब वह शक्ति क्षय के रोगियों का नाश करना चाहे तो गलत समझे हुए धार्मिक सिद्धान्तों से उसकी राह में रोड़े न बिछाओ । लेस्काव डैनिला नामक एक व्यक्ति की एक कहानी बता रहा था । डैनिला को शहर के बाहर एक कोढ़ी मिला, उसने उसे आश्रय दिया, खाना दिया, ठंड से बचाया—ईसा और धर्म के प्यार के कारण । लेकिन यदि वह डैनिला वास्तव में मानव जाति का हितैषी होता तो उस कोढ़ी को नगर से जितनी अधिक दूर हो सकता ले जाता और एक गढ़े में ढकेल कर दफना देता और इस प्रकार जो, शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं, उनको बचाता । मेरा विचार तो यह है कि ईसा ने एक विवेकपूर्ण चतुर और लाभदायक प्रेम की शिक्षा दी है ।'

'कैसे आदमी हो तुम ?' पादरी ने हँसते हुए कहा, 'तुम ईसा में विश्वास नहीं करते, फिर बार-बार उनका नाम क्यो लेते हो ?'

'नहीं—मैं विश्वास करता हूँ । अन्तर केवल इतना है कि तुम्हारी तरह से नहीं, अपनी तरह से ।' फिर एकदम से हँसते हुए खुश होकर वान कोरेन ने पादरी की कमर में हाथ डालते हुए पूछा, 'क्या द्वन्द में हमारे साथ चलोगे ?'

'गिरजे के आदेश इस बात की आज्ञा नहीं देंगे, वरना मैं चलता ।'

'तुमसे बात करने में मुझे बहुत आनन्द आता है,' हँसते हुए वान कोरेन ने कहा ।

'तुम कहते हो कि तुम विश्वास करते हो,' पादरी ने कहा, 'यह

तुम्हारा विश्वास कैसा है ? मेरे एक चाचा महन्त हैं और उनका विश्वास इतना प्रबल है कि सूखे के समय जब वह बाहर मैदान में वर्षा के लिए प्रार्थना करने जाते हैं तो साथ मे बरसाती और छाता भी ले जाते हैं ताकि लौटते समय भीग न जाएँ। यह विश्वास है। जब वह ईसा के बारे में बात करते हैं तो उनके चेहरे पर एक अजीब दैवी चमक आ जाती है और जो किसान—आदमी और औरतें—उनकी बात सुनते होते हैं, उनकी आँखो से आँसुओ का सैलाब उमड़ पड़ता है। विश्वास से तो पहाड़ भी हिलाए जा सकते हैं।' पादरी ने हँसते हुए वान कोरेन के कंधे पर हाथ मारा, 'हाँ—और तुम हमेशा कुछ पढ़ाते-सिखाते रहते हो, सागर की गहराई को टटोलते रहते हो, लोगो को द्वन्द के लिए ललकारते रहते हो—और सब चीज वैसे की वैसी ही रहती है लेकिन जब कोई कमजोर बूढ़ा व्यक्ति पवित्र आत्मा से एक भी शब्द कह देगा या कोई नया मोहम्मद हाथ में तलवार लिए, अरब से यहाँ आयेगा तो सब चीजो में उथल-पुथल हो जायगी और इस यूरोप में एक भी व्यवस्था ऐसी न होगी जो टूट कर बिखर जाय।'

यह लोग बात कर ही रहे थे कि सागर तट की ओर सैमाएलैन्को दिखाई पड़ा। पादरी और वान कोरेन को देखकर वह उनकी ओर आया।

'मेरे ख्याल से सब तैयारी हो गई होगी,' हाँफते हुए सैमाएलैन्को बोला, 'तुम्हारे 'सेकन्ड' गोवोराव्सकी और ब्वायको होंगे। वह लोग सुबह पाँच बजे चल देंगे'। फिर आकाश की तरफ देखते हुए उसने कहा, 'देखो, कैसे बादल छा गए हैं—कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहे है ! जल्दी ही वर्षा होगी।'

'तुम तो हमारे साथ चलोगे, न ?' वान कोरेन ने कहा।

'नहीं—भगवान बचाए—मै वैसे ही बहुत चिन्तित हूँ। मेरे बजाय उस्तीमोविच जायगा—मैंने उससे बात कर ली है।'

दूर सागर के ऊपर बिजली कौंध उठी और बादल जोर से धड़-धड़ा उठे।

'तूफान के पहले कितनी घुटन होती है,' 'वान कोरेन ने कहा, 'मैं दावे के साथ कहता हूँ कि तुम लेव्सकी के यहाँ से उससे गले मिलकर रोकर आ रहे होंगे।'

'मैं क्यों जाता उसके यहाँ ?' घबड़ा कर सैमाएलैन्को ने कहा।

लेकिन सूरज डूबने से पहले वह देर तक इस आशा में मुख्य रोड पर चक्कर काटता रहा कि लेव्सकी से भेंट हो जाय। अपने जल्दबाजी के उस व्यवहार और उसके बाद मैत्री के भावों के एकाएक फूट पड़ने के कारण वह बहुत शर्मिन्दा था। वह मजाक के स्वर में लेवस्की से वास्तव में माफी माँगना चाहता था—उससे बहुत कुछ कहना चाहता था—उसे दिलासा देकर सुकून पहुँचाना चाहता था और यह कहना चाहता था कि द्वन्द की प्रथा को वह मध्य युग की जंगली प्रथाओं में से एक मानता है लेकिन भाग्य की इच्छा यही है कि द्वन्द के द्वारा दोनों में सुलह और मित्रता हो जाय, कि अगले दिन वे दोनों काबिल और भले व्यक्ति एक दूसरे पर गोली चलाकर हाथ मिलायेंगे, एक दूसरे के गुणों की सराहना करेंगे और मित्र बन जायँगे। लेकिन लेव्सकी से उसकी मुलाकात हुई नहीं।

'मैं क्यों जाता उससे मिलने ?' सैमाएलैन्को ने फिर कहा, 'मैंने तो उसका अपमान किया नहीं था—उसने मुझे अपमानित किया था। यह बताओ कि उसने मुझ पर आरोप क्यों लगाया ? मैंने उसका क्या बिगाड़ा था ? मेरे कमरे में घुसते ही बिना मेरे कुछ नाराज करने वाली बात कहे हुए, वह मुझे भेदिया कहता है—वाह, यह भी खूब हुआ। तुम बताओ कि बात आखिर शुरू कैसे हुई ? तुमने उससे क्या कहा था ?'

'मैंने उससे कहा था कि उसकी परिस्थिति बिल्कुल खराब है। मैं ठीक था। या तो भले आदमी या बदमाश, किसी भी परिस्थिति से बाहर

निकलने का रास्ता ढूँढ़ लेते हैं लेकिन ऐसा व्यक्ति, जो एक ही समय में भला आदमी और बदमाश बनना चाहे, कैसे किसी भी परिस्थिति के बाहर निकल सकते हैं। लेकिन अब तो ग्यारह बज गया और कल हमें जल्दी भी उठना है।'

एकाएक हवा का एक बहुत जोरदार झोंका आया—उसने तट पर की बालू को उड़ा दिया, भँवर में नचा दिया—उसकी आवाज ने सागर की चीखों को भी दबा दिया।

'तूफ़ान आनेवाला है,' पादरी ने कहा, 'चलना चाहिए, आँखों में धूल भरी जा रही है।'

वे लोग चल पड़े। हाथ में हैट लिए हुए, आह भरकर, सैमाए-लैन्को ने कहा: 'मेरा ख्याल यह है कि आज रात को मै सो नही सकूँगा।'

'अरे, इतना उत्तेजित और परेशान मत हो,' वान कोरेन ने हँसते हुए कहा, 'अपने दिमाग को शान्ति दो—कल के द्वन्द में कुछ होगा नहीं। लेव्सकी बहुत उदारता से हवा में गोली चलायेगा—और वह कर ही क्या सकता है और मैं तो शायद गोली चलाऊँगा ही नहीं। लेव्सकी के कारण गिरफ्तार हो जाना—यह तो बेकार सी चीज है। अरे हाँ, द्वन्द लड़ने के अपराध में सजा क्या मिलती है?'

'गिरफ्तारी—और यदि एक मर जाय तो दूसरे को तीन साल की सजा,' सैमाएलैन्को ने कहा।

'लेकिन इन हजरत को फिर भी एक बार सबक तो पढ़ाना ही चाहिए।'

उनके पीछे—सागर पर फिर एक बार बिजली चमक उठी थी और इस चमक ने एक क्षण के लिए मकानों के छतों और पहाड़ों को चमचमा दिया था। मुख्य मार्ग के पास तीनों मित्र एक दूसरे से बिदा हुए। जब सैमाएलैन्को कुछ दूर चला गया, उसका आकार अन्धकार में खो

अ०—९

गया और उसके कदमों की आहट खत्म हो गई तो वान कोरेन ने चिल्लाकर कहा, 'बस, यही आशा करता हूँ कि यह मौसम कल हमारे काम में बाधा न पहुँचाए।'

'बिलकुल हो सकता है—भगवान करें जरूर पहुँचाए,' सैमाएलैन्को ने दूर से उत्तर दिया।

'गुड-नाइट।'

'रात के बारे में तुमने कुछ कहा क्या?'

तूफान और सागर की चीखों और बिजली की जोरदार कड़क में बात सुन पाना बहुत मुश्किल था।

'कुछ नहीं,' वान कोरेन ने चीखकर कहा कहा और तेजी से घर लौट पड़ा।

१७

चाहे कल सुबह वह मार दिया जाता है या उसका उपहास करने के लिए उसे जीवन बख्श दिया जाता है—किसी भी हालत में वह बर्बाद तो हो ही गया था। चाहे यह बेइज्जत औरत शर्म या निराश और दुख से अपने को मार लेती है या अपनी यह दयनीय जिन्दगी जीती रहती है रगड़-रगड़ कर—किसी भी हालत में वह बर्बाद तो हो ही चुकी थी...

रात को, मेज के पास बैठा हुआ और हाथ मलते हुए लेव्सकी यही सोच रहा था। एकाएक एक भड़ाके से खिड़कियाँ खुल गईं—कमरे में हवा का एक तूफानी झोंका घुस आया और मेज पर रखे हुए कागज फड़-फड़ाकर उड़ते हुए नीचे आ गए। लेव्सकी ने उठकर खिड़कियाँ बन्द कीं और कागज बटोरने के लिए उठा। उसे अपने शरीर के अन्दर कोई नई बात मालूम हुई—एक अजीब तरह का भोंड़ापन और उसे अपनी हरकतें बहुत अजीब लगीं। वह कातरता से इधर-उधर चल रहा था—

अपनी कोहनियां को पटकता और कन्धे उचकाता। और जब वापस आकर मेज पर बैठा तो फिर वह हाथ मलने लगा। उसके शरीर का लोच जैसे खत्म हो गया था।

जिस दिन मरना हो, उसके पहले की शाम को अपने सब से निकट सम्बन्धी को पत्र लिखना चाहिये। लेव्सकी ने इस बात पर विचार किया और फिर काँपते हुए हाथों से उसने लिखा, 'माँ!'

बस अपनी माँ को लिखना चाहता था—उनसे प्रार्थना करना चाहता था भगवान का वास्ता देकर जिसमें उनका विश्वास था कि वह उस औरत को शरण दें—उसके प्रति दया दिखायें और सुख दें जो बेइन्तहा दुखी है, अकेली है, कमजोर है, गरीब है और यह सब उनके लड़के लेव्सकी के कारण है। वह आशा करता है कि वह सब बातों को भुला देंगी—क्षमा कर देंगी और अपनी दया और भलाई और बलिदान से अपने बेटे के भयानक पाप का प्रायश्चित करेंगी। लेकिन उसे याद आया कि उसकी माँ एक भारी-भरकम औरत है जो रोज सुबह अपने मकान के बाग में अपने नौकर और पालतू कुत्ते के साथ जाकर मालियों और नौकरों को डाँटती-फटकारती है—कि वह कितनी घमण्डी है—और यह सब जब लेव्सकी को याद आया तो उसने वह एक शब्द काट दिया जो वह अभी लिख चुका था।

कमरे की तीनों खिड़कियाँ बिजली के कौंधे से एकाएक चमक उठीं और इसके बाद कमरे में बिजली की बहरा कर देने वाली भीषण कड़क की गूँज भर गई और खिड़की के शीशे उस गूँज से खड़खड़ा उठे। लेव्सकी मेज पर से उठा और खिड़की के पास जाकर उसने एक शीशे पर अपना माथा टेक दिया। बाहर एक भयंकर—शानदार तूफान था। क्षितिज पर तूफानी बादलों से फूट कर बिजली के कौंधे छूट-छूट कर दूर तक फैली हुई लहरों के अन्धेरे सिरों को चमका रहे थे। और दाएँ-बाएँ—मकान के ऊपर बिजली चमक रही थी—चमकती जा रही थी।

'तूफान !' लेव्सकी ने धीरे से कहा, वह किसी से—किसी व्यक्ति या वस्तु से—और अगर कोई न हो तो फिर इस तूफान से—इस कौंधने वाली बिजली से—इन बादलों से ही वह प्रार्थना करना चाहता था—'प्यारे तूफान !'

उसे याद आया कि कैसे बचपन में जब तूफान आता था तो वह हैट लगाकर बाहर बाग में भाग आता था और दो छोटी-छोटी भूरे बाल और नीली आँखों वाली लड़कियाँ उसके पीछे भागा करती थीं, कि कैसे वह वर्षा से बिल्कुल भीग जाते थे, हर्ष से हँसते थे लेकिन जब कहीं बिजली जोर से कड़कती थी तो लड़कियाँ घबड़ाकर उसके पास सिमट आती थीं चुपके से और वह भी घबड़ाकर हाथ से हवा में क्रूश का निशान बनाता था और भय से बुदबुदाता था—'ईसा...ईसा...ईसा...' ओह ! कहाँ गया वह सब—किस अज्ञात सागर में डूब गए पवित्र आनन्द और खूबसूरत जीवन के वह दिन ? अब उसे तूफान से भय नहीं लगता था—प्रकृति से प्रेम नहीं था—अब भगवान उसका नहीं था और न वह भगवान का ! जिन सीधी, विश्वास करने वाली लड़कियों को वह जानता था, उन सबको उसने या उस जैसे किसी और व्यक्ति ने बर्बाद कर दिया था। अब तक अपने तमाम जीवन में उसने अपने बाग में एक भी पेड़, घास का एक भी पत्ता नहीं बोया था; जीवित समाज में रहते हुए उसने एक मक्खी की भी जान नहीं बचाई थी—उसने अब तक केवल बर्बाद किया था, बिगाड़ा था और झूठ बोला था—झूठ—झूठ...

'मेरे पिछले जीवन में क्या कोई ऐसी चीज थी जो पाप नहीं थी ?' वह अपने अतीत में किसी निर्मल, पावन स्मृति को ढूँढ़ रहा था ऐसे घबराहट से जैसे चट्टान से गहरे गर्त्त में गिरता हुआ व्यक्ति छोटी-छोटी झाड़ियों को पकड़ने की कोशिश करता है।

स्कूल में—विश्वविद्यालय में ? नहीं—विश्वविद्यालय में तो नहीं क्योंकि वहाँ पर उसका जीवन तो बेकार था—धोखा था। उसने अपने काम की ओर ध्यान नहीं दिया था और जो कुछ सीखा था—भूल गया

था। देश की सेवा? जो राजकीय नौकरी वह करता था, उसमें वह वेतन लेता था काम न करने के लिए और यह राज्य के प्रति ऐसा विश्वासघात एक ऐसी चोरी थी जिसके लिए सजा नहीं मिलती थी।

उसके अन्दर सत्य को खोजने की कोई जिज्ञासा नहीं थी—उसने सत्य कभी खोजा नहीं था। पाप और असत्य से मन्त्रमुग्ध उसकी आत्मा या तो सोती रही थी या खामोश रही थी। किसी अजनबी की तरह, दूसरे नक्षत्र के वासी की तरह उसने अपने साथी मानव के साधारण जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं ली थी, उनकी यातनाओं के प्रति, उनकी आशाओं, विचारों, आदर्शों, उनके धर्म, उनके ज्ञान और विज्ञान, उनकी जिज्ञासाओं और संघर्षों के प्रति उदासीन रहा था। उसने कभी एक भी अच्छा शब्द नहीं बोला था—एक भी पंक्ति ऐसी न लिखी थी जो भद्दी और बेकार न हो, उसने व्यक्ति और समाज की रत्ती भर सेवा नहीं की थी लेकिन उनका उगाया हुआ अन्न खाया था, उनकी बनायी हुई शराब पी थी, उनकी पत्नियों के साथ व्यभिचार किया था, उनके विचारों पर जिया था और दूसरों पर पलने और बढ़ने वाले अपने इस निरर्थक जीवन को अपनी और दूसरों की दृष्टि में अच्छा और भला और लाभदायक दिखाने के लिये उसने यह स्वांग रचा था कि वह औरों से ऊँचा और बड़ा है। सब—सब झूठ—झूठ—झूठ.....

उसे बिल्कुल ठीक-ठीक याद था कि कुछ देर पहले उसने म्यूरिडाव के मकान में क्या देखा था और घृणा और वेदना की यातना असहनीय थी। किरीलिन और एच्मियानोव घृणा करने योग्य व्यक्ति थे लेकिन वह तो केवल पाप के उस सिलसिले को आगे बढ़ा रहे थे जिसे उसने ही शुरू किया था—वह उसी के तो साथी और चेले थे। इस जवान-कमजोर औरत ने उस पर उतना विश्वास किया था जितना अपने भाई पर करती और उसने अपने पति, अपने मित्रों, से जुदा कर दिया था और उसे यहाँ की इस गर्मी और ऊब में घसीट लाया था। फिर यह आवश्यक था कि हर दिन दर्पण की भाँति उसके आचरण में, उसकी—लेव्सकी की—

काहिली, उसका पतन और पाप और झूठ प्रतिबिम्बित होते रहें--नादियेजदा के पास यही तो सब था जिससे अपना कमजोर, बेरंग और दयनीय जीवन भर पाती। फिर वह उससे तंग आ गया था—ऊब गया था, उससे घृणा करने लगा था लेकिन उसे छोड़ देने का भी साहस न था उसे और तब उसने उस बेचारी औरत को और जकड़ा था झूठ और फरेब के ताने-बानों में...इन व्यक्तियों ने तो केवल बाकी काम पूरा किया था।

लेव्सकी मेज पर आकर बैठा, फिर उठकर खिड़की के पास तक गया। मोमबत्ती बुझाई और कुछ देर बाद फिर जला दी। उसने जोर से स्वयं अपने को बुरा-भला कहा, रोया, सिसका, आहें भरीं, क्षमा की याचना की; कई बार वह मेज की तरफ बेबशी से गया और लिखा--'माँ--' माँ के अलावा उसका कोई और रिश्तेदार या मित्र नहीं था लेकिन माँ उसकी सहायता क्यों और कैसे करती ? और फिर उसे ख्याल आता कि वह कहाँ है और उसकी प्रबल इच्छा होती कि दौड़कर जाए और उसके—नादियेजदा के—चरणों पर गिर पड़े, उसके हाथ-पाँव चूमे, क्षमा माँगे लेकिन वह तो उसी का शिकार थी और वह उससे ऐसे डरता था मानो वह मर गई हो।

हाथ मलते हुए उसने दोहराया, 'मेरा जीवन बर्बाद हो गया—भगवान—फिर मैं क्यों जीवित हूँ—क्यों....'

उसने आकाश से अपने जीवन का धुँधला सितारा निकालकर बाहर फेंक दिया था----सितारा टूट कर गिर पड़ा था और गहरी रात के अन्धकार में उसका मार्ग खो गया था। फिर कभी लौट कर वह आकाश में वापस न जा सकेगा क्योंकि जीवन तो केवल एक बार मिलता है और फिर दोबारा लौट कर नहीं मिलता। काश, वह बीते हुए दिनों और वर्षों को फिर से पा सकता, तो असत्य को सत्य से बदल देता, काहिली को श्रम से, ऊब और दुख को सुख से और उनको वह पावनता लौटा देता जिनसे उसने उसे चुराया था----वह भगवान और भलाई को फिर से खोजता और

पा लेता। लेकिन असम्भव है टूटे हुए—गिरे हुए सितारे को फिर से लाकर सजाना आकाश की आलोक-माला में और क्योंकि यह असम्भव था इसलिए उसकी वेदना और यातना असह्य थीं।

जब तूफान खत्म हो गया तो वह एक खिड़की खोलकर उसके सामने बैठ गया और शान्ति से उस सबके बारे में सोचने लगा जो उसके सामने थे। सम्भवतः वान कोरेन उसे मार ही डालेगा। उसके जीवन के ठंडे और सख्त सिद्धान्त उस सबके नाश करने में विश्वास करते थे जो सड़ा, गला और निरर्थक हो और यदि अन्तिम समय पर वान कोरेन का इरादा बदला भी तो ऐसा केवल इसलिए होगा कि वह उसे बहुत ज्यादा घृणा करता है। और यदि उसका निशाना चूक गया और अपने विपक्षों से अत्यधिक घृणा के कारण उसने केवल घायल करके ही छोड़ दिया तो वह क्या करेगा—कहाँ जायेगा?

'पीटर्सबर्ग?' लेव्सकी ने स्वयं अपने से पूछा। लेकिन उसका मतलब तो होगा कि वह उस प्रकार के जीवन में फिर पहुँच जाए जिसे वह अभी धिक्कार रहा था। और जो व्यक्ति—स्थान बदलने वाले पंछियों की तरह—केवल स्थान-परिवर्तन में भलाई देखता है उसे कहीं कुछ न मिलेगा क्योंकि सब स्थान उसके लिए एक से हैं। तो क्या मानवता में अपना कल्याण ढूँढ़े? किसमें और कैसे? न सैमाएलैन्को की दया और भलाई और उदारता, न पादरी की हँसी, न वान कोरेन की घृणा उसे बचा सकी थी—न उसका उपकार कर सकी थी। नहीं—उसे अपना कल्याण केवल अपने अन्दर ही खोजना चाहिए और यदि वहाँ कोई सम्भावना न हो तो समय बर्बाद करने से क्या लाभ—उसे आत्महत्या कर लेनी चाहिए—बस.........

बाहर उसे एक गाड़ी की आवाज सुनाई दी—कुछ देर में वह खिड़की के सामने से गुजरी, घूमी और भीगी बालू और कंकड़ों पर शब्द करती हुई वह मकान के पास रुक गई। गाड़ी में दो व्यक्ति थे।

'एक मिनट ठहरो, मैं अभी आ रहा हूँ,' खिड़की से झाँक कर लेव्सकी ने उन लोगों से कहा, 'मैं सो नहीं रहा था। लेकिन अभी समय तो नहीं हुआ ?'

'हाँ—चार बजा है। जब तक हम वहाँ पहुँचेंगे...'

लेव्सकी ने अपना ओवर-कोट और हैट पहन लिया, जेब में कुछ सिगरटें रख लीं और फिर किसी हिचक में खड़ा रहा। उसे लगा कि अभी उसे कुछ और करना है। बाहर सड़क पर दोनों 'सेकेन्ड' धीमी आवाज में बातें कर रहे थे और घोड़े हुंकार रहे थे। और गीली भारी सुबह की इन आवाजों ने—जब क्षितिज पर रोशनी का फूल अभी उगा भी नहीं था और लोग सोये हुए थे—लेव्सकी के दिल में घबड़ाहट और आशंका भर दी थी। थोड़ी देर वह इसी तरह खड़ा रहा कुछ सोचता हुआ, फिर सोने वाले कमरे में चला गया।

सिर से पैर तक एक कम्बल में लिपटी हुई नादियेजदा पलँग पर पड़ी हुई थी। वह हिली नहीं और उसकी आकृति—विशेषतया उसके सिर से मिस्र की 'ममी' का भास हो रहा था। खामोशी से खड़े होकर उसकी तरफ देखते हुए, लेव्सकी ने दिल में उससे क्षमा माँगी और सोचा यदि भगवान कहीं है तो वह उसे अवश्य बचा लेगा और नया जीवन प्रदान करेगा। और यदि नहीं है तो फिर उसे मर ही जाना चाहिए क्योंकि इसके बाद जीवित रह कर वह करेगी क्या।

एकाएक नादियेजदा झटके से उठ कर पलँग पर बैठ गई और भय से अपने पीले चेहरे को लेव्सकी की तरफ उठाकर बोली, 'क्या तुम हो ? तूफान खत्म हो गया ?'

'हाँ।'

फिर उसे याद आया और दोनों हाथ कंधों से ऊपर उठाकर वह बोली, 'कितनी दुखी हूँ मैं—काश तुम जानते कि कितनी दुखी हूँ मैं। मैं तो आशा करता थी,' आँखें आधी मूँदते हुए उसने कहा, 'कि तुम मुझे

मार डालोगे या घर से इस तूफान और वर्षा में निकाल दोगे लेकिन तुम देर कर रहे हो--देर कर रहे हो. . . . .'

अचानक आवेश में लेव्सकी ने उसे अपनी बाहों में कस लिया और उसके हाथ-पैरों पर चुम्बनों की बौछार कर दी! और जब वह कुछ बोली और बीती बातें याद करके उसका शरीर काँप गया तो लेव्सकी ने उसके बालो को धीरे-धीरे सहलाया और उसके चेहरे की ओर देखकर उसे लगा कि यह दुखी, पापी औरत ही केवल वह एक व्यक्ति है जो उसके सबसे करीब है और जिसका स्थान कोई दूसरा नहीं ले सकता।

जब वह बाहर निकल कर गाड़ी में बैठा तो उसके दिल में यह इच्छा थी कि वह जीवित वापस घर लौटे।

१८

पादरी उठा, कपड़े पहने और अपना मोटा डंडा लेकर चुपचाप घर के बाहर निकल पड़ा। अन्धेरा था और सड़क पर आकर पहले एक मिनट तक तो वह अपना सफेद डंडा तक नहीं देख सका। आसमान में एक सितारा भी नहीं था और लगता था कि वर्षा फिर होगी—हवा में भीगी बालू और सागर की सुगन्ध थी।

पहाड़ी लोग तो हमला नहीं करेंगे! पादरी सोच रहा था—वह सुन रहा था अपने डंडे की आवाज, जो वह सड़क से टकरा रहा था—रात के सूनेपन में ठक-ठक की यह आवाज कितनी अकेली और तेज थी!

जब वह नगर के बाहर निकल आया तो उसे सड़क और डंडा दोनों दिखाई पड़ने लगे थे। काले आसमान में यहाँ-वहाँ गहरे रंग के बादलों के टुकड़े थे और एक-आध सितारा बाहर झाँककर एक आँख से डरा हुआ-सा, चमक जाता था। पादरी ऊँचे चट्टानी किनारे पर चल रहा था और सागर उसे दिखाई नहीं पड़ रहा था—नीचे पड़ा हुआ सो रहा

था और उसकी अदृश्य लहरें तट पर वेदना के आकारों में टूट रही थीं—मानो उनकी आहों मे 'उफ़' का शब्द निकल रहा हो—और बहुत धीमे। एक लहर टूटी—पादरी ने चलते हुए आठ कदम गिने, दूसरी टूटी—छः कदम, और तीसरी. . . .। पहले की तरह अब भी कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा था और अन्धकार मे केवल ऊँघते हुए सागर की दर्द-भरी आह सुनाई पड़ रही थी। उस सुनसान में व्यक्ति महसूस कर सकता था उस समय को, जिसकी दूरी अनन्त है और जिसकी कल्पना करना असम्भव है, जब भगवान उस आदि अराजकता पर मॅडरा रहे होगे।

पादरी के दिल मे एक रहस्यात्मक भय समा गया। वह आशा कर रहा था कि भगवान अविश्वासियो से मिलने और उनके द्वन्द देखने जाने के लिए उसे सजा न देंगे। इसमें शक नहीं कि द्वन्द एक मजाक ही होगा जिसमें रक्तपात नहीं होगा, लेकिन फिर भी बात अधार्मिक ही है और गिरजे के किसी भी अधिकारी का वहाँ उसे देखने जाना बिल्कुल अनु-चित बात है। वह रुककर सोचने लगा—क्या उसे लौट जाना चाहिए? लेकिन एक जबरदस्त जिज्ञासा ने उसकी सारी शंकाओं को परास्त कर दिया और वह आगे बढ़ गया।

हालाँकि वह सब अधार्मिक लोग है, लेकिन फिर भी अच्छे व्यक्ति हैं और उनका कल्याण होगा, उसने अपने आपको विश्वास दिलाते हुए सोचा और फिर एक सिगरेट जलाते हुए वह स्पष्ट बोला, 'उनका कल्याण होना निश्चित है।'

मनुष्य के गुणों को मापने का क्या स्तर होना चाहिए ताकि उनके साथ न्याय किया जा सके? पादरी को अपने उस शत्रु—धार्मिक स्कूल के निरीक्षक—की याद आई जो भगवान को मानता था, धार्मिक और पापहीन सिद्धान्तो के अनुसार रहता था और द्वन्द नहीं लड़ता था। लेकिन वह उसे जो रोटी खिलाता था उसमें बालू मिली होती थी और एक बार उसके कान खींचे थे। यदि मानव-जीवन में इतना निर्विवेक था कि इस

क्रूर और बेईमान निरीक्षक का—जो सरकारी आटा चुराता था—सम्मान हो और उसके स्वास्थ्य और सम्पन्नता के लिए प्रार्थनाएँ की जाएँ तो क्या यह उचित था कि वान कोरेन और लेव्सकी जैसे व्यक्तियों से घृणा की जाय, केवल इसलिए कि वह अधार्मिक थे ? पादरी मन में इस प्रश्न पर विचार ही कर रहा था कि उसे याद आ गया कि सैमाएलैन्को कल कितना अजीब और बेतुका लग रहा था। और उसकी विचार धारा भंग हो गई। कल कितना मजा आयेगा। पादरी ने निश्चय किया कि एक झाड़ी के पीछे छिपकर वह सब कुछ देखेगा और जब खाने के वक्त वान कोरेन द्वन्द के बारे में बात करेगा तो वह हँसते हुए उसे द्वन्द की सारी घटनाएँ स्वयं ही सुना देगा।

तुम्हें यह सब कैसे मालूम—वान कोरेन परेशान होकर पूछेगा।

यही तो बात है। मैं बराबर घर पर रहा लेकिन मुझे सब मालूम है—वह हँसते हुए उत्तर देगा।

उस द्वन्द का विनोदपूर्ण वर्णन लिखना भी बहुत अच्छा होगा—उसके ससुर को पढ़कर खूब हँसी आयेगी। वह अच्छी कही या लिखी गई कहानियों के बहुत शौकीन थे।

येलो रिवर की घाटी उसके सामने आकर खुल गई। वर्षा के कारण नदी और चौड़ी—और प्रवाह तेज हो गया था और साधारण कल-कल के स्थान पर प्रवाह अब गरज रहा था। रोशनी होने लगी थी। भूरी, धुँधली सुबह, पश्चिम की ओर उड़कर तूफानी बादलों में जाकर मिलते हुए बादलों के छोटे टुकड़े, कोहरे से घिरे हुए पहाड़, भीगे हुए पेड़—यह सब कुछ पादरी को बहुत बदसूरत और भयानक लग रहा था। उसने नदी के पानी में हाथ-मुँह धोया, सुबह की प्रार्थना की और उसे वह चाय, गर्म रोटी और खट्टी क्रीम याद आये जो रोज उसके ससुर के यहाँ मिलते थे। उसे अपनी पत्नी की भी याद आई और उस गीत की जो वह पियानो पर गाया करती थी। कैसी औरत थी वह ? उसकी पत्नी से उसकी

पहली मुलाकात, सगाई, विवाह—यह सब कुल एक हफ्ते में हो गया था और एक ही महीने वह उसके साथ रह सका था जब उसको यहाँ भेज दिया गया था, इसलिए अपनी पत्नी को जानने का उसे बिलकुल समय ही नहीं मिला था। फिर भी उसका विछोह उसे बहुत खटक रहा था।

उसे एक अच्छा सा खत लिखना चाहिए...... उसने सोचा।

'दुहन' पर लगा हुआ झंडा वर्षा में भीगने के कारण बिल्कुल ढीला टँगा हुआ था और छत भीग जाने के कारण 'दुहन' स्वयं ज्यादा काली और नीची लग रही थी। 'दुहन' के दरवाजे के पास एक गाड़ी खड़ी हुई थी— कर्बेले, दो पहाड़ी और पतलून पहने हुए एक तातारी औरत, जो उसकी पत्नी या लड़की होगी, 'दुहन' अन्दर से कुछ बोरे लाकर गाड़ी में बिछी हुई पुआल पर रख रहे थे।

गाड़ी के पास दो गदहे सिर लटकाए हुए खड़े थे। जब सब बोरे रखे जा चुके तो दोनों पहाड़ी और वह तातारी औरत उन बोरों को पुआल से ढँकने लगे और कर्बेले गाड़ी में गदहे जोतने लगा।

माल चुराकर भेजा जा रहा है—शायद ! पादरी ने सोचा।

यह पड़ा था वह गिरा हुआ पेड़—यह सुखी हुई चीड़ की सुइयाँ—यह उस दिन की आग से जलकर काला पड़ा हुआ धब्बा—उसे उस दिन वाला 'पिकनिक' और सारी घटनाएँ याद आ गईं—आग, पहाड़ियों का दूसरे तट पर का गीत, बिशप बनने का उसका मीठा सपना और गिरजे का जुलूस...ब्लैक रिवर भी वर्षा के कारण और ज्यादा काली—और ज्यादा चौड़ी हो गई थी। पादरी बहुत सँभाल कर पुल पर चल रहा था----क्योंकि गंदा पानी इतना चढ़ गया था कि पुल को बिल्कुल छू रहा था। घास के मैदान को पार करके, वह नाज सुखाने वाले बाड़े की तरफ जा रहा था।

बड़ा अच्छा दिमाग है, फूस पर लेटकर वह वान कोरेन के बारे में सोच रहा था।

वास्तव में बहुत ही अच्छा दिमाग है उसका—भगवान उसे अच्छा स्वास्थ्य दे—लेकिन बहुत निर्दय है वह......

लेव्सकी उससे और वह लेव्सकी से क्यों घृणा करते थे ? वे द्वन्द लड़ने क्यों जा रहे थे ? अगर बचपन से उसकी तरह वे जानते कि गरीबी क्या होतो, अगर वे जाहिल, क्रूर, लालची, भद्दे और अशिष्ट लोगों के बीच पले और बढ़े होते जो आपको रोटी का टुकड़ा भी देना पसन्द नहीं करते, जो फर्श पर थूकते और भोजन और प्रार्थना के समय हिचकी लेते हैं, अगर बचपन से वे सुख और सुविधाओं और अपने थोड़े से मित्रों के कारण—जिनके बीच उनका जीवन कटा—बिगड़े न होते तो वे एक दूसरे की तरफ साफ और मित्रतापूर्ण दिल से बढ़ते—आसानी से एक दूसरे के दोष क्षमा कर देते और केवल एक दूसरे के गुणों की ओर ही ध्यान देते। वास्तव में, वाह्य आवरण के दृष्टिकोण से ही, संसार में कितने कम भले और शिष्ट लोग हैं। यह सत्य है कि लेव्सकी बहुत भला आदमी नहीं है फिर भी वह चोरी तो नहीं करता, फर्श पर थूकता तो नहीं, अपनी बीबी को गाली तो नहीं देता, बच्चों को वह घोड़े की लगाम से मारता तो नहीं, अपने नौकरों को खाने के लिए सड़ा हुआ गोश्त तो नहीं देता—यह सब गुण तो काफी हैं उसे भला आदमी मानने के लिए। फिर अपने दुर्गुणों से हानि उसे ही तो होती है सबसे अधिक, जैसे घावों और फोड़ों से कष्ट सबसे अधिक उसी को होता है जिसके वे होते हैं। मानसिक ऊब, उलझन या गलतफहमी के कारण एक दूसरे में पतन, सड़न या ऐसा ही कोई हवाई ऐब ढूँढ़ने के स्थान पर क्या यह अधिक अच्छा न होगा कि कुछ नीचे झुककर वह उस ओर देखें और उसके प्रति अपना गुस्सा और घृणा प्रकट करें जहाँ पूरी-पूरी गलियाँ और सड़कें और मोहल्ले लालच, जहालत, भद्दे पन, पतन, गाली-गलौज और औरतों की चीखों से गूँजते हैं।......

गाड़ियों के आने की आवाज से पादरी की विचारधारा भंग हो गई।

बाड़े की किवाड़ मे झाँककर उसने देखा कि उस गाड़ी मे तीन व्यक्ति हैं—लेव्सकी, शेशकाव्सकी और डाकखाने का सुपरिन्टेन्डेन्ट।

'रुको !' शेशकाव्सकी ने कहा।

तीनो व्यक्ति गाड़ी से उतर पड़े और एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

'अभी तक वह लोग तो आये नही !' कीचड़ झाड़ते हुए शेशकाव्सकी ने कहा, 'खैर ! जब तक वे लोग आते हैं तब तक चलकर कोई उचित स्थान ढूँढ़े—यहाँ तो जगह काफी नहीं है।'

नदी के किनारे वह कुछ दूर आगे और बढ़े और शीघ्र ही दृष्टि से ओझल हो गए। गाड़ी का तातार सईस कंधे पर सिर झुकाए-झुकाए ही सो गया। दस मिनट इन्तजार करके पादरी भी बाहर निकल आया और अपने काले हैट को उतारकर, ताकि कोई उसे पहचान न ले, वह भी झाड़ियो और मक्के के खेतो के बीच में होता हुआ दबा-दबा आगे बढ़ने लगा। घास और मक्का भीगो हुई थी और पेड़ो और झाड़ियो से बड़ी-बड़ी बूँदें उसके सिर पर गिर रही थीं। 'क्या वाहियात,' अपने भीगे और कीचड़ में सने हुए चोले को उठाते हुए पादरी बड़बड़ाया, 'अगर मुझे यह पता होता तो मै कभी न आता।'

थोड़ी देर में उसने कुछ आवाजें सुनी और फिर कुछ व्यक्तियो को देखा। छोटे-से घास के मैदान में लेव्सकी इधर-उधर टहल रहा था। उसका सिर झुका हुआ था और हाथ आस्तीनों में धँसे हुए थे—उसके दोनो 'सेकेन्ड' नदी के किनारे खड़े हुए सिगरटें बना रहे थे।

'आश्चर्य,' लेव्सकी की चाल पादरी को अजीब अपरिचित लगी, 'यह तो वृद्ध लग रहा है...'

'कितनी बद्तमीजी है इन लोगो की,' सुपरिन्टेन्डेन्ट ने घड़ी मे देखते हुए कहा, 'पढ़े-लिखे लोग इस देर में आने को शिष्टता मानते होगे लेकिन मैं तो इसको बद्तमीजी समझता हूँ।'

शेशकाव्सकी एक भारी भरकम व्यक्ति था जिसकी दाढ़ी काली थी। उसने कुछ देर सुनने के बाद कहा, 'लगता है वे आ रहे हैं।'

१६

'जीवन में पहली बार मैं देख रहा हूँ यह ! कितना सुन्दर, कितना शानदार !' हरे मैदान की ओर आँख उठाकर, फिर पूर्व की ओर ले जाते हुए वान कोरेन बोला, 'देखो, हरी किरणें !'

पूर्व में पर्वतों के पीछे से हरी रोशनी का किरण-समूह उमड़ रहा था और वास्तव में दृश्य बहुत खूबसूरत था। सूरज निकल रहा था।

'गुड-मार्निग,' लेव्सकी के 'सेकेन्ड' की ओर देखकर वान कोरेन ने कहा, 'मुझे देर तो नहीं हुई।'

उसके पीछे से उसके दो 'सेकेन्ड' ब्वायको और गावोराव्सकी, एक ही ऊँचाई के, सफेद वर्दी पहने दो अफसर, और इस्टीमोविच, दुबला-पतला कर्कश डाक्टर जिसके एक हाथ में एक बैग था और दूसरे में हमेशा की तरह एक बेंत जो वह पीछे किए हुए था। बैग को जमीन पर रखकर, बिना किसी से बोले, दूसरे हाथ को भी पीठ के पीछे करके वह मैदान पर टहलने लगा।

लेव्सकी को उस व्यक्ति की-सी उलझन और थकान मालूम पड़ रही थी जिसकी मृत्यु निकट हो और जिसकी ओर इस कारण सब का ध्यान हो। वह चाहता था कि या तो उसे जल्दी से जल्दी मार डाला जाय या घर पहुँचा दिया जाय। आज जीवन में पहली बार उसने सूरज को उगते हुए देखा था—भोर, प्रकाश की हरी किरणें, गीलापन, भीगे जूते पहने

हुए लोग—उसे लग रहा था कि इन सब का उसके जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है—ये निरर्थक हैं, परेशान करने वाले हैं। उस रात से भी इनका कोई सम्बन्ध नहीं था जिसमें होकर वह अपने विचारो और अपने अपराध के अहसास के साथ गुजरा था और इसलिए वह द्वन्द की प्रतीक्षा किए बगैर खुशी से चला जा सकता था।

वान कोरेन उत्तेजित था और इस उत्तेजना को वह छिपाना चाहता था यह दिखाकर कि किसी और चीज से ज्यादा उसे उस हरी रोशनी में दिलचस्पी थी। चारो 'सेकेन्ड' परेशान थे और एक दूसरे की तरफ वे इस प्रकार देख रहे थे मानो इस बात पर आश्चर्य कर रहे हो कि वे यहाँ क्यो हैं और उन्हें क्या करना है।

'मेरे ख्याल से, सज्जनो, हम लोगों को आगे जाने की जरूरत नहीं,' शेशकाव्सकी ने कहा, 'यह जगह ठीक है।'

'हाँ, हाँ,' वान कोरेन ने कहा।

फिर खामोशी। टहलने के बीच में एकाएक रुककर इस्टीमोविच एकदम से लेव्सकी की ओर मुड़ा और उसके चेहरे के पास चेहरा लाकर धीमी आवाज में कहा, 'शायद किसी ने तुम्हें मेरी शर्तें नहीं बताई। दोनों व्यक्तियों को मुझे पन्द्रह-पन्द्रह रूबुल देने हैं और यदि एक मर गया तो दूसरे को तीस रूबुल देने पड़ेंगे।'

लेव्सकी इस व्यक्ति से परिचित था लेकिन आज पहली बार उसने निकट से उसकी निस्तेज आँखें, कड़ी मूँछें और पतली गर्दन देखी थी—यह पैसा घसीटनेवाला लालची था, डाक्टर नहीं और उसके मुँह से गाय के मांस की बासी दुर्गन्ध आ रही थी।

कैसे-कैसे लोग इस संसार में रहते हैं। लेव्सकी ने सोचा और उत्तर दिया, 'अच्छा।'

डाक्टर ने भी सिर हिलाया और फिर वह टहलने लगा। स्पष्ट था

कि उसे उस रुपए की बिलकुल आवश्यकता नहीं थी—केवल घृणा के कारण वह माँग रहा था। सब का ख्याल था कि अब शुरू करना चाहिए या उस बात को खत्म कर देना चाहिए जो शुरू हो चुकी थी लेकिन फिर भी वे खड़े थे या घूम रहे थे—सिगरेट पीते हुए। जो दो युवक अफसर जीवन में पहली बार द्वन्द में आये थे और अब उसे व्यर्थ और निरर्थक समझ रहे थे, अपनी वर्दियों की तरफ गौर से देख रहे थे। शेशकाव्सकी ने उनके पास जाकर कहा, 'सज्जनों, इस द्वन्द को रोकने के लिए हमें हर प्रयत्न करना चाहिए, इनमें समझौता करा देना चाहिए'। फिर तनिक लाल पड़ते हुए उसने कहा, 'किरीलिन कल रात मेरे पास आया था और बता रहा था कि लेव्सकी ने उसे और नादियेजदा फ्योद्रोवना को पास-पास लेटे हुए देख लिया था. . . .'

'हाँ, हम लोग भी जानते हैं,' व्वायको ने कहा।

'तब फिर आप ही देखिए. . . .लेव्सकी के हाथ काँप रहे हैं. . . . वह पिस्तौल भी मुश्किल से पकड़ सकेगा। उससे लड़ना उतना ही अमानुषिक होगा जितना किसी शराबी या बीमार से लड़ना। अगर समझौता न हो सके तो इस द्वन्द को कम से कम बाद को रखना चाहिए या. . . . इतना खराब है यह सब कि मुझसे तो देखा भी नहीं जाता।'

'तो वान कोरेन से बात करो।'

'मैं द्वन्द के नियम नहीं जानता और मैं कमबख्तों को जानना भी नहीं चाहता। लेकिन शायद लेव्सकी डर गया है और उसने मुझे भेजा है। लेकिन वह चाहे जो सोचे—मैं उससे बात तो करूँगा ही।'

झिझकते हुए शेशकाव्सकी उसके पास गया और उसके निकट आकर गला साफ करते हुए उसने कहा, 'मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ,' वान कोरेन को कमीज पर छपे हुए फूलों को गौर से देखते हुए उसने कहा, 'बात बहुत गुप्त है। मैं द्वन्द के नियम नहीं जानता और न जानना

अ०—१०

ही चाहता हूँ और मै इस बात को 'सेकेन्ड' की हैसियत से नहीं सोच रहा हूँ, एक आदमी की तरह सोच रहा हूँ।'

'हाँ, तो?'

'जब 'सेकेन्ड' समझौते की बात करते हैं तो कोई उनकी बात सुनता नहीं है। लेकिन मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इवान आन्द्रीच की हालत गौर से देखें। उनकी हालत आज ठीक नहीं है, दिमाग ठीक नहीं है बेचारे का। उसके साथ एक दुर्घटना हो गई है। मैं अफवाहों में विश्वास नहीं करता.....'

एकदम लाल पड़कर शेशकाव्सकी ने इधर-उधर देखा, 'लेकिन इस द्वन्द के कारण मुझे यह बताना आवश्यक हो गया है कि कल रात में लेव्सकी ने अपनी....अपनी...को किसी और व्यक्ति के साथ...म्यूरिदाव के यहाँ देखा......'

'उफ!' पीले पड़ते हुए, भवें सिकोड़कर जमीन पर थूकते हुए वान कोरेन ने कहा, 'कितनी गंदी बात है!'

उसका निचला होंठ काँप रहा था जब वह अधिक न सुन सकने के कारण शेशकाव्सकी के पास दूर गया और एक बार उसने फिर जोर से थूका मानो उसने कोई बहुत कड़वी, खराब चीज चख ली हो और उस दिन सुबह से पहली बार लेव्सकी की ओर घृणा से देखा। उसकी उत्तेजना और उलझन जैसे एकाएक खत्म हो गई और उसने जोर से कहा, 'हम लोग अब किस बात का इन्तजार कर रहे हैं? शुरू क्यों नहीं करते?'

शेशकाव्सकी ने उन युवक अफसरों की ओर देखकर विवशता में कंधे हिला दिये।

'सज्जनों,' बिना किसी व्यक्ति विशेष को सम्बोधित किए, उसने जोर से कहा, 'सज्जनों, मेरा प्रस्ताव है कि आप लोगों में समझौता करा दिया जाय।'

'हम लोगो को द्वन्द के प्रारम्भिक नियमों का पालन करके जल्दी द्वन्द शुरू करना चाहिए,' वान कोरेन ने कहा, 'समझौते की बात तो हो चुकी है। आगे क्या करना है—जल्दी कोजिए। समय हम लोगों के लिए रुकेगा थोड़े ही।'

'लेकिन हम फिर समझौते की बात पर जोर दे रहे हैं,' शेशकाव्सकी ने उस व्यक्ति की-सी अपराधी आवाज में कहा जो अपने आप को किसी दूसरे के मामले में हस्तक्षेप करने के लिए मजबूर पाता है, 'आप लोग दोनों विश्वविद्यालयो में पढ़े हुए व्यक्ति हैं—सुसंस्कृत व्यक्ति हैं और द्वन्द को अवश्य एक व्यर्थ की चीज मानते होंगे। यही हम लोगों का भी विचार है वरना, हम लोग यहाँ आते ही क्यों और हम लोग यह नहीं चाहते कि लोग हमारी उपस्थिति में एक दूसरे पर गोली चलाएँ,' और माथे से पसीना पोछते हुए उसने बात जारी रखते हुए कहा, 'अपने झगड़े को,मतभेद को आप लोग खत्म कर दीजिए, हाथ मिलाकर समझौता कर लीजिए। चलिए, हम लोग घर चलकर इस खुशी में शराब पियें।'

वान कोरेन कुछ न बोला। लेव्सकी ने, यह देखकर कि सब लोग उसकी तरफ देख रहे हैं, कहा, 'मुझे निकोले वैसिलिच से कोई शिकायत नहीं है। अगर वह समझते हैं कि दोष मेरा है तो मैं उनसे क्षमा माँगने को तैयार हूँ।'

वान कोरेन को इस बात पर क्रोध आ गया। उसने कहा, 'यह स्पष्ट है कि आप लोग यह चाहते हैं कि मि० लेव्सकी एक उदार और बहादुर व्यक्ति की तरह घर लौटें लेकिन मैं आपको या उनको यह सन्तोष नहीं दे सकता। और सुबह उठकर आठ मील चलकर इसलिए आ गया था कि घर लौटकर हम सुलह का जाम पिएँ—या इसलिए कि आप मुझे समझाएँ कि द्वन्द एक दकियानूसी और असभ्य प्रथा है। द्वन्द द्वन्द है और उसे अधिक झूठा और मूर्खतापूर्ण बनाने से कोई लाभ नहीं। मैं लड़ना चाहता हूँ।'

थोड़ी देर खामोशी रही। ब्वायको ने एक बक्स में से दो पिस्तौलें निकालीं—एक वान कोरेन को दी गई और दूसरी लेव्सकी को। और इसके बाद एक बहुत ही मजेदार बात हुई—उपस्थित लोगों में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसने पहले कभी कोई द्वन्द देखा हो और किसी को यह नहीं मालूम था कि लड़ने वाले कहाँ और कैसे खड़े हों और 'सकेन्ड' क्या कहें और करें। लेकिन एकाएक ब्वायको को याद आ गया और उसने मुस्कराते हुए कहाः

'आप लोगों में किसी को लेटमेन्तोव के उस उपन्यास मे द्वन्द का वह वर्णन याद है या......'

'कोई आवश्यकता नहीं याद करने की,' डस्टीमोविच ने झुँझलाते हुए कहा, 'दूरी नाप लो—बस।'

और यह कहते हुए उसने तीन कदम चलकर दिखाया यह बताने कि लिए कि फासला कैसे नापा जाय। ब्वायको ने फासला नापा और उसके साथी ने दोनों सिरों पर तलवार से सीमाओं के निशान बना दिए। बिलकुल खामोशी से दोनों प्रतिद्वन्दियों ने अपने-अपने स्थान ले लिए।

शेशकाव्सकी ने कुछ कहा, ब्वायको ने कुछ समझाया। लेकिन लेव्सकी ने सुना नहीं और अगर सुना भी तो समझा नहीं। जब समय आया तो उसने पिस्तौल साध ली और उस ठंडे, भारी अस्त्र की नली ऊपर उठाई। वह अपने ओवरकोट के बटन खोलना भूल गया था और इस-लिए कंधों और बगल में कस रहा था और उसकी बाँह इतनी अजीब तरह से ऊपर उठी मानों टीन की बनी हो। उसे याद आया कि परसों रात उसे वान कोरेन की मुखाकृति से कितनी घृणा हुई थी—कि कल गहरे गुस्से और घृणा में भी वह उसको मारने को तैयार नहीं था। यह डरकर कि शायद किसी तरह वान कोरेन के गोली पड़ ही जाय, वह पिस्तौल ऊपर—और ऊपर उठाता गया। वह जानता था कि यह स्पष्ट दया और उदारता

उचित और शिष्ट नहीं है लेकिन उसकी समझ नहीं आया कि और वह कर ही क्या सकता है। व्यंग्य में मुस्कराते हुए वान कोरेन के चेहरे को देखकर यह लगता था कि उसे मालूम है कि लेव्सकी गोली हवा में चलायेगा, लेव्सकी ने सोचा कि अच्छा है कि जल्दी ही सब खत्म हो जायगा और उसे केवल पिस्तौल का घोड़ा दबाना है...

कंधे पर एक जोर का झटका—गोली की आवाज और पहाड़ों से टकराकर उसकी प्रतिध्वनि ठाँय-ठाँय।

वान कोरेन ने अपनी पिस्तौल उठाई और डस्टीमोविच की ओर देखा, जो अब भी पीठ के पीछे हाथ किए हुए घूम रहा था—बिना किसी की ओर ध्यान दिए।

'डाक्टर,' वान कोरेन ने कहा, 'यह घड़ी के 'पेन्डुलम' की तरह इधर-उधर चलना बन्द करो। तुम्हें देखकर सिर चकराता है।'

डाक्टर खड़ा हो गया। वान कोरेन ने पिस्तौल उठाकर लेव्सकी की ओर निशाना लगाया।

बस—अब सब खत्म हो गया लेव्सकी ने सोचा।

उसके चेहरे की ओर सधी हुई पिस्तौल की नली, वान कोरेन की पूरी आकृति में तीव्र घृणा का भाव, वह हत्या जो एक सभ्य व्यक्ति और सभ्य व्यक्तियों की उपस्थिति में दिन-दहाड़े हो रहा था और वह खामोशी और वह अनजान शक्ति जो लेव्सकी को वहाँ बिना हिले-डुले खड़े होने और न भागने के लिए विवश कर रही थी—यह सब कितना रहस्यपूर्ण, अजीब और भयानक था।

वह एक क्षण जिसमें वान कोरेन उसकी ओर निशाना ले रहा था, लेव्सकी को रात से भी ज्यादा लम्बा लग रहा था। उसने आर्द्रता से 'सेकेन्डों' की ओर देखा—वे भी भय से पीले और निश्चल खड़े थे।

जल्दी करो—चलाओ गोली, लेव्सकी ने सोचा और उसे लगा कि

उसका पीला, काँपता हुआ, दयानीय चेहरा ान कोरेन में और घृणा जगा रहा होगा।

मैं अभी मार दूँगा उसे, वान कोरेन सोच रहा था—निशाना लेव्सकी के माथे पर था और घोड़े पर उसकी उँगली कसी हुई थी—हाँ, मै इसे अभी मारे देता हूँ...

'अरे—वह मार देगा उसे,' कहीं पास से घबड़ाई हुई एक चीख अचानक सुनाई दी।

उसी समय गोली छूटने की आवाज भी हुई। यह देखकर कि लेव्सकी गिरा नहीं है—वहीं अपने स्थान पर खड़ा है—सब लोगों ने उस दिशा में देखा जिधर से यह चीख आई थी और देखा कि पादरी खड़ा है। पीला चेहरा, भीगे हुए बाल माथे पर और गालों पर चिपके हुए, कीचड़ से सना, वह दूर किनारे पर मक्का के खेत में खड़ा अजीब तरह से मुस्कराता हुआ अपना भीगा हैट हिला रहा था।

शेशकाव्सकी खूब जोर से हँस पड़ा, रो पड़ा खुशी से और वहाँ से हट गया......

२०

कुछ देर बाद वान कोरेन और पादरी छोटे-से पुल पर मिले। पादरी बहुत उत्तेजित था, वह गहरी साँसें ले रहा था और लोगों से आँख बचा रहा था।

'मेरा ख्याल था कि तुम उसे मारने जा रहे हो...' वह बड़बड़ाया, 'मानव-प्रकृति के कितना विपरीत है यह—कितना अस्वाभाविक,' उसने कहा।

'लेकिन तुम यहाँ आये कैसे?' वान कोरेन ने पूछा।

'मत पूछो,' पादरी ने हाथ हिलाते हुए कहा, 'कोई बुरी शक्ति मुझे उकसाती रही—जाओ, जाओ! और मैं आ गया। लेकिन मक्का के खेत में भय और आशंका से मेरी जान ही निकल गई। लेकिन बहुत अच्छा हुआ—भगवान की कृपा है—बूढ़ा सैमाएलैन्को भी बहुत खुश होगा। लेकिन तुमसे एक ही प्रार्थना करनी है कि किसी से यह मत कहना कि मैं यहाँ आया था—वरना मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा...'

'सज्जनों!' वान कोरेन ने कहा, 'डीकन यह चाहते हैं कि आप लोग यह किसी को न बताएँ कि आपने उन्हें यहाँ देखा है। इससे वह मुसीबत में पड़ सकते हैं।'

'मानव-प्रकृति के कितना विपरीत है यह,' पादरी ने फिर आह भरते हुए दोहराया, 'क्षमा करना, लेकिन उस समय तुम्हारा चेहरा इतना भयानक लग रहा था कि मुझे लगा कि तुम लेव्सकी को मार ही डालोगे।'

'उस बदमाश के जीवन का अन्त कर देने का प्रलोभन तो बहुत था लेकिन तुम पास से ही चिल्ला पड़े और निशाना चूक गया। लेकिन इस सब की आदत तो थी नहीं मेरी और मैं बहुत थक गया हूँ। चलो, चला जाय।'

'नहीं, तुम मुझे पैदल ही जाने दो। पैदल चलकर कपड़े सूख जायँगे। अभी तो बिलकुल भीगा हुआ और ठंडा हूँ,' पादरी ने कहा।

'खैर, जैसा तुम चाहो,' थकी हुई आवाज में गाड़ी में बैठते हुए वान कोरेन ने कहा, 'जैसा तुम चाहो...'

सब लोग गाड़ियों में खामोशी से बैठ गए—केवल पादरी 'दुहन' के पास अकेला रह गया।

गाड़ी में बैठा हुआ लेव्सकी सोच रहा था कि सुबह यहाँ उस समय आना—जब सड़कें, चट्टानें और पहाड़ सभी गीले और काले थे—कितना भयानक लग रहा था और अनिश्चित भविष्य उस गहरे गर्त्त को

तरह लग रहा था जिसका अन्त दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन अब पत्थरों और घास की पत्तियों पर चिपकी हुई पानी की बूँदें सूरज की रोशनी के कारण हीरों जैसी चमक रही थीं—प्रकृति आनन्द में मुस्करा रही थी और वह भयानक, अनिश्चित भविष्य पीछे छूट चुका था। अपनी गाड़ी में बैठे हुए शेशकाव्सकी के फूले हुए, आँसुओं से भीगे हुए चेहरे और अगली गाड़ी में वान कोरेन, उसके सेकेन्डों और डाक्टर की बात सोचकर उसे ऐसा लगा मानो वह सब एक कब्रिस्तान से एक ऐसे व्यक्ति को दफन करके लौट रहे हों जो उन सब के लिए एक भार था...

सब कुछ खत्म हो चुका अब, वह पिछली बातें सोच रहा था और सँभाल कर गले को उँगलियों से छू रहा था। गर्दन की दाहिनी तरफ एक जगह छोटी-सी सूजन थी और दर्द हो रहा था—लगता था जैसे उस जगह किसी ने गर्म लोहा छुआ दिया था---यह वह स्थान था जहाँ गोली छूती हुई निकल गई थी।

घर पहुँचकर एक अजीब, लम्बा और मीठा दिन उसके लिए शुरू हुआ, विस्मृति-सा धुँधला। जेल या अस्पताल से छूटे हुए व्यक्ति की तरह उसने पुरानी परिचित चीजो की तरफ देखा और उसे आश्चर्य हुआ कि मेजें, कुर्सियाँ, खिड़कियाँ, रोशनी और सागर—यह सब उसको इतना बच्चों का-सा हर्ष और सुख दे रहे हैं जितना वर्षों से नहीं हुआ था। थकी, परेशान और घबड़ाई हुई नादियेजदा को उसकी यह कोमल आवाज और अजीब ढंग समझ में नहीं आ रहे थे। उसने उसे बताया कि क्या-क्या उसने किया था...लेकिन उसे लगा कि शायद न वह उसकी बात सुन रहा है और न समझ रहा है और यदि वह यह सब समझ लेगा और सुन लेगा तो वह उसे मार डालेगा। लेकिन वास्तव में लेव्सकी उसकी सब बातें सुन रहा था और उसके चेहरे और बालो को सहला रहा था प्यार से। उसकी आँखों में आँखें डालकर लेव्सकी ने कहा, 'तुम्हारे सिवा मेरा और कोई नहीं है......'

बहुत देर तक दोनो बाग में एक दूसरे के पास सटे हुये बैठे रहे, खामोश या कभी-कभी वह अपने भविष्य के मीठे सुहावने सपने देखते-देखते कुछ बोल उठते थे...

२१

तीन महीने से अधिक बीत चुके थे।

वह दिन आ गया था जब वान कोरेन वहाँ से बिदा होने वाला था। सुबह से ही ठंड थी और जोर की वर्षा हो रही थी। उत्तरी-पूर्वी हवा चल रही थी और सागर पर लहरें जोर से उठ रही थीं। ख्याल था कि इतने खराब मौसम में जहाज बन्दरगाह तक नहीं आ सकेगा। यूँ उसे सुबह दस बजे तक आ जाना चाहिए था लेकिन करीब बारह बजे और भोजन के बाद जब वान कोरेन सागर-तट पर गया था तो दूरबीन से उसे भूरी लहरो और वर्षा से ढँके हुए क्षितिज के अलावा कुछ भी नहीं दिखाई पड़ा था। शाम तक जाकर वर्षा रुकी और हवा कम हुई। वान कोरेन समझ गया था कि उस दिन वह नहीं जा सकेगा और इसलिए सैमाए-लैन्को से शतरंज खेलने बैठ गया था। लेकिन अन्धेरा होने के बाद चपरासी ने बताया कि जहाज की बत्तियाँ दिखाई पड़ रही थीं......

वान कोरेन ने जल्दी से अपना झोला पीठ पर लादा और सैमाए-लैन्को और पादरी को चूमकर बिदा ली, फिर सब कमरो में जाकर उसने चपरासी और खाना पकाने वाले नौकर से भी बिदा ली और बाहर सड़क पर आ गया। उसे लग रहा था जैसे वह या तो अपने घर पर या सैमाए-लैन्को के घर कोई चीज भूल गया है। सैमाएलैन्को उसके साथ चल रहा था। पीछे पादरी था एक बक्स लिए और अन्त में दोबैग लिए हुए चप-रासी था। केवल सैमाएलैन्को और चपरासी को ही बत्तियाँ दिखाई पड़ रही थीं—बाकी लोगो को तो केवल अन्धकार दिखाई पड़ रहा था। जहाज किनारे से काफी दूर पर रुक गया था।

'जल्दी करो—जल्दी करो,' वान कोरेन कह रहा था, 'कहीं जहाज न छूट जाय।'

जैसे ही ये लोग उस तीन खिड़की वाले छोटे से मकान के सामने से गुजरे, जिसमें लेव्सकी द्वन्द के बाद ही चला आया था, वान कोरेन खिड़की में झाँकने से अपने को रोक न सका। खिड़की की तरफ पीठ किए लेव्सकी बैठा हुआ कुछ लिख रहा था।

'बड़ा आश्चर्य होता है इसे देखकर,' वान कोरेन ने हल्के से कहा, 'अपने को कितना बदला, कितना संयत किया है इसने।'

'हाँ—आश्चर्य की बात तो है ही,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'सुबह से रात तक काम करता रहता है और काम करके वह अपना कर्ज भी निबटा रहा है। और बहुत ही सीधे-सादे ढंग से रहता है।'

कुछ देर खामोशी रही। तीना वान कोरेन, सैमाएलैन्को और पादरी खड़े-खड़े लेव्सकी की ओर देखते रहे।

'और फिर बेचारा यहाँ से जा ही नहीं सका,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'तुम्हें याद है कि कितनी कोशिश कर रहा था वह यहाँ से भाग जाने की?'

'हाँ—देखो कितना सुधारा है इसने अपने को,' वान कोरेन ने कहा, 'उसकी शादी, रोजी के लिए बराबर कड़ी मेहनत करना, चेहरे पर एक नया भाव और चाल में भी एक नई बात—ये सब इतना आश्चर्यजनक परिवर्त्तन हैं कि...' फिर वान कोरेन ने सैमाएलैन्को की आस्तीन खींचते हुए भावपूर्ण आवाज में कहा, 'उससे और उसकी पत्नी से कह देना कि जब मैं गया था तो मेरे दिल में उनके लिए बहुत प्रशंसा थी और उनके सुख की शुभ-कामना थी और... और उससे कह देना कि अगर सम्भव हो तो मेरे प्रति अपने हृदय से बुरे विचार निकाल दे। वह मुझे जानता है और वह यह जानता है कि यदि इस परिवर्त्तन की आशा मुझे पहले होती तो मैं उसका सबसे गहरा मित्र होता।'

'तुम स्वयं उससे अन्दर जाकर विदा क्यों नहीं ले लेते ?'

'नहीं—ठीक न होगा।'

'क्यों ? भगवान जाने फिर तुम लोग कब मिलो।'

वान कोरेन ने कुछ सोचकर कहा, 'यह तो ठीक है।'

सैमाएलैन्को ने खिड़की पर हल्के से खटखटाया—लेव्सकी ने चौंक कर पीछे देखा।

'वैन्या, निकोले वैसिलिच तुमसे बिदा लेना चाहते हैं,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'वह बस अब जा ही रहे हैं।'

मेज से उठकर लेव्सकी किवाड़ खोलने गया। सैमाएलैन्को, वान कोरेन और पादरी तीनो मकान में आ गए।

'मैं केवल एक ही मिनट रुक सकूँगा,' वान कोरेन ने कहा—उसे बिना बुलाये अन्दर आने में उलझन हो रही थी और वह सोच रहा था कि शायद वह जबरदस्ती लेव्सकी पर यह मित्रता लादना चाह रहा है।

'इस समय काम में विघ्न डालने के लिए क्षमा करना,' लेव्सकी के साथ अन्दर कमरे में जाते हुए वान कोरेन ने कहा, 'लेकिन मैं जा रहा था इसी समय और तुमसे मिलने की अचानक तबियत हो आई। पता नहीं हम फिर कब मिलें।'

'बड़ी खुशी हुई कि तुम आए...आओ—आओ!' लेव्सकी मेहमानो के लिए कुर्सियाँ रख रहा था लेकिन उलझा हुआ-सा था और कमरे के बीच में खड़ा हुआ हाथ मल रहा था।

'मेरे प्रति अपने दिल में कड़ुवी मत रखना, इवान आन्द्रीच,' वान कोरेन ने कहा, 'जो बीत चुका है उसको भूल जाना तो असम्भव है और मै क्षमा माँगने या यह कहने नहीं आया हूँ कि मेरा कुसूर नहीं था। मैने जो कुछ किया सहृदयता से किया था और तब से मेरे सिद्धान्त और विश्वास बदले नहीं है। लेकिन यह सत्य है—और मुझे इस बात का बहुत

हर्ष है कि तुम्हारे बारे में मेरी धारणाएँ गलत थीं। लेकिन चिकनी सड़क पर भी तो कदम गलत पड़ जाता है—कहीं न कहीं तो गलती हो ही जाती है। असली सत्य तो कोई भी नहीं जानता।'

'हाँ—सत्य वास्तव में कोई नहीं जानता,' लेव्सकी ने कहा।

'अच्छा—बिदा! मेरी शुभ-कामनाएँ!'

वान कोरेन ने लेव्सकी से हाथ मिलाया।

'मेरे प्रति कोई कड़ुवी बात याद मत रखना,' वान कोरेन ने फिर कहा, 'अपनी पत्नी को भी मेरा अभिवादन कहना। मुझे अफसोस है कि मैं स्वयं उनसे बिदा न ले सका।'

'घर ही पर तो है वह।'

दूसरे कमरे की किवाड़ के पास जाकर लेव्सकी ने पुकारकर कहा, 'नादिया, निकोले वैसिलिच तुमसे बिदा लेना चाहते हैं।'

नादियेजदा कमरे में आई। दरवाजे पर ही रुककर उसने लजाई हुई दृष्टि से मेहमानों की तरफ देखा।

'मैं जा ही रहा था, नादियेजदा फ्योद्रोवना,' वान कोरेन ने कहा, 'और आपसे बिदा लेने आया हूँ।'

हिचकिचाते हुए उसने हाथ बढ़ा दिया।

दोनों कितने दयनीय लग रहे हैं। जो जीवन ये बिता रहे हैं, दूसरे उसके आदी नहीं हैं, वान कोरेन सोच रहा था। उसने कहा, 'मैं मास्को और पीटर्सबर्ग में रहूँगा—आप लोगों को किसी चीज की जरूरत हो तो भेज सकता हूँ।'

'ओह,' नादियेजदा ने अपने पति की ओर घबड़ाकर देखते हुए कहा, 'ऐसी तो कोई चीज नहीं है मेरे ख्याल से......'

'नहीं—कुछ नहीं,' हाथ मलते हुए लेव्सकी ने कहा, 'हमारी शुभ कामनाएँ!'

वान कोरेन की समझ में कुछ न आया कि क्या कहे, हालाँकि जब वह अन्दर आया था तो सोच रहा था कि वह बहुत स्नेहपूर्ण और महत्त्व-पूर्ण बातें कहेगा। उसने खामोशी में लेव्सकी और उसकी पत्नी से हाथ मिलाया और चल दिया। चलते समय उसका मन भारी और उदास था।

'क्या लोग हैं!' पीछे चलते हुए डीकन ने धीमी आवाज में कहा, 'हे भगवान! क्या लोग हैं! यह सुख की बेल भगवान के हाथ की लगाई हुई है। हे भगवान—हे भगवान! एक व्यक्ति हजारों-लाखों को परास्त करता है!' और फिर गदगद होकर उसने कहा, 'निकोले वैसिलिच, आज तुमने इन्सान के सबसे बड़े दुश्मन—गर्व को परास्त किया है।'

'चुप रहो, डीकन,' हम क्या विजेता हैं? विजेताओं को शानदार लगना चाहिए और वह कितना दयनीय लग रहा था—सहमा हुआ, टूटा हुआ। मै...मैं बहुत दुखी हूँ......'

पीछे उन्हें किसी के कदमो की आहट सुनाई दी। लेव्सकी उसे बिदा देने के लिए तेजी से आ रहा था। किनारे पर चपरासी दोनों बैग लिए खड़ा था और कुछ दूर पर चार मल्लाह खड़े थे।

'अभी हवा तेज तो है,' सैमाएलैन्को ने कहा, 'सागर में अब भी जोर का तूफान होगा। ठीक समय पर नहीं जा रहे तुम कोलया।'

'अरे—सागर-यात्रा से जी नहीं मिचलाता मेरा!'

'यह बात नहीं है...यही आशा करता हूँ कि ये बदमाश कुछ घपला न कर दें।'

'कोई बात नहीं, चिन्ता न करो,' वान कोरेन ने कहा, 'बिदा, भगवान तुम्हारी रक्षा करे।'

सैमाएलैन्को ने वान कोरेन को गले से लगा लिया और उसके ऊपर क्रूश का निशान तीन बार बनाया।

'हमें भूल मत जाना, कोलया...लिखना...अगले बसन्त में हम तुम्हारी प्रतीक्षा करेंगे।'

'अच्छा, डीकन बिदा,' वान कोरेन ने हाथ मिलाते हुए कहा, 'अच्छी बातें और मित्रता के लिए धन्यवाद। शोध-यात्रा के बारे में सोचना।'

'अवश्य! जहाँ रहोगे चलूँगा,' डीकन ने हँसते हुए उत्तर दिया।

अन्धेरे में वान कोरेन ने लेव्सकी को पहचान लिया और बिना बोले अपना हाथ बढ़ा दिया। नीचे नाववाले लहरों पर डोलती हुई नाव को थामे हुए थे। सीढ़ियों से उतरकर वान कोरेन नाव में कूद पड़ा।

'पत्र लिखना'' सैमाएलैन्को ने चिल्लाकर कहा, 'अपना ध्यान रखना।'

असली सत्य कोई नहीं जानता, कोट का कालर ऊपर चढ़ाए हुए और आस्तीनों में हाथ धँसाए हुए लेव्सकी खड़ा हुआ सोच रहा था।

नाव तेजी से खुले सागर पर आ गई। वह लहरों में खो गई, फिर एकाएक लहरों की गहराई में से तैरकर लहर के उठान पर आ गई। आदमी और पतवार सब एक क्षण को फिर दिखाई पड़ गये। नाव कभी आगे बढ़ती थी—कभी फिर पीछे खिंच आती थी।

'पत्र लिखना,' सैमाएलैन्को फिर चिल्लाया, 'बड़े खराब मौसम में जा रहे हो तुम।'

और काले,बेचैन समन्दर की तरफ देखते हुए थका हुआ लेव्सकी सोच रहा था—हाँ—असली सत्य कोई नहीं जानता...। नाव को बार-बार सागर पीछे फेंक देता है—वह दो कदम बढ़ती है तो एक कदम पीछे हटती है लेकिन नाविक दृढ़ हैं, बिना रुके वे पतवार चला रहे हैं और ऊँची लहरों से वे भयभीत नहीं हैं। नाव चलती जा रही है—बढ़ती जा रही है। अभी जहाज आँखों से ओझल है, लेकिन आधे घंटे में नाविक को जहाज की बत्तियाँ दिखाई पड़ने लगेंगी और घंटे भर में वे जहाज में

चढ़ने वाली सीढ़ी के पास होगे। जीवन मे भी तो ऐसा ही कुछ होता है...सत्य की खोज मे मनुष्य दो पग बढ़ाता है और एक पीछे रखता है। तकलीफे, गलतियाँ और जिन्दगी की थकान खोजनेवाले को पीछे फेंकती हैं; लेकिन जिज्ञासा और प्यास और दृढ़ता उसे आगे बढ़ाती चली जाती हैं—आगे—और आगे। और कौन जानता है, शायद एक दिन सत्य के पास पहुँच ही जाय—पा भी ले।'

'गुडबाई! बिदा,' सैमाएलैन्को चिल्लाया।

'वे लोग दिखाई तो पड़ नही रहे हैं और न कोई आवाज ही आ रही है,' पादरी ने कहा, 'उनकी यात्रा के लिए समस्त शुभ-कामनाएँ!'

और फिर वर्षा होने लगी।